इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 126

परिवार स्थापन में समाज कार्य

यौन स्वास्थ्य शिक्षा

2

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत् विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 126

परिवार स्थापन में समाज कार्य

खंड

2

यौन स्वास्थ्य शिक्षा

इकाई 1

यौन स्वास्थ्य शिक्षा में मूल संकल्पना

इकाई 2

पुरूष और स्त्री की समझ

इकाई 3

यौन स्वास्थ्य शिक्षाः संकल्पना और उद्देश्य

इकाई 4

यौन स्वास्थ्य शिक्षाः घर, विद्यालय और मीडिया की भूमिका

विशेषज्ञ समिति (मूल)

प्रो. पी.के. गांधी
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.डी. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास (सेवानिृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क, इंदौर

डॉ. रमा वी. बारू
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (मूल)

इकाई लेखक

प्रो. थॉमस कलम, सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज, बंगलौर

डॉ. शुभाकांत महापात्र, एनओएस, नई दिल्ली

विषय संपादक

प्रो. थॉमस कलम,
सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज,
बंगलौर

भाषा सम्पादक

प्रो. कुसुम चोपड़ा,
जे.एन.यू., नई दिल्ली

खण्ड सम्पादक एवं पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
सतत् शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

इकाई लेखक

प्रो. थॉमस कलम, सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज, बंगलौर

डॉ. शुभाकांत महापात्र, एनओएस, नई दिल्ली

विषय संपादक	खंड संपादक	कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम संयोजक	भाषा संपादक (हिंदी)
डॉ. नीता कुमारी अम्बेडकर कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय	डॉ. सायन्तनी गुइन, इग्नू, नई दिल्ली	डॉ. सायन्तनी गुइन, इग्नू, नई दिल्ली	डॉ. नीतू, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली।

मुद्रण निर्माण

अक्टूबर, 2020

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंगः

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 2 का परिचय

'परिवार स्थापन में समाज कार्य' पाठ्यक्रम के दूसरे खंड "यौन स्वास्थ्य शिक्षा'' में आपका स्वागत है। यह एक रोचक खंड है जो जीवन कौशल या यौन स्वास्थ्य शिक्षा के बारे में बुनियादी संकल्पना प्रदान करता है। जीवन कौशल की संकल्पना और परिवार शिक्षा संकल्पना में अंतर है। परिवार शिक्षा की संकल्पना का वर्णन खंड 1 में किया जा चुका है।

खंड 2 में चार इकाइयाँ हैं। **इकाई 1** यौन स्वास्थ्य शिक्षा में मूल संकल्पनाओं से संबंधित है जो यौन सुख एवं यौन क्रिया में पूर्णता, जनन तथा यौन अनुभव के प्रभावी पक्ष, व्यक्ति को पसंद करना, प्रेम करना, प्रेम में पड़ना एवं प्रेम निभाना जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का वर्णन करती है। **इकाई 2** "पुरुष और स्त्री की समझ'' के बारे में है। इस इकाई में पुरुष और स्त्री में भिन्नताएँ बताई गई हैं। इसमें जैविक, सांस्कृतिक एवं रुढ़िवादी भिन्नताओं और दोनों लिंगों की विशिष्टताओं तथा उनकी भिन्नताओं के स्थान पर समानताओं की व्याख्या की गई है। **इकाई 3** यौन स्वास्थ्य शिक्षाः संकल्पना और उद्देश्य का वर्णन करती है जिसमें संकल्पना एवं उद्देश्यों का वर्णन है। यह इकाई यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने तथा यौन स्वास्थ्य शिक्षा का संकल्पनात्मक ढाँचे में संबंधों का वर्णन करती है। **इकाई 4** यौन स्वास्थ्य शिक्षाः घर, विद्यालय तथा मीडिया की भूमिका का वर्णन करती है। इसमें इस शिक्षा के महत्व, स्कूल तथा मीडिया द्वारा जागरूकता प्रदान करने के लिए निभाई जाने वाली भूमिका की भी चर्चा की गई है।

इस खंड की चारों इकाइयाँ यौन स्वास्थ्य शिक्षा की संकल्पना एवं इसके विभिन्न आयामों के बारे में उपयुक्त जानकारी प्रदान करती हैं। यह जीवन कौशल शिक्षा की स्पष्ट व्याख्या करता है जो पारिवारिक जीवन शिक्षा से एकदम भिन्न है।

इकाई 1 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में मूल संकल्पनाएं

*प्रो. थॉमस कलम एवं

डॉ. शुभाकांत महापात्र

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 परिवार के निर्माण में यौन क्रिया की भूमिका

1.3 यौन पूर्ति बनाम यौन सुख

1.4 लैंगिक यौन क्रिया और प्रभावी यौन क्रिया में अंतर

1.5 यौन व्यवहार में शामिल विभिन्न उत्प्रेरक

1.6 आकर्षण और प्रेम में भेद

1.7 प्रेम की भाषा के रूप में लैंगिकता

1.8 सारांश

1.9 शब्दावली

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

---

* प्रो. थॉमस कलम, सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज, बंगलौर एवं डॉ. शुभाकांत महापात्र, एनओएस, नई दिल्ली।

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- यौन सुख और यौन क्रिया में अंतर कर सकेंगे;
- यौन अनुभव के लैंगिक और प्रभावी पक्षों के विभिन्न पहलुओं के बीच भेद कर सकेंगे;
- यौन क्रिया निष्पादन के बुनियादी मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक संरचना को समझ सकेंगे;
- यौन व्यवहार में विभिन्न उत्प्रेरकों, जो यौन क्रिया को बाधित कर सकते हैं को समझ सकेंगे;
- व्यक्ति को पसंद करने और प्रेम करने के बीच बुनियादी अंतर जान सकेंगे; और
- प्रेम करने और प्रेम निभाने के बीच अंतर की व्याख्या कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

यौन क्रिया अथवा लैंगिकता जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। व्यक्ति के शरीर की प्रत्येक कोशिका एवं तन्तु में यौन मौजूद रहता है। व्यक्ति के जीवन के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में यौन व्याप्त होता है। मानव इतिहास का एक दुखद सबक यह है कि लैंगिकता से जहाँ लोगों का जीवन आनंददायी और उल्लसित प्रवृत्ति का होना चाहिए वहाँ बहुधा वह अभिशप्त और दुखदायी बन जाता है। हम प्रायः देखते हैं कि यौन क्रियाओं के अर्थपूर्ण निष्पादन में अक्षम होने के कारण लोगों का जीवन अव्यवस्थित और निरुद्देश्य हो जाता है। उन स्त्री/पुरुष के जीवन में संबंध विकृत और अर्थहीन हो जाते हैं जब वे यौन संबंधों का निर्वाह सच्चाई एवं सार्थकता से करने में समर्थ नहीं होते। परिवार निर्माण में यौन निर्णायक भूमिका अदा करता है। यदि इसे ठीक से समझा न जाए और सही प्रयोग न किया जाए तो परिवार के सदस्यों के बीच सौहार्द्रपूर्ण संबंध नष्ट हो सकते हैं और परिवारों में बिखराव आ सकता है। इस इकाई में हम आपका परिचय यौन निर्वाह के स्वास्थ्य तरीकों की चर्चा से कराएंगे। इस इकाई का

उद्देश्य है कि आप मानव में निहित यौन की प्रकृति को पूरी तरह से समझ जाएँ और हमेशा आप अपने मस्तिष्क में यह ध्यान रखें कि यौन एक प्राकृतिक पुरस्कार है जो पति–पत्नी के संबंधों में प्रगाढ़ता लाता है न कि उनके बीच संबंधों में दरार पैदा करती है।

1.2 परिवार के निर्माण में यौन क्रिया की भूमिका

बच्चे के जन्म के साथ ही परिवार पूर्ण रूप से निर्मित होता है। लघु जीवों जैसे अमीबा में प्रजनन अलैंगिक होता है। दूसरी ओर मानव प्रजनन लैंगिक होता है। परिवार में ही लैंगिकता का समाजीकरण एवं मानवीकरण होता है। जब तक यौनिकता का समाजीकरण और मानवीकरण नहीं होता तब तक सामाजिक जीवन संभव नहीं हो सकता। महान मनोवैज्ञानिक सिग्मंड फ्रायड का कहना है कि जब तक मानव अपने यौन संवेगों पर नियंत्रण नहीं करता तब तक सामाजिक जीवन संभव नहीं होता दूसरे शब्दों में पारिवारिक और सामाजिक जीवन का नितांत अभाव होता है। पशु झुण्डों में विचरण करते हैं। लेकिन मानव पारिवारिक जीवन में दूसरे मानवों के साथ स्वस्थ और महत्त्वपूर्ण संबंध स्थापित करता है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे से विवाह करते हैं। इन संबंधों का सम्मान करने के लिए संपूर्ण समाज को आमंत्रित किया जाता है। किसी भी सभ्यता में विवाह के आयोजन का यही उद्देश्य होता है कि सब लोग इस संबंध के बारे में जान जाएँ और वे इसकी सुरक्षा करें। समाज को कायम रहने के लिए इस समझ का होना अत्यंत आवश्यक है।

आपसी संबंधों के आधार पर समाज के निर्माण में मनुष्यों की सहायता करने के अतिरिक्त यौन संबंध एक दूसरे के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं तथा प्रणय और सदइच्छा के साथ एक दूसरे को स्वीकार करते हैं। अतः यौन संबंध न केवल प्रजनन के लिए हैं बल्कि वे आनंददायक भी हैं, जो मानव को संपूर्णता और आपसी संतुष्टि प्रदान करते हैं।

प्रायः यौन संबंधों की भूमिका की चर्चा नहीं की जाती है जबकि यह विषय मानव जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। विवाहित लोगों तक को भी इस शिक्षा के विषय में कुछ नहीं बताया जाता है। इसे हमेशा ही छिपा कर रखा गया है। अधिकतर समाजों में इस पर चर्चा करना निषिद्ध माना गया है। इसी प्रकार के समाजों में यौन को निकृष्ट विषय माना जाता है विशेषतः उन युवाओं और लोगों द्वारा जो दुरूपयोग करना चाहते हैं जैसा कि भारत के मनीषी लोग कहते हैं कि सच्चाई हमेशा बनी रहेगी। यौन क्रिया का सत्य इस इकाई का विषय हैं।

1.3 यौन पूर्ति बनाम यौन सुख

यौन संबंधों के संबंध में यह गलत धारणा बनी हुई है कि यौन सुख स्वयं ही यौन पूर्णता निष्पादित करता है। "पूर्ति/परिपूर्णता" का अर्थ है उपलब्धि की भावना के साथ कार्य सार्थक एवं उद्देश्य पूर्ण रूप से किया जाए। यदि कोई व्यक्ति यौन–सुख प्राप्त करता है तो सिर्फ इसीलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उसे संतुष्टि का भी अनुभव होता है। जैसा कि साक्ष्यों से ज्ञात है, प्रत्येक व्यक्ति जो यौन क्रियाओं को निष्पादित करता है, आवश्यक नहीं है कि उसे हमेशा यौनिक खुशी का अनुभव होता हो। रोमन दार्शनिकों ने तो यहाँ तक कहा है कि "प्रत्येक पशु मैथुन के पश्चात् दुखी हो जाता है।" ऐसे लोग जो यौन क्रिया के बाद अपने साथी के प्रति घनिष्ठता और प्रेम, कृतज्ञता तथा आदर–भाव का अनुभव करते हैं उन्हें यौन क्रिया से संतुष्ट कहा जा सकता है।

यौन आनंद या लैंगिक खुशी यह शारीरिक उत्तेजना का अनुभव है। यौन क्रिया के जारी रहने पर क्रमिक अवस्थाओं में अनुभव होता है। सबसे पहले उत्तेजना का चरण या स्थिति आरंभ होती है, इसमें हृदय गति तीव्र हो जाती है और रक्त दबाव में वृद्धि होती है। शरीर की सतह पर रक्त आपूर्ति में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप त्वचा ताप में वृद्धि, रक्त प्रवाह में तेज़ी तथा शरीर के विशिष्ट अंगों में तनाव होने लगता है और वे फूलने लगते हैं (इसे पुरुष के लिंग और स्त्री के स्तनों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है), सांस की गति तीव्र हो जाती है जननांगों में तरल

पदार्थ का स्राव होने लगता है, यौनि फैलने लगती है तथा सामान्यतया माँसपेशियों में तनाव पैदा हो जाता है। तनाव के ये अंततः चरम मनोवैज्ञानिक स्तर तक बढ़ते हैं, जिसे पठारी चरण कहा जाता है और जो थोड़े समय के लिए उभरते हैं। यदि उत्तेजना लगातार बनी रहती है तो प्रायः कामोन्माद बना रहता है। चरम सुख अकस्मात तीव्र यौन सुख की भावना है। इसमें नाड़ी की गति एवं रक्त चाप अनियमित रूप से अधिक हो जाता है तथा योनि की माँसपेशियों में संकुचन होने से पुरुष का वीर्य स्खलित होता है। इस समय न चाहते हुए भी विशेष प्रकार की आवाजें पैदा हो सकती हैं। चरम सुख की अवस्था केवल कुछ क्षणों तक रहती हैं; (जो प्रायः दस सैकंड से अधिक नहीं होती) उसके बाद धीरे–धीरे वे वापस अपनी पूर्व शारीरिक स्थिति में आ जाते हैं। मध्य चरण तक स्त्री–पुरुष अपनी प्रतिक्रिया क्रम की समान स्थिति में होते हैं परन्तु पुरुष उद्दीपन कायम रहने के बावजूद सामान्य स्थिति में आ जाते हैं, जबकि महिलाओं को इससे अतिरिक्त चरम सुख प्राप्त हो सकता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पुरुष संभोग के पश्चात् कुछ अवधि तक लैंगिक रूप से उद्दीपन का प्रत्युत्तर नहीं दे सकता और उसमें उत्तेजना नहीं आती लेकिन स्त्री तुरंत ही फिर से यौन क्रिया के लिए तैयार हो जाती है। स्त्री को पुरुष की तरह 'आराम अवधि' की आवश्यकता नहीं होती।

दूसरी तरफ, यौन संतुष्टि का संबंध यौन क्रिया के बाद होने वाली खुशी एवं संतुष्टि से है। जो लोग स्वभाविक रूप से यौन संपूर्णता का अनुभव करते हैं वे अपने साथी के प्रति कृतज्ञ रहते हैं तथा उनकी घनिष्ठता प्रेम में यौन अभिव्यक्ति के द्वारा और अधिक मजबूत होती है। इस प्रकार यौनिक जीवन हमेशा ही आनंददायक होता है चाहे वह हमेशा सर्जनात्मक भले ही न हो। यह एक दूसरे के प्रति प्रतिबद्ध दो प्रेमीजनों के व्यक्तित्व का विकास करने में सहायता करता है।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि एक दंपत्ति को यौन संतुष्टि के लिए क्या आवश्यक है? हम पहले ही बता चुके हैं कि केवल प्रजनन (शारीरिक) संबंध ही इसे परिपूर्ण करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

1.4 लैंगिक यौन क्रिया और प्रभावी यौन क्रिया में अंतर

सिगमंड फ्रायड ने मानव यौन क्रिया के अनुभव को मूल रूप से दो आयामों में विभक्त किया था: लैंगिक आयाम और प्रभावकारी आयाम।

लैंगिक आयाम

यौन अनुभव के लैंगिक आयाम का अर्थ है शारीरिक परिवर्तन और विकास जिसे व्यक्ति यौन संबंधों के दौरान अनुभव करता है जैसे कि दूसरे व्यक्ति के प्रति तीव्र आकर्षण, इस चरम आकर्षण का यौनिक संभोग में परिणित, जिससे चरम सुख की प्राप्ति होती है। इसके परिणामस्वरूप शारीरिक तंदरुस्ती तथा तनाव से मुक्ति का अनुभव होता है। मनोविश्लेषकों द्वारा जिसे "लैंगिक यौन" कहा जाता है, वह इन्हीं अनुभवों का कुल जोड़ है। यह आयाम पशुओं और मानव दोनों के संबंध में समान रूप से लागू होता है। यौन अनुभव के इस आयाम का प्रमाण चिह्न यह है कि यह अल्प कालिक और कभी–कभी होता है, यह शाश्वत नहीं होता।

प्रभावी आयाम

यदि हम पुरुष या स्त्री के वैध यौन अनुभवों का विश्लेषण करें, तो हम दूसरे आयाम को अलग कर उसकी पहचान भी कर सकते हैं जिसे मनोविश्लेषक 'प्रभावी आयाम' के रूप में चिन्हित करते हैं। मनोवैज्ञानिक और प्रभावी परिवर्तन तथा विकास अनेक प्रकार के हैं जो यौन अनुभव के घनिष्ठ हिस्से होते हैं जैसे कि प्रणय की भावना और संवेग, घनिष्ठता, एकीकरण, कृतज्ञता, आदर आदि। अतः इन सभी मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों एवं विकास को प्रभावी यौन क्रिया के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। यौन अनुभव का यह आयाम मानवता के लिए अनूठा

है। पशुओं को इस प्रकार का यौन अनुभव नहीं होता उनमें सहज शारीरिक आकर्षण होता है जो लैंगिक यौन का एक हिस्सा है। मानव में पारिवारिक जीवन की संभावना के लिए इस यौनिक आयाम को प्रजनन के रूप में माना जाता है। पशुओं की प्रजनन अवस्था में आम रूप से दीर्घकालिक दोस्ती शामिल नहीं होती है। जब उनकी शारीरिक आवश्यकता पूरी हो जाती है तो अमूमन वे अलग–अलग हो जाते हैं। .

लैंगिक यौन क्रिया और प्रभावी यौन क्रिया के बीच मूल अंतर के प्रकाश में जानने के बाद मनुष्य की यौन–संतुष्टि की मूल संरचना को समझने का प्रयास किया जा सकता है। कोई भी लैंगिक अनुभव (लैंगिकता का दैहिक अनुभव) जो प्रभावी यौन संदर्भ से भिन्न है वह विरक्ति पैदा कर सकता है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यदि एक पुरुष और स्त्री का आपस में थोड़ा भी प्रेम नहीं है और वे दोनों यौन संबंध स्थापित करना चाहते हैं तो ऐसी स्थिति में वे कभी भी यौनिक संतुष्टि प्राप्त नहीं कर सकते हैं बल्कि उनमें अरुचि पैदा हो जाएगी। यहाँ पर अरुचि का अर्थ घृणा नहीं हैं। इसका अर्थ आकर्षण की कमी माना जाता है। इसलिए रोम के दार्शनिकों का यह कथन था कि "प्रत्येक पशु यौन क्रिया के बाद अप्रसन्न होता है।" यौनिक क्रिया या मैथुन दो शरीरों में घनिष्ठ यौन आकर्षण का चरम बिन्दु होता है। आकर्षण के यौन चरमानुभति में परिवर्तित होने के पहले अरुचि आरंभ हो जाती है। वैसे भी यौन क्रिया के तुरंत बाद शरीर में अलग होना चाहता है। यह स्थिति पशुओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यौन क्रिया करने से पहले उनमें एक प्रकार का उत्साह होता है परन्तु मैथुन सम्पन्न होने के बाद अरुचि हो जाती है। इस तथ्य को सभी जानते हैं और पूरी दुनिया में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। केवल एक ही ऐसा 'पशु' है जो इस अरुचि पर विजय प्राप्त करता है और लगातार अपने यौन साथी के साथ प्रणय जारी रखता है। वह है मानव। यह भी कहा जा सकता है कि सभी मानव इस तरह का व्यवहार नहीं करते बल्कि वे ही लोग करते हैं जिनके अंदर मूल

प्रभावी आयाम मौजूद होते हैं। जब शरीर एक दूसरे को आकर्षित नहीं करते हैं फिर भी वे लगातार मजबूत आधार पर एक दूसरे के साथ रहते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि इनमें एक दूसरे के प्रति अपने दिलों में प्रणय या प्रेम बना रहता है। यदि यह प्रणय न हो तो ऐसी स्थिति में प्रत्येक यौन क्रिया अपने यौन साथी के प्रति अरुचि पैदा करती है।

इस पाठ का सबक स्पष्ट हैः यह है प्रेम और केवल प्रेम है जो मानव जाति के लिए यौन क्रिया को संपूर्ण एवं सार्थक बनाता है।

दूसरी ओर जब दोनों साथियों में 'प्रेम' विद्यमान होता है तब यौन क्रिया प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती हैं। और बदले में दंपत्ति के बीच अधिक प्रणय और घनिष्ठता बढ़ती है। अतः प्रेम ही वह उत्प्रेरक है जो यौन जीवन को मानव के लिए अर्थपूर्ण बनाती है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) आप मानव यौन अनुभव के लैंगिक आयाम से क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

....

2) आप यौन अनुभवों के प्रभावी आयाम से क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

1.5 यौन व्यवहार में शामिल विभिन्न उत्प्रेरक

एक स्त्री और पुरुष अथवा एक लड़का और एक लड़की के बीच यौन संबंध को बढ़ावा देने वाले अन्य उत्प्रेरक भी हैं। इसमें एक उदाहरण 'घृणा' का दिया जा सकता है। यौन क्रिया दूसरे व्यक्ति के प्रति घृणा' की अभिव्यक्ति का एक मजबूत हथियार हो सकता है। इसका शास्त्रीय उदाहरण है बलात्कार। बलात्कार प्रेम का नहीं बल्कि घृणा की अभिव्यक्ति है। कोई लड़का किसी लड़की के साथ बलात्कार करने के बाद उसके साथ घनिष्ठता नहीं रखता। प्रायः बलात्कारी द्वारा बलात्कार की शिकार लड़की की हत्या कर दी जाती है। प्रायः युद्धों के दौरान पुरुषों का वध होता है और महिलाओं के साथ बलात्कार किया जाता है। दुनिया की अनेक भाषाओं में बुरे शब्द दूसरे व्यक्ति के प्रति घृणा और क्रोध प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। वह प्रायः यौन अंगों से संबंधित होते हैं। यह एक अन्य

प्रमाण है कि बिना प्रेम के यौन क्रिया विनाश और क्रोध का एक शस्त्र बन जाती है।

यौन व्यवहार में एक अन्य प्रकार की प्रेरणा भी निहित है। यह है हीन भावना' जब किसी लड़के में अपने पुरुषत्व के प्रति हीन भावना पैदा हो जाती है तो वह कहीं भी अपना पुरुषत्व सिद्ध करने का प्रयास कर सकता है। हो सकता है कि वह किसी लड़की से यौन संबंध स्थापित कर ले। वह ऐसा प्रेम संबंध के लिए नहीं अपितु अपना पुरुषत्व सिद्ध करने के लिए करता है। इसी प्रकार से कोई लड़की जो अपने नारीत्व और सुन्दरता को लेकर सशंकित है, भी ऐसा प्रयास कर सकती है। स्वच्छंद संभोग भी इसकी एक अभिव्यक्ति हो सकती है।

सच यह है कि अन्य उत्प्रेरक कभी भी दो साथियों को यौन–संतुष्टि प्रदान नहीं कर सकते। वे तो वैवाहिक और पारिवारिक जीवन को नष्ट करने के स्रोत हैं।

1.6 आकर्षण और प्रेम में भेद

हम यह देख चुके हैं कि प्रेम या प्रभावकारिता ही एक वैध प्रेरणा है जो मानव की यौनिक क्रिया को सार्थक और संतुष्टि प्रदान करने वाली बना सकती है। ऐसा लगता है कि जिस रूप में हम प्रेम शब्द का प्रयोग करते हैं उसके वास्तविक अर्थ को लेकर अनेक भ्रांतियाँ हैं। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि प्रणय एक सहज संवेग है जो अपनी इच्छा से पैदा होता है और अपनी इच्छा से ही नष्ट हो जाता है तथा इस पर मानव का किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं होता। कुछ लोगों का मानना है कि यह सिर्फ वैवाहिक जीवन के आरंभ में पति–पत्नी के बीच होता है। वास्तव में इस प्रकार के सभी लोग प्रेम की वास्तविकता के बारे में भ्रमित हैं। वे दो वास्तविकताओं के मध्य भ्रमित दिखते हैं जो एक जैसी लगती हैं किन्तु समान नहीं होती है। ये दो वास्तविकताएँ पसंद करना और प्रेम है।

किसी व्यक्ति को पसंद करने का अर्थ है उस व्यक्ति के प्रति आकर्षित होना, उसके साथ सहज होना तथा उसके साथ तनाव रहित महसूस करना। जब आप

किसी व्यक्ति को पसंद करते हैं तो इसका अर्थ है कि आप उस व्यक्ति के प्रति आकर्षित हैं। यह एक सहज प्रतिक्रिया है।

अपने स्नायु तंत्र में हम एक तंत्र की पहचान कर सकते हैं जिसे स्वचालित स्नायु तंत्र कहते हैं। हमारे शरीर में स्वचालित स्नायु तंत्र/स्वचलित क्रियाओं, जैसे दिल की धड़कन, अंतःस्रावी तंत्र और स्वतः क्रियाएँ आदि। इन सब क्रियाओं पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता है। यह सब स्वचालित स्नायु तंत्र के नियंत्रण में होता है। 'पसंद भी इसी स्नायु तंत्र के नियंत्रण में आती है। इसलिए निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि यह हमारे नियंत्रण में नहीं है कि किसी व्यक्ति को हम कितना पसंद करें, कब तक उसे पसंद करें, कितने आवेग से हम उस स्त्री/पुरुष को चाहते हैं आदि। यह हमारे दिल की धड़कन अथवा अमाशयिक स्राव की तरह ही है।

दूसरी तरफ 'प्रेम करना' अन्य स्नायु तंत्र के नियंत्रण में होता है। इसे हम केन्द्रीय स्नायु तंत्र (सी एन एस) कहते हैं। केन्द्रीय स्नायु तंत्र हमारे जीवन में स्वैच्छिक गतिविधियों को नियंत्रित करने की क्षमता देता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जब हम किसी व्यक्ति से प्रेम करते हैं तो हम अपने स्नायु तंत्र के माध्यम से उसे प्रेम करते हैं। हम प्रेम अपने शरीर और आत्मा से करते हैं। परन्तु यह क्रिया जिसका हम 'प्रेम' के रूप में वर्णन करते हैं, केन्द्रीय स्नायु तंत्र की सहायता से लिए गए निर्णय का परिणाम है।

मनोवैज्ञानिक हैरी स्टैक सुलीवेन ने प्रेम का बहुत ही व्यावहारिक वर्णन किया है। उसके अनुसार जब किसी दूसरे व्यक्ति की प्रसन्नता, कल्याण और सुरक्षा हमारे लिए अपनी प्रसन्नता, कल्याण और सुरक्षा के समान महत्त्वपूर्ण हो जाती है, हम उससे प्रेम करने लगते हैं फिर चाहे हम उसे पसंद करते हों अथवा नहीं।

पसंद को प्रायः बोलचाल की भाषा में 'प्रेम' ही कहा जाता है। यह तकनीकी रूप से ठीक नहीं है। पसंद हमेशा ही परिस्थितियों पर निर्भर करती है। मैं किसी

व्यक्ति को पसंद करता/करती हूँ क्योंकि मैंने उसमें कुछ खूबियाँ देखी हैं। पसंद को आप 'सशर्त प्रेम' कह सकते हैं। फिर भी सशर्त प्रेम हमेशा ही शर्तों से प्रतिबंधित रहता है। जब स्थितियाँ बदल जाएँगी तो प्रेम भी बिला जाएगा।

प्रेम के संबंध में दृढ़ता से कह सकते हैं कि इसमें कोई भी शर्त नहीं होती। इसमें व्यक्ति प्रमुख होता है। इसे शर्त रहित माना जा सकता है। वास्तविक प्रेम में दूसरे व्यक्ति के कल्याण, प्रसन्नता आदि की पूर्ण भावना निहित होती है।

पसंद के उच्चतम स्तर को प्रेम में पड़ना कहा जाता है। प्रेम के उच्चतम स्तर को 'प्रेम में जीना कहते हैं।' प्रेम करने के लिए हमें परिश्रम नहीं करना पड़ता। यह अपने आप हो जाता है। यह केन्द्रीय स्नायु तंत्र का कार्य है। परन्तु प्रेम में बने रहने के लिए वास्तव में जीवन भर कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

परिवार का आधार प्रेम में पड़ना नहीं होता है। प्रेम होना परिवार उत्पत्ति का आरंभ हो सकता है। प्रेम में बने रहना परिवार की बुनियाद है। इस लिए प्रायः विवाह में लड़का–लड़की (स्त्री–पुरुष) एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं तथापि सत्य यह है कि प्रेम स्थायी या दीर्घकाल तक पारिवारिक जीवन का आधार नहीं है। यह प्रकट होता है और समाप्त होता रहता है। एक साथ रहने का स्थाई आधार प्रेम होना चाहिए जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की प्रसन्नता, सुरक्षा तथा कल्याण को अपनी प्रसन्नता, सुरक्षा आदि से अधिक महत्त्वपूर्ण माने।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) यौन व्यवहार में अनेक प्रेरणाओं पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

1.7 प्रेम की भाषा के रूप में लैंगिकता

विवाह–सम्बन्ध कार्य और चिन्ता, सुख और दुख, रूग्णावस्था और स्वास्थ्य के जीवन से बनता है। इसमें युवावस्था और प्रौढ़ावस्था, छोटी तथा बड़ी समस्याएं सुलझाना और आन्तरिक और बाह्य दुःखों/कठिनाइयों का सामना करना शामिल हैं। इन सबके बीच यदि दोनों में प्रेम का बंधन मजबूत है, वे एक सुखी जीवन बिता सकते हैं। यौन के रूप में प्रेम एकमात्र भाव है जिसे केवल अपने जीवन साथी से बाँटा जा सकता है। यह विवाह का एक महत्वपूर्ण अंग है। विवाह में यौन को गहन स्तर पर संवाद की आवश्यकता होती है। यह दोनों में एक बहुत निकटतम और भावात्मक बंधन है जो आगे चलकर युगल में परस्पर विश्वास को सशक्त करता है।

मानव अनुभवों से हमें सीख मिलती है कि प्रेम के बिना लैंगिक जीवन मानव जीवन में केवल अरुचि ही पैदा नहीं करता है बल्कि विनाश का कारण भी बनता है। प्रेम रहित यौन–क्रिया प्रेमी–युगल को और नजदीक लाने की बजाय उनमें विलगाव पैदा करता है। वैवाहिक जीवन केवल एक दूसरे की यौन आवश्यकताओं की संतुष्टि प्रदान करने की प्रक्रिया में महत्त्वहीन हो जाता है। अंतर्वैयक्तिक संबंधों

के अनेक पहलुओं, जो स्वस्थ परिवार के निर्माण के लिए जरूरी हैं इस प्रक्रिया में उन्हें भुला दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप 'प्रेम घृणा–संबंधों का वातावरण निर्मित हो सकता है। अपने साथी को क्या दिया जा सकता है, के बदले मानसिकता बन गई है कि दूसरे से अधिकतम प्राप्त किया जाए। सच यह है कि वह व्यक्ति जो अधिक हड़पना चाहता है, कम प्राप्त करता है और जो व्यक्ति अधिक से अधिक देता है, वह अधिक से अधिक प्राप्त करता है।

लैंगिकता के प्रति दो गलत मनोवृत्तियाँ

क) **पुरुषत्व लैंगिकताः** काम–भावना नर और मादा दोनों में होती है। स्त्री और पुरुष दोनों को ही अपने यौन सुख प्राप्त करने का अधिकार है। परन्तु आमतौर पर यौन जीवन का सुख प्राप्त करना केवल पुरुष का ही विशेष अधिकार बन गया है। स्त्री को केवल पुरुष की संतुष्टि का साधन मान लिया गया है। उस समय एक नारी की स्थिति क्या होती है जब पुरुष तो स्वयं अपनी यौन संतुष्टि कर लेता है किन्तु स्त्री की संतुष्टि या उसकी यौनिक क्रियाओं की माँग को अनदेखा कर दिया जाता है। विवाह का अर्थ मान लिया जाता है कि पुरुष को अपनी पत्नी का प्रयोग, दुरुपयोग, कुप्रयोग करने का लाइसेंस प्राप्त हो गया है। पुरुष और स्त्री के बीच यौनिक संबंधों के लिए अंग्रेजी भाषा में इंटरकोर्स शब्द का प्रयोग किया गया है। संभोग में स्त्री और पुरुष भिन्न लेकिन पूरक व समान भूमिका निभाते हैं। यदि हम अंग्रेजी भाषा में चार अक्षरीय शब्द का विश्लेषण करें जो यौनिक संभोग के लिए प्रयुक्त किया जाता है, वे सभी शब्द पुरुषत्व को प्रकट करते हैं जिसका निहितार्थ यह है कि केवल पुरुष ही स्त्री के साथ यौनिक क्रिया करता है। अधिकांश समाजों में ऐसा ही समझा जाता है। जब तक पुरुष यह नहीं समझ लेता और जान लेता कि औरतों को भी यौन क्रिया का अधिकार और विशेषाधिकार है तब तक वैवाहिक जीवन में समन्वय संभव नहीं हो सकता है।

ख) **लैंगिकता का व्यावसायीकरणः** यौन व्यक्ति की प्रमुख पहचान से जुड़ा होता है। यौन का अपने आपमें कोई अस्तित्व नहीं है। मानव ही यौन क्रिया रूपों में मौजूद है। कई बार यौन को एक वस्तु समझा जाता है। इसे व्यक्ति की प्रमुख पहचान स्वीकार करने के स्थान पर एक वस्तु का रूप देकर इसे कोई पदार्थ बना दिया जाता है। यौन के लिए 'यह' सर्वनाम प्रयोग किया जाता हैः "आप यह चाहते हैं?", "क्या आपने इसे प्राप्त किया?" इत्यादि। यौन को एक वस्तु मानने से ही यह समझा जाता है कि इसे आसानी से खरीदा जा सकता है, उधार लिया जा सकता है और बेचा जा सकता है और इसकी अदला—बदली की जा सकती है आदि। मानव एक व्यक्ति के रूप में अनूठा और अद्वितीय है। यौन का वस्तुकरण करने से मानव जीवन में बहुत—सी त्रासदियाँ पैदा हो जाती हैं। इस संबंध में सबसे अच्छा दृष्टिकोण यह है कि यौन को लड़का या लड़की की व्यैक्तिक पहचान का अभिन्न अंग समझा जाए।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) यौन क्रिया के मर्दानगीकरण से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

1.8 सारांश

इस इकाई में हमने पारिवारिक जीवन के संदर्भ में यौन तथा प्रेम की अवधारणा का विश्लेषण किया है। चर्चा की प्रक्रिया में हमारा ध्यान परिवार निर्माण में यौन की भूमिका पर प्रमख रूप से केन्द्रित रहा है। हमने देखा है कि मानव जीवन में यौन भावना का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रमुख है फिर भी इस पर प्रायः चर्चा नहीं की जाती है। हमने यौन क्रियाओं की संपूर्णता बनाम यौन सुख की अवधारणा पर भी विशेष चर्चा की है। इसके साथ ही इस इकाई में एक अन्य महत्त्वपूर्ण विषय की भी समीक्षा की गई है। यह है लैंगिक यौन क्रिया और प्रभावी यौन क्रिया के बीच का अंतर। हमने यौन व्यवहार में अनेक प्रेरणाओं का अवलोकन भी किया है जिसमें घृणा और हीन भावना की प्रवृत्ति भी शामिल है। हमारी चर्चा का महत्त्वपूर्ण विषय, आकर्षण और प्रेम के बीच के अंतर की संकल्पना का विश्लेषण रहा है। अंत में हमने यौन को प्रेम की भाषा के रूप में तथा इसकी दो गलत प्रवृत्तियों अर्थात् यौन क पुरुषत्व और व्यावसायीकरण पर विशेष ज़ोर दिया है।

1.9 शब्दावली

लुक–छिप कर : गुप्त रखना अथवा छिपा कर रखना। (प्रच्छन्न रखना)

प्रभावी आयाम : सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्तन और विकास जैसे कि प्रेम का अनुभव और भावना, घनिष्ठता, एकीकरण या एकात्मकता, कृतज्ञता और आदर इत्यादि के कुल जोड़ को प्रभावी आयाम कहा जाता है।

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर्चर, जे. एंड लॉयड, बी., (1982)ः सेक्स एंड जेंडर, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज।

गिलीगन, सी.ः इन ए डिफ्रेंट वॉइस, हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज, मैसाचुसेट्स, 1982।

कोलबर्ग, एल.,(1966)ः 'ए कोग्निटिव डेवलेपमेंटल एनालसिस ऑफ चिल्डन'स सेक्स रोलः कंस्पेट्स एंड एटीच्यूड" इन ई ई मेकोबी (संस्करण) द डेवलपमेंट ऑफ सेक्स डिसिज, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, स्टेनफोर्ड।

मैकोबी, ई. ई. एंड जेकलिन, सी एन., (1975)ः साइक्लोजी ऑफ सेक्स डिफ्रेसिज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।

निकोल्सन, जे. (1984)ः मैन एंड वोमैन, हाऊ डिफ्रेंट आर दे, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।

सैनफोर्ड, जे., (1980)ः ए इंविजबल पार्टनर्स, बैटर यूओरसेल्फ बुक्स, पौलिस्ट प्रेस, माहवा, न्यू जर्सी।

टैवरिस, सी. एंड ओफिर, सी., (1977)ः द लोंगस्ट वार, हरकोर्ट ब्रास जेवनोवचि, न्यूयार्क।

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) **लैंगिक आयामः** यौन अनुभव का लैंगिक आयाम का अर्थ है शारीरिक परिवर्तन और विकास जिसे व्यक्ति यौनिक संबंधों से अनुभव करता है जैसे कि दूसरे व्यक्ति के प्रति तीव्र आकर्षणय इस चरम आकर्षण का यौन में

विकास, तथा यौन चरमोत्मर्ष की परिणति, यौनिक संभोग एवं चरम सुख और इसके परिणामस्वरूप शारीरिक तंदुरूस्ती तथा तनाव मुक्त अनुभव करना। मनोविश्लेषक इन्हीं यौन अनुभवों के कुल जोड़ को लैंगिक यौन की संज्ञा देते हैं। यह आयाम पशुओं और मानव दोनों के संबंध में समान रूप से लागू होता है। यौन अनुभव के इस आयाम का प्रमाण चिह्न यह है कि यह अल्पकालिक और कभी–कभी होता है।

2) **प्रभावी आयामः** यदि हम पुरुष या स्त्री के मान्य यौन अनुभव का विश्लेषण करें, तो हम दूसरे आयाम को अलग कर उसकी पहचान भी कर सकते हैं जिसे मनोविश्लेषक 'प्रभावी आयाम' के रूप में पहचान करते हैं। मनोवैज्ञानिक और प्रभावी परिवर्तन तथा विकास अनेक प्रकार के हैं जो सभी यौन अनुभव के घनिष्ठ हिस्से होते हैं। जैसे कि प्रणय की भावना और संवेग, घनिष्ठता, एकीकरण, कृतज्ञता, आदर आदि! अतः इन सभी मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों एवं विकासों को प्रभावी यौन क्रिया के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। मानवों में यौन अनुभव का यह आयाम अनूठा है। पशुओं को इस प्रकार का यौन अनुभव नहीं होता उसमें सहज शारीरिक आकर्षण होता है जो लैंगिक यौन का एक हिस्सा है। मानव में पारिवारिक जीवन की संभावना के लिए इस यौनिक आयाम को प्रजनन के रूप में माना जाता है। पशुओं की प्रजनन अवस्था को लम्बे समय तक का साथ नहीं माना जाता। जब उनकी शारीरिक आवश्यकता पूरी हो जाती है वे अलग–अलग हो जाते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) अनेक ऐसी प्रेरणाएँ हैं जो स्त्री और पुरुष अथवा एक लड़का और एक लड़की के बीच यौन संबंध स्थापित करती हैं। इसमें एक उदाहरण 'घृणा' का दिया जा सकता है। यौन एक शक्तिशाली शस्त्र है जो दूसरे व्यक्ति के

प्रति घृणा' का प्रदर्शन करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इसका प्राचीन उदाहरण है बलात्कार। बलात्कार प्रेम का नहीं बल्कि घृणा की अभिव्यक्ति है। कोई लड़का किसी लड़की के साथ बलात्कार करने के बाद उसके साथ घनिष्ठता नहीं रखता। प्रायः बलात्कारी द्वारा बलात्कार की शिकार लड़की की हत्या कर दी जाती है। प्रायः युद्धों के दौरान पुरुषों का वध होता है और महिलाओं के साथ बलात्कार किया जाता है। दुनिया की अनेक भाषाओं में बुरा शब्द या चार अक्षरों वाला शब्द दूसरे व्यक्ति के प्रति घृणा और क्रोध प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। वह प्रायः यौन से संबंधित होता है। यह एक अन्य प्रमाण है कि बिना प्रेम के यौन क्रिया विनाश और क्रोध का एक शस्त्र बन जाती है।

यौन व्यवहार में एक अन्य प्रकार की प्रेरणा भी निहित है। यह है 'हीन भावना'। जब किसी लड़के में अपने पुरुषत्व के प्रति भ्रम होता है तो वह कहीं भी अपना पुरुषत्व सिद्ध करने का प्रयास कर सकता है। हो सकता है कि वह किसी लड़की से यौन संबंध स्थापित कर ले। ऐसा वह प्रणय और संबंध के लिए नहीं अपित अपना पुरुषत्व सिद्ध करने के लिए करता है। इसी प्रकार से कोई लड़की भी ऐसा ही सोच सकती है कि उसमें नारीत्व नहीं है। उसमें कोई आकर्षण नहीं है। लड़की भी अपनी इस हीन भावना के कारण नारीत्व सिद्ध करने के लिए कहीं भी ऐसा प्रयास कर सकती है। हो सकता है कि स्वच्छंद संभोग भी इसकी एक अभिव्यक्ति हो।

बोध प्रश्न 3

1) पुरुषत्व लैंगिकताः यौन भावना नर और मादा दोनों में होता है। स्त्री और पुरुष दोनों को ही अपने यौन जीवन का आनन्द प्राप्त करने का अधिकार है। परन्तु आमतौर पर यौन जीवन का सुख प्राप्त करना केवल पुरुष का ही विशेष अधिकार बन गया है। स्त्री को केवल पुरुष की संतुष्टि का

साधन मान लिया गया है। उस समय क्या स्थिति होगी जब पुरुष तो स्वयं अपनी यौनिक संतुष्टि कर लेता है किन्तु स्त्री की संतुष्टि या उसकी यौनिक क्रियाओं की माँग को अनदेखा कर दिया जाता है। विवाह का अर्थ मान लिया जाता है कि पुरुष को अपनी पत्नी का प्रयोग, दुरुपयोग, कुप्रयोग करने का लाइसेंस प्राप्त हो गया है। पुरुष और स्त्री के बीच यौनिक संबंधों के लिए अंग्रेजी भाषा में इंटरकोर्स शब्द का प्रयोग किया गया है। संभोग में स्त्री और पुरुष भिन्न लेकिन पूरक व समान भूमिका निभाते हैं। यदि हम किसी भी भाषा में चार अक्षरीय शब्द का विश्लेषण करें जो यौनिक संभोग के लिए प्रयुक्त किया जाता है, वे सभी शब्द पुरुषत्व को प्रकट करते हैं। अधिकांश समाजों में ऐसा ही प्रचलन है। जब तक पुरुष यह नहीं समझ लेता और जान लेता कि यौन क्रिया का उतना ही अधिकार और विशेषाधिकार प्राप्त है जितना उन्हें प्राप्त है तब तक वैवाहिक जीवन की सद्भावना का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 पुरुष और स्त्री की समझ

*प्रो. थॉमस कलम एवं
डॉ. शुभाकांत महापात्र

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 पुरुष और स्त्री बनाम पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग

2.3 शारीरिक भिन्नताएँ

2.4 भावनात्मक भिन्नताएँ

2.5 बौद्धिक भिन्नताएँ

2.6 आक्रामकता और हिंसा

2.7 कार्य एवं लिंग भेद

2.8 काम वृत्ति में भिन्नताएँ

2.9 पुरुष, स्त्री और परिवार

2.10 सारांश

2.11 शब्दावली

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

---

* प्रो. थॉमस कलम, सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज, बंगलौर एवं डॉ. शुभाकांत महापात्र, एनओएस, नई दिल्ली।

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

किसी परिवार की मूलभूत इकाई पुरुष और स्त्री से बनती है। यद्यपि ये एक ही जाति के सदस्य हैं फिर भी स्पष्ट रूप से एक दूसरे से भिन्न हैं। इन अंतरों को गलत ढंग से समझा जाता है और एक लिंग द्वारा दूसरे पर आधिपत्य जमाने के लिए दुरूपयोग किया गया है। इससे पुरुष और स्त्रियों की वास्तविक कार्यक्षमताओं को समझने में बाधा आती है। इससे प्रायः विवाह में पुरुष और स्त्री के बीच प्रसन्न सहचारिता में अड़चन आती है।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- पुरुष और स्त्रियों में अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे;
- पुरुष और स्त्रियों के बीच जैविक तथा रुढ़िगत सांस्कृतिक अंतरों में विभेद करने में सक्षम होंगे;
- भारतीय समाज के संदर्भ में पुरुष और स्त्रियों के बीच रुढ़िगत सांस्कृतिक अंतरों की पहचान कर सकेंगे;
- दोनों लिंगों में अंतर और विशिष्टताओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- पुरुष और स्त्रियों के बीच में भिन्नताओं के बावजूद समानताओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- पुरुष और स्त्रियों के प्रति भिन्नताओं अथवा रुढ़ियों के आधार पर भेदभाव करने से बच सकेंगे;
- दूसरे लिंग के लोगों को समझदारी और सम्मान के साथ उत्तर देने में आप सक्षम हो सकेंगे; और
- ऐसे पारिवारिक जीवन की योजना बनाने में सक्षम होंगे जिसमें पुरुषों और स्त्रियों की शक्तियाँ रुढ़ियों के कारण बाधित न हों।

2.1 प्रस्तावना

पुरुष और स्त्रियाँ दोनों ही होमोसेपियंस प्रजाति के हैं। ये दोनों एक समान मानव हैं। परन्तु दोनों में अनेक भिन्नताएँ हैं। इनमें से कुछ भिन्नताएँ वास्तविक हैं जो पुरुषों और स्त्रियों के जैविक प्रकृति पर आधारित हैं। पुरुषों और स्त्रियों में सोचने, अनुभव करने और काम करने के ढंगों में भिन्नता को पूरी तरह सामान्य प्रमाणित करने के लिए इन बुनियादी जैविक भिन्नताओं को आधार माना गया है। इन्हें सांस्कृतिक रुढ़ियाँ कहा जाता है। इन बुनियादी जैविक भिन्नताओं को पुरुषों और स्त्रियों द्वारा सोचने, अनुभव करने और क्रिया करने के तरीकों के अनुसार सामान्य रूप से अंतरों को प्रकट करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

यद्यपि एक समय में लिंग भेद शब्द का प्रयोग भिन्नताओं को जैविक और सांस्कृतिक रुढ़ियों के लिए सामूहिक रूप से किया जाता था परन्तु आजकल यौन भेद शब्द को जैविक भिन्नताओं के लिए तथा लैंगिक भेद शब्द को सामाजिक भिन्नताओं को बताने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

पुरुषों और स्त्रियों की जैविक या मनोवैज्ञानिक संरचनाओं की रुढिबद्ध धारणाएँ निराधार भी हो सकती हैं। फिर भी देखा गया है कि इन रुढ़ियों को स्त्रियों के विरुद्ध भेदभाव करने का प्रायः आधार बनाया जाता है। इन्हें व्यक्ति के स्वाभाविक अधिकार प्रदान करने से वंचित करने में भी प्रयोग किया जाता है। विशेषतः हमारे भारतीय समाज में स्त्रियों को लिंग के आधार पर सामाजिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में अन्यायपूर्ण तरीके से निष्कासित किया गया है। इसी प्रकार पुरुषों को अनेक उपर्युक्त भावनाओं को अपनाने और गुणों के विकास के अधिकार से मना किया गया है जिनके द्वारा इन्हीं रुढ़ियों के आधार पर वे अपने जीवन स्तर को सुधार सकते हैं। पुरुषों और स्त्रियों के बीच अच्छी समझदारी से उनके सामाजिक और पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता में निश्चित रूप से सुधार होगा।

2.2 पुरुष और स्त्री बनाम पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग

यौन भिन्नता जैविक प्रक्रिया है। यह मानव प्रजनन को आधार प्रदान करती है। जननांग (यौन अंग) शल्य चिकित्सा से बदले जा सकते हैं, यद्यपि जननेन्द्रिय जीन लिंग (सेक्स क्रोमोसोम) अपरिवर्तित रहते हैं। उदाहरणार्थ, शल्य चिकित्सा एवं हारमोन चिकित्सा से पुरुष को स्त्री की तरह दिखने वाला बनाया जा सकता है लेकिन उसके क्रोमोसोम xy ही रहेंगे। जीन की प्रकृति को नहीं बदला जा सकता। उसके शरीर की प्रत्येक कोशिका xy चिह्न ही रहेगी।

पुरुषों और स्त्रियों में कुछ सार्वभौमिक रुढ़ियाँ हैं। उदाहरणार्थ पुरुष शारीरिक रूप से कठोर, अधिक आक्रामक, अधिक समझदार, बिना प्रेम के सेक्स को अधिक अच्छी तरह संभालने वाला और जीत की भावना के कारण कार्य में अधिक सफल होने वाला माना जाता है। दूसरी तरफ स्त्रियों को अधिक भावुक तथा अविश्वसनीय माना जाता है। कहा जाता है कि वे विचारों की अपेक्षा लोगों में अधिक रुचि रखती हैं। उन्हें शायद अपने बच्चों को छोड़कर किसी पर भी आसान नियंत्रण पाने के लिए अति परामर्शग्राही और निर्भर रहने वाली माना जाता है।

प्रश्न यह है कि इनमें से कौन–सी रुढ़ियाँ स्त्रियों की वास्तविकता पर आधारित हैं और कौन सी रुढियाँ हमारी परिस्थितियों की परिणाम हैं? जैसे, क्या पुरुष का आधिपत्य पुरुष के मनोविज्ञान और हारमोन प्रणाली का परिणाम है? क्या उपर्युक्त रुढ़ियों के बारे में ऐसा कहा जा सकता है कि वे पुरुषों और स्त्रियों के अलग–अलग प्रजनन तंत्रों के कारण है? यह भी याद रखना होगा कि प्रायः लिंगों में मामूली जैविक भिन्नताएँ अतिरंजित हैं और उनके बीच व्यापक समानताओं को पृष्ठभूमि में रख दिया गया है।

इन बुनियादी प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करने से पहले आइए हम पुरुषों और स्त्रियों में व्याप्त भिन्नताओं और समानताओं को समझने की कोशिश करते हैं।

2.3 शारीरिक भिन्नताएँ

प्रसव पूर्व

सेक्स क्रोमोजोमः निसेचित अंडे में क्रोमोजोम के 23 जोड़े होते हैं जिनमें से 23वाँ जोड़ा लिंग क्रोमोजोम (लिंग निर्धारक) होता है। यह क्रोमोजोम व्यक्ति का लिंग निर्धारित करता है। इस जोड़े में क्रोमोजोम हमेशा स्त्री से आता है और दूसरा x या y क्रोमोजोम पुरुष से आता है। यदि पुरुष द्वारा प्रदत्त क्रोमोजोम x है तो संतान लड़की होगी और यदि क्रोमोजोम y है तो संतान लड़का होगा।

लैंगिक भिन्नताओं की प्रक्रिया

भ्रूण में लैंगिक भिन्नता की सामान्य प्रक्रिया के अपवाद बहुत कम ही होते हैं। यद्यपि वे दुर्लभ तो हैं किन्तु इन पर चर्चा करना बड़ा रोचक है क्योंकि ये बताते हैं कि सेक्स (लिंग) हमेशा सीधे जैविक विकास का मामला नहीं है। आइए, हम कुछ मामलों की जाँच करें।

कुछ दुर्लभ मामलों में देखा गया है कि एक मादा भ्रूण अत्यधिक पुरुष सेक्स हारमोनों का निर्माण करती है। यह विसंगति आंतरिक प्रजनक अंग बनने के बाद और बाहरी लैंगिक अंगों के बनने से पूर्व होती है। ये बच्चे अस्पष्ट बाहरी अंग वाले पैदा होते हैं। बहुत बार बच्चे आंतरिक रूप से स्त्री प्रजनन अंग वाले (अर्थात् अण्डाश्य) तथा बाहरी रूप से पुरुष जननांग (शिश्न) वाले पैदा होते हैं। यह स्थिति कृत्रिम रूप से भी बनाई जा सकती है।

कुछ वर्ष पूर्व तक, गर्भवती महिलाओं में गर्भपात को रोकने के लिए कृत्रिम हारमोन (प्रोजस्टीन) दिया जाता था। प्रोजस्टीन में पुरुष हारमोन टेस्टोस्ट्रोन के तत्व होते हैं यह देखा गया है कि इन टेस्टोस्ट्रोन अंशों का मादा भ्रूणों पर पुरुष बनाने वाला प्रभाव पड़ता है।

जब कोई संतान जननिक रूप से मादा हो और उसमें आंतरिक रूप से स्त्री प्रजनन अंग और बाहरी रूप से पुरुष जननांग हों तो संभवतः वह लड़के के रूप में बड़ा होता है। यह देखा गया है कि यदि किशोरावस्था में इस बच्चे को अतिरिक्त पुरुष हारमोन दिए जाएँ तो इसमें नर विशेषताएँ विकसित होती हैं। जैसे

भारी आवाज और दाढ़ी मूंछ इत्यादि। वयस्क रूप में वह पुरुष सफलतापूर्वक यौन जीवन जी सकता है। बहरहाल, यदि संतान की सही शल्य चिकित्सा की जाए और पारम्परिक रूप से बाहरी मादा जननांग प्रदान किए जाएँ तो यह लड़की के रूप में विकसित हो सकती है जो किसी समाज में पारम्परिक और लैंगिक रूप से स्त्री मानी जाएगी। ऐसा लगता है कि जन्म से पूर्व प्राप्त एड्रोजिन की अधिक मात्रा उनकी मस्तिष्कों पर कुछ नर प्रभाव डालती है।

वास्तव में ऐसी संतानें उचित शल्य चिकित्सा और हारमोनों के समायोजन से सफलतापूर्वक नर या मादा के रूप में विकसित किए जा सकते हैं। इस प्रकार यद्यपि यौन जैविक रूप से निर्धारित किए जाते हैं तो भी लैंगिकता पोषण या प्रकृति से प्रभावित होती है।

जन्म के समय शारीरिक भिन्नताएँ

1) जन्म के समय लड़का और लड़की में बहुत समानता होती है।

2) किशोरावस्था तक औसतन लड़की का कद औसतन लड़के के कद से थोड़ा कम होता है।

3) लड़कों की उनके शरीर की तुलना में आगे की भुजाएँ अपेक्षाकृत लम्बी होती हैं।

4) लड़कियों की तर्जनी अनामिका उंगली से थोड़ी बड़ी होती है।

5) लड़कियों में यौवनावस्था लड़कों से 2 वर्ष पहले आती है।

6) लड़कियों की किशोरावस्था का विकास पहले होता है।

7) लड़कियों का कद लगभग 15½ वर्ष की आयु तक तथा लड़कों का कद 17½ वर्ष की आयु तक बढ़ता है।

8) 14 वर्ष की आयु तक औसत लड़की औसत लड़के से लम्बी होती है।

9) जन्म के समय लड़कियों का वजन अपेक्षाकृत लड़कों से थोड़ा कम होता है। 8 वर्ष की आयु तक बराबर हो जाता है। 9 या 10 वर्ष तक लड़कों से भारी हो जाता है। औसतन लड़की 14 वर्ष की आयु में वृद्धि रुकने तक वजन में लड़कों से अधिक रहती है।

10) जन्म के समय लड़कियों में अपेक्षाकृत लड़कों से कुछ अधिक चर्बी होती है। यह संपूर्ण बचपन तक बनी रहती है।

11) किशोरावस्था आरंभ होने पर लड़कों में चर्बी बढ़ने की गति कुछ कम हो जाती है जबकि लड़कियों में चर्बी का संचय होना विशेषतः धड़ या सीने पर निरंतर जारी रहता है।

12) जन्म के समय लड़के लड़कियों की अपेक्षा शीघ्रता से बढ़ते हैं लेकिन लगभग 7 मास तथा 4 वर्ष की आयु के बीच में स्थिति विपरीत हो जाती है।

13) इसके बाद यौवनावस्था तक लड़के और लड़कियों में बहुत कम अंतर रह जाता है। यौवनकाल में लड़कियाँ फिर आगे हो जाती हैं।

14) जन्म के समय लड़कियों के ढाँचे का विकास लड़कों के ढाँचे की अपेक्षा 4 से 6 सप्ताह पहले होता है। वह 21 महीनों में ही अपने प्रौढ़ावस्था की आधी लंबाई पा लेती है। एक लड़के को ऐसी ही स्थिति में आने के लिए 3 महीने का अधिक समय लगता है।

15) सोने की पद्धति लगभग दोनों में समान होती है।

16) जन्म के समय लड़कियों में यौनि प्रदेश का छिद्र अधिक खुला होता है जिसमें से जन्म के समय शिशु को गुजरना होता है।

किशोरावस्था की अवधि में

1) किशोरावस्था में यौन हारमोन अपनी भूमिका स्पष्ट रूप से निभाने लगते हैं। पुरुषों में मुख्य यौन हारमोन एंड्रोजिन हैं जिसमें सर्वाधिक शक्तिशाली है टेस्टोस्ट्रोन। मुख्य मादा हारमोन हैं ऑस्ट्रोजिन एवं प्रोजेस्ट्रोन। इनको नर एवं मादा हारमोन कहना वास्तव में अनुचित है। दोनों ही लिंग दोनों प्रकार के हारमोन तैयार करते हैं। दोनों में अंतर केवल उनके बीच संतुलन का है। तथाकथित नर और मादा हारमोन अपने संबंधित लिंगों तक ही सीमित नहीं होते। अंडाशय अथवा अंडकोष दोनों ही तीनों प्रकार के हारमोन बनाते हैं और गुर्दे के ऊपर स्थित एड्रिनल ग्रंथियाँ दोनों लिंगों में एंड्रोजन का स्राव करती हैं। स्त्रियों का अंडाशय तथा एड्रिनल ग्रंथियाँ एंड्रोजन बनाती हैं जिससे भुजाओं के नीचे (काँख में) तथा योनि क्षेत्र में बाल उगते हैं। अंडकोष न्यून मात्रा में एस्ट्रोजन बनाते हैं लेकिन अभी तक उसका शारीरिक प्रभाव ज्ञात नहीं है।

2) किशोरावस्था में लिंगों में शारीरिक भिन्नता आरंभ हो जाती है। लड़कियाँ तेज़ी से विकसित होती हैं तथा लड़कों से पहले युवा हो जाती हैं। उनका बढ़ना भी शीघ्र ही रुक जाता है।

3) लड़कियों के शरीर में शीघ्र वृद्धि होने के कारण वे अल्प अवधि में लड़कों से न केवल बड़ी हो जाती हैं अपितु ताकतवर भी बन जाती हैं।

4) यौनांगों और स्तनों में महत्त्वपूर्ण विकास हो जाता है।

5) लड़कियों में शारीरिक विकास का प्रस्फुटन और प्रजनन अंगों में परिवर्तन, लगभग एक ही अवधि में होता है, जो उनकी युवावस्था का आरंभ होता है। लड़कों का शारीरिक विकास जनगांगों के संपूर्ण रूप से विकसित होने के पहले शायद ही आरंभ होता है।

6) लड़कियों और लड़कों के युवावस्था के बाल प्रकट होने में 9 महीनों का अंतर होता है।

7) औसतन $14\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में लड़कें युवावस्था में पहुँच जाते हैं जबकि लड़कियों में युवावस्था में प्रथम मासिक धर्म थोड़ा विलम्ब से होता है।

8) शारीरिक रूप से जल्द परिपक्व होने वाले लड़के और लड़कियों की "आई क्यू" (बुद्धि की मानदंड इकाई) औसत "आई क्यू" से कुछ अधिक होती है। यह प्रवृत्ति चतुर बच्चों में शीघ्र बड़ा होने की होती है न कि शीघ्र बड़े होने वाले बच्चों में अधिक चतुर होने की।

9) किशोरावस्था से पूर्व लड़के और लड़कियों के नितम्ब और कंधे आमतौर पर लगभग एक जैसे ही होते हैं। किशोरावस्था आरंभ होते ही इसमें तेज़ी से परिवर्तन आने लगता है। नितम्ब में उपास्थ जोड़ ऑस्ट्रोजन नामक हारमोन के प्रति संवेदी हो जाते हैं जबकि कंधे एंड्रोजन विशेषतः टेस्ट्रोजन हारमोन के प्रति संवेदनशील होते हैं। लड़कियों के नितम्ब तथा लड़कों के कंधे चौड़े होने लगते हैं।

10) किशोरावस्था में लड़कियों में तेज़ी से जमा होने वाली अधिकांश चर्बी उनके नितम्बों, स्तनों, ऊपरी भुजाओं तथा टाँगों में जमा होने लगती हैं। यह युवावस्था के आरंभ में रक्त में स्रावित होने वाले ऑस्ट्रोजन की मात्रा के कारण होती है। इस प्रकार लड़के और लड़कियों के शारीरिक बनावट में महत्त्वपूर्ण फर्क हो जाता है। स्त्रियों का 25 प्रतिशत विशिष्ट शारीरिक भाग चर्बी से भरा होता है जबकि पुरुषों के विशिष्ट शारीरिक भाग में केवल 12 प्रतिशत चर्बी होती है इसे खेलकूद में पुरुषों की श्रेष्ठता के आलोक में देखा जा सकता है। स्त्रियों में चर्बी की अधिक मात्रा से उन्हें कुछ लाभ भी हैं (जो नीचे वर्णित है)।

11) चूंकि टेस्टोस्ट्रोन अस्थियों और माँसपेशियों को वृद्धि के लिए उत्प्रेरित करता है, इसलिए लड़के ताकतवर तथा वजनी हो जाते हैं। युवावस्था से पूर्व के विपरीत युवावस्था में कदम रखने वाले लड़कों की माँसपेशियाँ अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। भुजाओं की ताकत लड़कों में ढाई गुणा तथा लड़कियों में केवल डेढ़ गुणा बढ़ती है।

शक्ति का सवाल

आइए यहाँ हम पुरुष और स्त्रियों की ताकत के बारे में वैज्ञानिक आँकड़ों के विवरण की संक्षेप में चर्चा करें।

क) औसत पुरुष औसतन स्त्री से बड़ा व शक्तिशाली होता है।

ख) औसतन पुरुष कद औसतन स्त्री कद से बड़ा होता है।

ग) औसतन पुरुष स्त्री से 30 प्रतिशत अधिक ताकतवर होता है। यह अपेक्षाकृत तेज़ दौड़ सकता है तथा उसमें अधिक दम होता है।

घ) औसत स्त्री औसत पुरुष की तुलना में छोटे कंधे वाली, बड़े नितम्ब वाली तथा अधिक चर्बी वाली होती है और शरीर के अनुपात में अंगों की लम्बाई कम होती है।

ङ) माँसपेशी तन्तु दो प्रकार के होते हैं। एक है लाल तन्तु। इसके कारण दम खम वाले कार्य संभव होते हैं (जैसे लम्बी दूरी तक दौड़ना, पर्वतारोहन आदि)। दूसरा तन्तु सफेद है जो शीघ्र अथवा झटके से काम करते समय काम आता है जैसे भारोत्तोलन, कम दूरी की तेज़ दौड़ आदि। अधिकांश लोगों में दोनों प्रकार के तन्तुओं की बराबर मात्रा होती है। उनमें इन तंतुओं के मात्राओं का संतुलन रहता है। इससे कोई भी क्रिया में अधिक वृद्धि नहीं होती। कुछ लोगों में एक या दूसरे प्रकार के माँसपेशी तन्तु

अधिक हो जाते हैं। वे विशिष्ट खिलाड़ी बन जाते हैं। यह देखा गया है कि यह असंतुलन महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है।

च) फिर भी, कुछ ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा केवल स्त्रियों की ही माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं पुरुषों की नहीं। किसी स्त्री की माँसपेशियाँ उसके शरीर में निरंतर होने वाले रासायनिक परिवर्तनों में जीवित रहने के लिए उपयुक्त है। जैसाकि हम जानते हैं कि उसके शरीर में हारमोनों के स्तर में उतार–चढ़ाव होता रहता है। उसके मासिक चक्र अवधि के अनुसार उसके शरीर में वर्तमान जल की मात्रा भी परिवर्तित होती है। स्त्री की माँसपेशियाँ इस तरह की हलचल का सामना कर सकती हैं। पुरुषों की माँसपेशियों में ऐसी क्षमता नहीं होती। जब पुरुष के शरीर में रासायनिक असंतुलन होता है (जैसे रोग होने पर), तो उसके लिए उससे निपटना कठिन होता है। इसी कारण पुरुषों को दर्द और पीड़ा का मुकाबला करने में काफी कठिनाई होती है।

छ) पुरुषों के लाल तन्तु ऑक्सीजन का अधिक कुशलता से प्रयोग करते हैं। इसी कारण वे स्त्रियों की अपेक्षा कठिन कार्य कर सकते हैं। बहरहाल, वे शरीर के प्राकृतिक दर्द एजेंटों का निर्माण भी करते हैं जिन्हें बीटा एंड्रोफीस कहा जाता है। स्त्रियों की माँसपेशियाँ कम कुशलता से ऑक्सीजन का प्रयोग करती हैं लेकिन वे इन दर्द एजेंटों का निर्माण नहीं करतीं। इसलिए स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में थका देने वाले ऐसे कार्य भी कर सकती हैं जो पुरुष अपने दर्द की वजह से नहीं कर पाते। स्त्रियाँ पुरुष की तुलना में दर्द का अच्छी तरह मुकाबला कर सकती हैं।

ज) पुरुषों में अपेक्षाकृत बड़े, हृदय और फेफड़े, उच्च रक्त दाब, तेज़ी से धड़कने वाला दिल तथा रक्त प्रवाह में ऑक्सीजन संप्रेषण की अधिक क्षमता तथा शारीरिक व्यायाम के कारण हुए रासायनिक अपशिष्ट निकालने की अधिक योग्यता होती है। पुरुषों के फेफड़े औसत स्त्रियों के फेफड़ों से बड़े होते

हैं। पुरुष स्त्रियों के अपेक्षा डेढ़ गुणा अधिक ऑक्सीजन ले सकते हैं। इससे उनका दम तथा ताकत प्रभावित होती है। कोई भी व्यक्ति ईंधन के रूप में पेशियों को मिलने वाली ऑक्सीजन के कारण ही सक्रिय रह सकता है। इस प्रकार एक औसत व्यक्ति में एक औसत स्त्री की तुलना में अधिक दम होता है।

झ) रक्त संरचना में भी भिन्नता हैः किशोरावस्था में लड़कों को लड़कियों की तुलना में अधिक लाल रक्त कोशिकाओं और हिमोग्लोबिन की आवश्यकता होती है।

ट) पुरुष कठिन कार्य करने के लिए तो ताकतवर हो सकते हैं लेकिन जब संपूर्ण जीवंतता की बात आती है, तो स्त्रियाँ अधिक लाभ की स्थिति में होती हैं। ताकत के संदर्भ में स्त्रियों को नुकसान यह है कि कार्य करने की स्थितियाँ उनके लिए अनुकूल नहीं होती। जब पोषण की कमी होती है तो उनके शरीर में जमा चर्बी स्त्रियों को अधिक समय तक जीवित रखती है। जब वातावरण ठंडा होता है तो उनका लघु ढाँचा पुरुषों के बड़े ढाँचे के मुकाबले ताप का कम क्षय करता है। स्त्रियों में भोजन एवं ऑक्सीजन का उपभोग भी धीरे–धीरे होता है। इसीलिए जीवित रहने के लिए उन्हें इनकी कम मात्रा की ही आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शारीरिक शक्ति में पुरुष स्त्रियों से अधिक ताकतवर है। निःसंदेह ताकत के संदर्भ में केवल जैविक तथ्यों की ही गणना नहीं की जा सकती है। माँसपेशियाँ, फेफड़ों की क्षमता तथा हृदय के आकार को व्यायाम द्वारा बढ़ाया जा सकता है। इस संदर्भ में लैंगिक रुढ़ियाँ भी माँसपेशियों आदि के विकास पर प्रभाव डालती हैं। अनेक किशोरियाँ शारीरिक व्यायाम नहीं करती क्योंकि उन्हें गर्मी और पसीना आने से परेशानी होती है जिसके द्वारा वे सोचती हैं कि उनमें स्त्रीत्व कम हो जाएगा। आधुनिक व्यायाम वाले खेलों ने सिद्ध कर दिया है कि शारीरिक व्यायाम के द्वारा स्त्रियाँ भी अपना

दम–खम बढ़ा सकती हैं। यद्यपि जैविक आधार पर पुरुष अधिक ताकत बढ़ा सकते हैं तो भी कोई विशेष स्त्री किसी विशेष पुरुष से अधिक ताकतवर हो सकती हैं। हम केवल औसत पुरुषों और स्त्रियों के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

क्या मासिक धर्म और गर्भावस्था से महिला एथलीट की कुशलता पर कोई विपरीत प्रभाव पड़ता है? 1976 के ओलम्पिक खेलों में एक अमरीकी तैराक स्त्री ने मासिक धर्म की चरम अवस्था में तीन स्वर्ण पदक जीतें और एक विश्व का नया कीर्तिमान बनाया था। 1964 के ओलम्पिक खेलों में कम से कम 10 गर्भवती महिला खिलाड़ियों ने पदक जीते थे। लेकिन यह जानना रोचक है कि व्यायाम के द्वारा अपनी ताकत बढ़ाने वाली स्त्रियाँ पुरुषों जैसे ही दिखने लगती हैं। किसी स्त्री के कुल्हे एवं नितम्बों का आकार एवं आकृति तथा उनकी टाँगों और शरीर का विशेष अनुपात प्रशिक्षण के माध्यम से भी पुरुषों के बराबर ताकतवर बनने में बाधक होता है। पुरुष माँसपेशियों की लेक्टिक अम्ल तोड़ने की क्षमता और इस प्रकार जकड़न से बचाव की विशेषता एक और खासियत है जो स्त्रियों में नहीं होती, जिससे वे ताकतवर बनने में पीछे रह जाती हैं।

स्वास्थ्य एवं रोग प्रश्न

तथ्य यह है कि पुरुष स्त्रियों की तुलना में रोगों के लिए अधिक सुभेद्य हैं। किसी नवजात लड़के की नवजात लड़की की तुलना में एक वर्ष की आयु से पहले ही मृत्यु की अधिक संभावना रहती है। उसे संक्रमण की जोखिम अधिक रहती है। पुरुषों को हार्ट अटैक तथा अल्सर की अधिक संभावना रहती है। स्त्रियों में पुरुषों की तुलना में जननांगों के कैंसर से अधिक पड़ित होने की तथा हारमोन संबंधी विभिन्न रोगों जैसे मधुमेह और थायराइड की विकृतियों से पीड़ित होने की संभावना रहती है। पुरुषों में कई अन्य प्रकार के गंभीर रोगों के होने की भी संभावना रहती है। पुरुषों में स्त्रियों की तुलना में फेफड़ों के कैंसर की चार गुणा और हृदय रोगों की तीन गुणा अधिक संभावना रहती है। उनमें आघातों और साँस संबंधी विकृतियों की भी अधिक संभावना बनी रहती है। अनेक समाजों में विशेषतः

जहाँ अधिक गरीबी नहीं है वहाँ स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक समय तक जीवित रहती है। 1951 से 1960 की अवधि में पुरुषों की औसत आयु 41.9 तथा स्त्रियों की औसत आयु 40.6 वर्ष थी। यह सामान्य प्रवृत्ति का एक अपवाद ही माना जाता है जबकि विश्व के अधिकांश भागों में स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक समय तक जीवित रहती हैं।

2.4 भावनात्मक भिन्नताएँ

स्त्रियों को प्रायः भावनाओं का पुलिंदा माना जाता है। कहा जाता है कि वे अपने हृदय की भावनाओं के वश में होती हैं जबकि पुरुष मस्तिष्क के तर्कों का पालन करते हैं। क्या भावनाओं की अभिव्यक्ति के ये स्वरूप पुरुषों और स्त्रियों की जैविकता पर आधारित हैं? सर्वप्रथम हमें इस बात पर सहमत होना होगा कि भावुकता का मतलब क्या है। इस प्रश्न पर विचार करते समय भावनाओं का संबंध महसूस करने से है; उन्हें अनुभव की तीव्र अभिव्यक्ति कहा जाता है। कोई व्यक्ति दूसरे से ज्यादा मनोभाव वाला है, यह हम तभी कह सकते हैं जब हम ठीक से जाने कि अनुभव कैसे करते हैं। फिर भी यह जानने का कोई प्रत्यक्ष तरीका नहीं है कि कोई व्यक्ति कैसे अनुभव करता है। कोई व्यक्ति कैसा अनुभव करता है यह जानने के लिए हमें अप्रत्यक्ष तथ्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।

मनोभावों को जानने के तीन तरीके

व्यक्तियों द्वारा अनुभव किए गए मनोभावों को मापने के तीन संभावित तरीके हैं:

क) अवलोकन

यह विधि प्रायः बच्चों के लिए प्रयुक्त होती है। उनके आँसू, झल्लाहट और खुशी व उल्लास आसानी से देखें जा सकते हैं। यह निष्पक्ष प्रक्रिया नहीं है। इसमें पक्षपात की हमेशा संभावना रहती है। मान लीजिए आपका विश्वास है कि लड़के लड़कियों की अपेक्षा अधिक आक्रामक होते हैं

इसलिए आप एक ही समय में लड़के और लड़की की समान भाव भंगिमाओं को भिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं। चिल्लाना, लड़के की आक्रामकता तथा लड़की में शालीनता का अभाव माना जा सकता है। इस विधि में एक समस्या है। यह बड़ों के मामले में उपुयक्त नहीं है क्योंकि वे अपने आंतरिक मनोभावों को छिपाना सीख जाते हैं।

ख) आत्मालोचन

लोगों से कहिए कि वे अपने मनोभावों को लिखें और आपको बताएँ लेकिन यह विधि वहाँ सफल नहीं है जब कोई एक दूसरे से अधिक भावुक हो। हम केवल समझ सकते हैं कि व्यक्ति कैसे अनुभव करता है। इसकी मात्रा निर्धारित करने का तथा दूसरों की भावनाओं से तुलना करने का कोई तरीका नहीं है।

ग) महत्त्वपूर्ण संकेतों की जाँच

मनोभावों को जाँचने का यह सर्वाधिक तर्कसंगत तरीका माना जाता है। हम इसमें भावनायुक्त हारमोनीय परिवर्तन जिन्हें किसी व्यक्ति के मूत्र या रक्त द्वारा जाना जा सकता है, समेत मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों पर प्रभाव को मापते हैं। लेकिन इससे केवल इस बात का संकेत मिलता है कि व्यक्ति कुछ मनोभाव अनुभव कर रहा है, यह पता नहीं लगता है कि मनोभाव क्या है? विभिन्न मनोभावों के प्रति किसी एक व्यक्ति में एक समान प्रतिक्रिया हो सकती है।

ये तीनों ही विधियाँ पुरुष और स्त्री के निम्नलिखित मनोभावों की भावनात्मक प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करने के लिए लागू की जाती हैं:

इनमें से कुछ के बारे में यह भी देखेंगे कि क्या पुरुष और स्त्री में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर है तथा क्या उनके जीव विज्ञान में इसका कुछ आधार है।

रोने की परिघटना

देखा जाता है कि पूरे विश्व में प्रौढ़ पुरुषों की तुलना में प्रौढ़ स्त्रियाँ अधिक रोती हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शैशव काल में लड़का और लड़की के रोने में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं होता। और यदि कोई अंतर होता भी है तो लड़कियों की अपेक्षा लड़के थोड़ा अधिक रोते हैं। प्रौढ़ स्त्रियों के अपेक्षाकृत अधिक रोने का कारण उनके शैशवकाल से प्रौढ़ावस्था के बीच की अवधि में या फिर प्रौढावस्था में ही होना चाहिए।

आधुनिक अनुसंधानों के परिणाम से पता चलता है कि प्रौढ़ों में यह अंतर आंशिक रूप से सामाजिक परिस्थिति के कारण है। समाज द्वारा यह संदेश दिया जाता है कि पुरुष रोते नहीं है। दूसरी तरफ यह भूमिका स्त्रियों के लिए स्वीकृत है। इसके अतिरिक्त इस प्रवृत्ति में कुछ जीव विज्ञान का भी हाथ होता है। यह देखा गया है कि कुछ स्त्रियों के मासिक चक्र के अंत में जब हारमोनों का स्तर कम हो जाता है तो वे आँसू जल्दी से बहाने की प्रवृत्ति में आ जाती हैं अर्थात उन्हें शीघ्र रोना आ जाता है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि वे इसी समय रोती हैं। अन्य समयों पर रोने के लिए इस कारण को नहीं माना जा सकता। रोना, पुरुषों के लिए भी अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने का कोई गलत तरीका नहीं हो सकता। रोना कोई बुरी बात नहीं होती। फिर भी रुढ़ियों के कारण पुरुषों द्वारा ऐसा स्वाभाविक व्यवहार प्रतिबंधित सा हो गया है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, फ्रायड ने ठीक ही कहा है कि हम अपने सभ्य होने का मूल्य स्नायु रोगी हो कर चुकाते हैं।

चिंता और भय

अधिकांश अध्ययनों में पाया गया है कि स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक चिंतित, चिड़चिड़ी तथा भावुक होती हैं। अध्यापक तथा बच्चों से वास्ता रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति प्रायः लड़कियों के बारे में यही कहते हैं कि वे लड़कों की अपेक्षा अधिक कायर और चिंताशील होती हैं। इसके बारे में किए गए अनुभवमूलक अध्ययन इस

धारणा का समर्थन नहीं करते। तथ्य दर्शाते हैं कि लड़कियों को भयभीत होने और भावुक होने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। यह भी देखा गया है कि मनोचिकित्सक तथा मनोवैज्ञानिक तक इस सामाजिक रुढ़ि का शिकार हो जाते हैं तथा वे भी स्त्रियों को अधिक भावुक मानने लगते हैं।

यह पाया गया है कि स्त्रियाँ दूसरे लोगों की भावना से अधिक प्रभावित होती हैं। यह भिन्नता भी पुनः शैशवकाल में जाती है। यह देखा गया है कि शैशवकाल में किसी शिशु के रोने की आवाज सुनकर बच्चियाँ, बच्चों की अपेक्षा प्रायः अधिक शीघ्र रोने लगती हैं। यह एक अच्छी भावना है, किन्तु जब औरतों के अधिक भावुक होने की बात कही जाती है तो वह नकारात्मक अर्थ में ही कही जाती है।

मासिक चक्र और मनोभाव

स्त्रियों की भावनात्मक प्रकृति के बारे में एक और धारणा यह है कि वे अपने मासिक चक्र की भावनाओं से पीड़ित होती हैं। यह काफी व्यापक विश्वास है जो न केवल अशिक्षित लोगों में अपितु शिक्षित लोगों में भी कायम हैं। इस धारणा को 1939 में वैज्ञानिक समर्थन भी मिल गया जब दो चिकित्सकों ने 15 स्त्रियों पर किए गए अनुसंधान के निष्कर्ष प्रकाशित किए। उनका विचार था कि स्त्रियाँ अंडोत्सर्जन के समय मध्य चक्र में सर्वाधिक प्रसन्न एवं आत्मविश्वास से भरी होती हैं लेकिन मासिक धर्म से पहले और मासिक धर्म के दौरान वाले सप्ताह में वे तनावग्रस्त, अवसादग्रस्त तथा अस्थिर चित्त वाली हो जाती हैं। तब उनमें हारमोन स्तर न्यूनतम हो जाता है। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप रोग विज्ञान के इतिहास में एक नया लक्षण प्रतिष्ठापित हो गया। मासिक धर्म पूर्व लक्षण (पी.एम. एस.)। आज यह व्यापक रूप से स्वीकृत रोग माना जाता है तथा औषधि व्यवसाय, चिकित्सक और स्वास्थ्य केन्द्र इसके अस्तित्व को खुशी से स्वीकार करते हैं। स्त्रियों के विरुद्ध कुछ भेदभाव इस तथाकथित समस्या पर भी आधारित हैं जो उनको हर महीने झेलनी पड़ती हैं। फिर भी सच्चाई यह है कि इस

परिकल्पित मनोवैज्ञानिक रोग के बारे में अभी ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिनका उत्तर दिया जाना शेष है।

पुरुषों और स्त्रियों में भावनात्मक भिन्नताओं के लिए यौन हारमोनों की क्रियाओं के बारे में की गई व्याख्याएँ अप्रामाणिक लगती हैं। सच्चाई यह है कि बच्चों में लैंगिक संवेदना उस समय आरंभ हो जाती है जब यौन हारमोनों का कुल उत्पादन अत्यधिक कम होता है तथा हारमोनों की गतिविधियों में लैंगिक भिन्नता नहीं होती। इसलिए इस अतिरंजित कल्पना को शुरू में ही समाप्त कर देना चाहिए।

मनोविज्ञान की एक शाखा की राय है कि जैविक यौन भिन्नताओं विशेषकर यौन भिन्नताओं के कारण बच्चों को बिना किसी बाहरी सहयोग के लैंगिक भूमिका करनी चाहिए। फिर भी अब तक किए गए अनुभव मूलक अध्ययनों से फ्रॉयड के विचार को ही समर्थन मिलता है चाहे ये सिद्धान्त कितने भी आकर्षक तथा सही लगते हों।

पुरुष और स्त्री बनने की प्रक्रिया गर्भाधान से आरंभ होती है और कभी नहीं रुकती। जैविक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ इसमें अपनी–अपनी भूमिकाएं निभाती हैं। लेकिन अभी तक इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है कि पुरुष और स्त्रियाँ इसलिए भिन्न–भिन्न भावनाएँ अनुभव करती हैं कि वे जैविक रूप से भिन्न हैं।

इस प्रकार, निष्कर्ष यह है कि पुरुषों और स्त्रियों की भावनात्मक प्रतिक्रिया में अंतर अधिकांशतः उनकी पारम्परिक यौन भूमिका में रुढ़ियों का परिणाम है। इन रुढ़ियों का कठोरता से अनुसरण करने से जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का सामना करने की हमारी योग्यता प्रतिबंधित हो जाती हैं तथा हमें विभिन्न प्रकार से सुभेद्य बना देता है।

जब अवसर की माँग हो तो हमें उपयुक्त भावनात्मक प्रतिक्रिया करनी चाहिए चाहे रुढ़ियाँ कुछ भी क्यों न हों। जो व्यक्ति रुढ़ियों के निषेधों का ध्यान किए बिना

सही से प्रेरित होते हैं उन्हें उभयलिंगी (पुरुषों और स्त्रियों में पाए जाने वाले गुण) व्यक्ति कहते हैं। ऐसा लगता है कि उनका मानसिक स्वास्थ्य रुढ़ियों का पालन करने वाले व्यक्तियों से अधिक अच्छा होता है।

उभयलिंगी व्यक्तित्व

तथ्य यह है कि पुरुष और स्त्रियाँ एक ही मानव जाति से संबंधित हैं इसलिए वे इस बात का बहाना नहीं बना सकते कि वे एक–दूसरे से इतने अलग है कि एक–दूसरे को समझ नहीं सकते। उनमें कुछ भिन्नताएँ हैं लेकिन यह कहना अतिशयोक्ति हैं कि पुरुष मंगल ग्रह से आए हैं और स्त्रियाँ शुक्र ग्रह से। प्रत्येक पुरुष में कुछ स्त्री तथा प्रत्येक स्त्री में कुछ पुरुष गुण निहित होते हैं। एक अमेरिकी भारतीय लेखक ने लिखा है, "प्रत्येक पुरुष में औरत की झलक तथा प्रत्येक औरत में पुरुष की झलक होती है।" इस उक्ति के लिए हम शारीरिक तथा हारमोनीय आधारों की चर्चा कर चुके हैं। अनेक पौराणिक कथाएँ संकेत करती हैं कि आदि मानव पुरुष और औरत दोनों थे। मनोवैज्ञानिक कार्ल गुस्तव जंग कहते हैं कि "पुरुष की आत्मा में मादा तथा स्त्री की प्रेरणा में नर मूल तत्व है।" निसंदेह पुरुष किसी भी स्त्री के अनेक विशिष्ट अनुभवों को तथा स्त्री कभी भी पुरुष के अनुभव को समझ नहीं पाएगी। यदि दोनों में दोनों के गुण न हों। फिर भी दोनों परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। निश्चित रूप से पुरुष और स्त्री पर आरोपित सांस्कृतिक रुढ़ियाँ इस विशिष्ट पुरुष और स्त्री के पहलुओं का अनिवार्य भाग नहीं है। उभयलिंगी व्यक्तित्व इन रुढ़ियों से अधिक विकसित होगा। इससे पुरुषों और स्त्रियों का विरोध किए बिना अपने स्वभाव में निहित शक्तियों को वास्तविक मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी। जिससे पुरुष और स्त्री एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संक्षेप में स्पष्ट करें कि स्त्री की तुलना में पुरुष के रोगी होने की अधिक संभावना क्यों हैं?

....

....

....

....

....

....

2.5 बौद्धिक भिन्नताएँ

यह एक काफी प्रचलित विश्वास है कि पुरुष स्त्रियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं। यदि कोई मानव जाति के इतिहास की समीक्षा करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि पुरुषों ने अधिक सही और व्यापक बौद्धिक योगदान दिया है।

केवल उन्नीसवीं शताब्दी में ही इस विश्वास की प्रमाणिकता जाँचने के लिए कुछ प्रयास वैज्ञानिक रूप से किए गए। इस जाँच का प्रारंभ मानव मस्तिष्क के अध्ययन से हुआ जो बुद्धि का शारीरिक आधार है।

सामान्यतया पुरुष का मस्तिष्क औसतन स्त्री के मस्तिष्क से चार औंस बड़ा होता है लेकिन इसका कारण यह है कि पुरुष स्त्री से भारी होता है। पुरुष के मस्तिष्क

का अधिक भार इसको सहारा देने वाले तंतुओं के कारण है न कि सोचने वाली सामग्री के कारण। मस्तिष्क के आकार का बुद्धि से कोई संबंध नहीं है।

क्या पुरुष के मस्तिष्क के वे भाग जो बुद्धि से संबंधित है स्त्री मस्तिष्क के उन्हीं भागों से अधिक विकसित हैं?

1870 के दशक में वैज्ञानिकों का विचार था कि बुद्धि का आधार मस्तिष्क का सामने वाले पिण्डक होते हैं। उनका दावा था पुरुषों में यह भाग स्त्रियों से बड़ा होता है। इसे स्त्रियों से पुरुषों में अधिक बुद्धि होने के लिए जिम्मेदार माना गया। लेकिन स्त्रियों में पार्श्विक पिण्डक बड़े होते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक वैज्ञानिकों ने कहना आरंभ किया कि पार्श्विक पिण्डक शैक्षिक गतिविधियों का स्थान है। अब अनुसंधानकर्ताओं ने यह कहना आरंभ किया कि पार्श्विक पिण्डक पुरुषों में स्त्रियों से अधिक बड़ा होता है।

ऐसे कुछ हास्यापद तर्क हैं कि स्त्रियों द्वारा अधिक सोचने से वे बाँझ हो जाती हैं। मान्यता यह थी कि स्त्रियों की अपनी संपूर्ण ऊर्जा प्रजनन कार्यों में लगानी चाहिए।

आई क्यू जाँच का उदय होने से स्थिति स्पष्ट होना आरंभ हुई। अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद इन परीक्षणों ने सिद्ध किया कि औसत पुरुष के आई क्यू अंक औसत स्त्री के आई क्यू अंक से भिन्न नहीं है।

लेकिन इन परीक्षणों द्वारा यह भी सिद्ध हुआ लगता है कि दोनों लिंगों की बुद्धिमता के प्रकारों में अंतर है। स्त्रियों ने मौखिक आई क्यू में पुरुषों की तुलना में थोड़ा अधिक अंत प्राप्त किए (बुद्धि परीक्षण का वह भाग जिसमें भाषा योग्यता की जाँच की जाती है)। जबकि दृश्य स्थानिक आई क्यू में पुरुषों के अंक अधिक थे।

किसी व्यक्ति के संदर्भ में नौकरी या कार्य के बारे में इस आधार पर कोई निर्णय नहीं किया जा सकता। औसत पुरुष और औसत स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। किसी भी स्त्री विशेष का दृश्य स्थानिक आई क्यू किसी पुरुष विशेष से अधिक हो सकता है।

पुरुष दृश्य स्थानिक कार्यों में तथा स्त्रियाँ मौखिक कार्यों में प्रायः श्रेष्ठ क्यों होती हैं? पारम्परिक रूप से पुरुष रोटी कमाने वाला तथा स्त्रियाँ बच्चे पैदा करने और पालन पोषण करने वाली मानी जाती है। ये भिन्न प्रकार के कार्य भिन्न प्रकार की निपुणता की माँग करते हैं। संभवतः इसी कारण पुरुषों और स्त्रियों में विभिन्न प्रकार के बौद्धिक अभिरुचियाँ विकसित हुई हैं।

दृश्य स्थानिक कार्यों में पुरुष और स्त्री की भिन्नता विशेषतः ऐसी सभ्यताओं में देखने लायक है जहाँ स्त्रियाँ अधीनस्थ की भूमिका निभाती हैं (जैसे भारत के अधिकांश भागों में) जबकि यह अंतर वहाँ नहीं मिलता जहाँ स्त्रियाँ ऐसी भूमिका नहीं निभाती (एस्किमों में)। इसलिए वातावरण भी इस योग्यता को प्रभावित करता है अकेला जीव विज्ञान नहीं।

इसलिए दृश्य स्थानिक योग्यता में दोनों लिंगों में जैविक अंतर है, तो भी हम लड़कियों को दृश्य स्थानिक निपुणता का तथा लड़कों में मौखिकता के कक्षाओं में प्रशिक्षण प्रदान कर इस अंतर को कम किया जा सकता है।

बौद्धिक योग्यताओं में पुरुष और स्त्री के बीच का अंतर चीरकाल से मस्तिष्कों के अभ्यास का परिणाम लगता है, जिसको उचित प्रशिक्षण द्वारा घटाया जा सकता है। अनेक शताब्दियों से किसी एक लिंग (पुरुष/स्त्री) द्वारा कुछ व्यवहार तथा निपुणताएँ अपनाए जाने से उनमें वह विशेष लिंग पारंगत हो जाता है तथा दूसरा लिंग (पुरुष/लिंग) उपेक्षित हो जाता है। अब इस दिशा को बदलने का समय आ गया है।

2.6 आक्रामकता और हिंसा

आक्रामकता को बिना किसी उकसावे के ऐसे आक्रमण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें शारीरिक अथवा मानसिक चोट पहुँचाने का इरादा हो।

हिंसा को प्रायः पुरुष की परेशानियों और कुंठाओं के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है। स्त्रियों की प्रतिक्रिया को अधिक निष्क्रिय तरीका माना जाता है। इस कथन के तीन प्रमाण इस प्रकार हैं:

- युद्ध पुरुषों की सेनाओं के द्वारा लड़े जाते हैं। जॉन ऑफ आर्क तथा झांसी की रानी इस नियम के अपवाद हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि युद्ध में तैनात पुरुष आक्रामक या स्त्रियों से अधिक आक्रामक होते हैं। आक्रामक होना या न होना कोई फर्क नहीं डालता, क्योंकि वे वहीं करते हैं जो उन्हें करने के लिए कहा जाता है।
- अधिकांश हिंसाएँ और अपराध पुरुषों द्वारा किए जाते हैं। लेकिन विश्व में व्यापक रूप से स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले अपराधों में वृद्धि हो रही है।
- प्रयोगशाला अध्ययन दर्शाते हैं कि बिना किसी कारण के पुरुष स्त्रियों की तुलना में दूसरों को पीड़ित करने के लिए थोड़ा अधिक तैयार रहते हैं। फिर भी यदि उपर्युक्त कारण हो तो स्त्रियों को ऐसा व्यवहार करने के लिए तैयार किया जा सकता है। लेकिन यह भी कहना आवश्यक है कि आक्रामकता में अध्ययनों द्वारा दर्शाया गया अंतर लोगों की धारणा से बहुत कम है।

पुरुष स्त्रियों की तुलना में अधिक आक्रामक क्यों होते हैं?

- वैज्ञानिक रूप से सिद्ध किया जा चुका है कि मस्तिष्क के हाइपोथैलम्स और अमिग्डला नामक भाग मानव के आक्रामक व्यवहार में शामिल हैं। हाइपोथैलम्स नर यौन हारमोनों के प्रति विशेष संवेदनशील होता है। इसलिए हाइपोथैलम्स स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में आसानी से सक्रिय हो

जाता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नर हारमोनों और आक्रामकता में कुछ संबंध है।

- हाइपोथैलम्स को हारमोन प्रभावित करते हैं या आक्रामकता के कारण हारमोनों का अधिक उत्पीड़न होता है। यह एक विवाद का विषय है। इसलिए कोई भी वर्गीकृत रूप से यह नहीं कह सकता है कि यह एक दूसरे का कारक है।
- पुरुषों का आकार एवं ताकत भी अतिरिक्त आक्रामकता में योगदान देती है।
- पुरुषों और स्त्रियों के अलग–अलग प्रशिक्षण अनुभव भी पुरुष की स्वाभाविक आक्रामकता बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

प्रकृति और समाज में कुछ भी अपरिवर्तनीय नहीं है फिर भी, शांतिपूर्वक दूसरों के साथ रहने, व्यक्ति को सामाजिक बनने एवं अपनी आक्रामकता को नियंत्रित करने की उसकी योग्यता में बाधा डालती हैं। सिंगमंड फ्रायड ने ठीक ही कहा है कि सामाजिक जीवन के लिए आक्रामक संवेग को नियंत्रित करना आवश्यक है। यह पुरुष और स्त्री दोनों पर लागू होता है।

2.7 कार्य एवं लिंग भेद

इस इकाई में हमने लगातार तर्क दिया है कि स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में कमज़ोर, चिड़चिड़ी या कम बुद्धिमान नहीं हैं। पुरुष और स्त्रियाँ बौद्धिक योग्यता, सफल होने की इच्छा, विश्वसनीयता तथा व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं के संदर्भ में पूरी तरह समान हैं। अब प्रश्न यह है कि विश्व में अच्छी नौकरियों में स्त्रियों की संख्या कम क्यों हैं?

प्रश्न यह है कि उपलब्धि और क्षमता के सिद्धान्त से पुरुष और स्त्री में जब कोई अंतर नहीं है तो विगत काल में स्त्रियों को इतनी कम उपलब्धियाँ क्यों हासिल हुईं जिसके कारण वे अनुचित भेदभाव का शिकार हुई। आरंभ में यह बता देना

आवश्यक है कि योग्यता उपलब्धि की गारंटी नहीं होती। किसी चीज में सफल होने के लिए उसे करने की योग्यता होना काफी नहीं है, यह भी आवश्यक है कि आप सफल होना चाहते हों। कुछ मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि स्त्रियों में इस चीज का अभाव है। यद्यपि दोनों लिंगों में एक समान योग्यता है तो भी उनकी आवश्यकताएँ एवं इच्छाएँ भिन्न–भिन्न होती हैं। पुरुषों और स्त्रियों की उपलब्धियों में अंतर का कारण यह है कि उनकी उत्पत्ति विभिन्न उद्देश्यों के लिए हुई लगती है। निर्णायक प्रश्न यह है कि "क्या पुरुषों और स्त्रियों में भिन्न–भिन्न प्रेरणाएँ उनकी जैविकता के आधार पर हैं?"

जैसा कि ऊपर चर्चा की जा चुकी हैं कि मानव जाति के इतिहास में प्रायः पुरुष का कार्य भोजन जुटाना तथा स्त्री का काम बच्चों की देखभाल एवं पालन पोषण करना रहा है। इसलिए पुरुष को भोजन के लिए बाहर जाना पड़ता है जिसके पास उपलब्धि की अनेक प्रेरणाएँ होती हैं। जबकि स्त्रियाँ बिना किसी अधिक अपेक्षा के गृह व्यवस्था में संतुष्ट रहती हैं।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में स्वयं के लिए उपलब्धि में कम रुचि होने के पीछे क्या उनकी संरचना में कुछ बात है?

हमारे देश में स्कूलों में परिणामों की जाँच इस सिद्धान्त की पुष्टि नहीं करती। प्रायः लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक अच्छी स्थिति प्राप्त करती है। परीक्षा निःसंदेह सफलता की इच्छा का अप्रत्यक्ष संकेत करती हैं।

"बच्चों में उपलब्धि प्रेरणा" में अनुसंधान से परिणाम निकलता है कि लड़कियाँ भी लड़कों की तरह उपलब्धि का उतना ही आनंद लेती हैं।

अनुभवमूलक अध्ययनों से हमें पता चलता है कि उपलब्धि के लिए प्रेरणा तथा असफलता का भय लड़कों और लड़कियों में एक समान होता है।

पुरुष और स्त्रियाँ योग्यता में समान हैं सफलता के लिए समान रूप से चिंतित होती हैं तथा व्यक्तिगत रूप से अपने मूल्यों के बारे में एक जैसा विचार रखती हैं। ये पुरुषों और स्त्रियों पर प्रेरणा के बारे में गंभीरता से किए गए अध्ययनों के परिणाम हैं। परन्तु जब कोई कार्य करना होता है तो पुरुष में स्त्री की अपेक्षा अधिक आत्मविश्वास होता है। इसका क्या कारण है?

इसके कारण को पुरुषों और स्त्रियों के बारे में अन्य अध्ययनों में तलाशा जाता है। जो लोग यह विश्वास करते हैं कि प्रत्येक चीज के बारे में वे किसी बाहरी ताकत से नियंत्रित होते हैं उन्हें बर्हिमुखी कहा जाता है (उनमें नियंत्रण का बाहरी स्थान होता है)। जो यह सोचते हैं कि जो कुछ भी होता है उसके लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं, उन्हें अंतर्मुखी कहा जाता है। (उनमें नियंत्रण का आंतरिक स्थान होता है)। बचपन में लड़कों और लड़कियों को समान संख्या को दो वर्गों में बाँटा गया। बाद में उनमें पाया गया कि पुरुष के अपेक्षा स्त्रियाँ बर्हिमुखी थीं।

स्त्रियाँ प्रायः बर्हिमुखी श्रेणी में आती हैं। जब उनसे अपनी राय देने के बारे में सर्वेक्षण किया जाता है तो उनमें पता नहीं' की प्रवृत्ति अधिक होती है। अन्य कारणों में से एक कारण यह होगा कि स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक आस्तिक हैं। कहा जाता है कि स्त्रियों में स्थिरता के पक्ष में मत देने की तथा पुरुषों में परिवर्तन के पक्ष में मत देने की अधिक प्रवृत्ति होती है।

सर्वव्यापक रूप से देखा जाने वाला यह अंतर भी पुरुष और स्त्रियों की जैविक संरचना के कारण नहीं है। जैसा कि हमने छोटे बच्चों में देखा है उनमें यह भिन्नता नहीं होती। तब इस भिन्नता का कारण अवश्य ही सामाजिक वातावरण है। स्त्रियों को एक प्रकार के ज्ञात विचार को स्वीकार करने के लिए विवश किया जाता है।

निश्चित रूप यह सदियों से स्त्रियों को ऐसा बनाने के दीर्घकालिक वातावरण का परिणाम रहा होगा। 100 वर्ष पूर्व आज के अति विकसित देशों तक में भी स्त्री के

12 बच्चे होना कोई असामान्य बात नहीं मानी जाती थी। जिसमें आधे ही प्रौढ़ होने तक जिंदा रह पाते थे। भारत के अनेक हिस्सों में आज भी यही स्थिति है। ऐसी स्थिति में स्त्री द्वारा प्रत्येक बच्चे को 18 महीने तक स्तनपान कराना पड़ता है। इस प्रकार उसे अपना संपूर्ण वयस्क जीवन बच्चों के पालन पोषण में व्यतीत करना पड़ता है। बच्चों की अधिक मृत्यु दर के चलते स्त्री के लिए अधिक बच्चे पैदा करना आवश्यक हो जाता है। जब पुरुष स्त्रियों के जीवन के प्रत्येक पहलू का नियंत्रण करते हैं तो स्त्रियों में अधीनस्थता की भावना पैदा होना स्वाभाविक ही है। मनु ने कहा था कि स्त्रियों को स्वतंत्रता का अधिकार नहीं है। लड़की के रूप में वह अपने पिता के नियंत्रण में, बड़ी होने पर पति के नियंत्रण में तथा वृद्धावस्था में उसे अपने बेटे के नियंत्रण में होना चाहिए।

स्त्रियाँ पुरुषों की बराबरी करने में सक्षम हैं। जैविक या मनोवैज्ञानिक रूप से ऐसा कुछ नहीं है जो स्त्रियों को वह कार्य करने से रोकते हैं जो पुरुष करते हैं या कर सकते हैं। विभिन्न कारणों से स्त्रियाँ पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा करना नहीं चाहतीं। कुछ स्त्रियों को पुरुषों से प्रतिस्पर्धा करने में असफलता का अनुभव होता है। लेकिन इस कारण स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अवसर प्रदान करने से वंचित नहीं किया जा सकता।

जब तक बच्चों के पालन–पोषण में पुरुष बराबर की भूमिका स्वीकार नहीं करते हैं, स्त्रियाँ पुरुषों के अधीनस्थ ही रहेगी। समग्र विकास के लिए बच्चों को माता तथा पिता दोनों की आवश्यकता होती है। विगत में किसी न किसी रूप में पिता की भूमिका की उपेक्षा होती थी।
ये निष्कर्ष हमें पुरुष और स्त्री की भिन्नताओं के बारे में कुछ रूढ़िवादी विचारों को बदलने का अवसर प्रदान करते हैं। याद रहे कि पुरुष स्त्री की अपेक्षा स्वयं के लिए कार्य करने में अधिक रुचि रखते हैं।

आज हम यह विश्वास करने के लिए विवश हैं कि:

- दोनों लिंग जीवन में उपलब्धि के लिए पूरी तरह प्रेरित दिखाई देते हैं;
- पुरुष अपने इच्छा पूर्ति के लिए अधिक जोखिम उठाने से नहीं हिचकते;
- प्रतिस्पर्धा लड़कों को लड़कियों की तुलना में अधिक उत्तेजित करती है;
- व्यक्तिगत रूप से पुरुषों और स्त्रियों में स्वयं के लिए समान रूप से उच्च विचार होते हैं;
- स्त्रियाँ समग्र जाति के रूप में अपने लिंग की भलाई के बारे में कम सोचती हैं;
- पुरुषों में स्त्रियों की अपेक्षा अपने कार्य की सफलता के बारे में अधिक आशा होती है,
- अधिकतर पुरुष यह विश्वास करते हैं कि वे अपने भाग्य के नियंत्रण में हैं;

फिर भी, यह निष्कर्ष कुछ अप्रामाणिक लगता है कि अपने व्यक्तित्व की संरचना के कारण पुरुष स्त्रियों की तुलना में अच्छा कार्य करते हैं। निष्कर्ष यह है कि व्यक्ति को किसी प्रकार का कार्य मिलने और करने की संभावना में व्यक्तित्व निर्धारक नहीं होता। इसके विपरीत व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्य का उसके व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोण पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

चूँकि अधिकांश स्त्रियाँ विवाह करती हैं और उनमें से अधिकांश के बच्चे होते हैं, अतः यह मान लेना ठीक लगता है कि पुरुषों द्वारा अधिक अच्छे कार्य प्राप्त करने का कारण यह है कि उनसे प्रतिस्पर्धा करने के लिए स्त्रियों के पास न तो समय बचता है और न ही ऊर्जा।

हमारी अधिकांश प्रवृत्ति इस संबंध में होंगी कि स्त्रियों के लिए कौन से कार्य उपयुक्त हैं और स्त्रियाँ कार्य से क्या प्राप्त करने की आशा रखती हैं। ऐसा लगता है कि यह इस तथ्य से प्रभावित है कि कहाँ पर अत्यधिक लोग कार्य करने वाले हैं।

बच्चों की संख्या सीमित रखने से स्थितियों में परिवर्तन हो रहा है। इससे स्त्रियाँ कार्य करने के लिए बाहर जाने योग्य हो गई हैं। विकसित देशों में अनेक स्त्रियाँ दोहरी भूमिका के साथ सफलतापूर्वक जीवन यापन कर रही हैं। लेकिन वहाँ पर भी मातृत्व की माँगों ने स्त्रियों की सफलता को निश्चत रूप से प्रभावित किया है।

यद्यपि हमारे देश में भी अनेक व्यावसायिक स्त्रियाँ दावा करती हैं कि मातृत्व से उन्हें आराम मिलता है और कार्य करने के लिए कम से कम मात्रा के हिसाब से उन्हें अधिक ऊर्जा मिलती है। लेकिन इससे इंकार नहीं किया जा सकता है कि यह स्त्रियों के लिए बहुत तनावकारी होता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) एक औसत पुरुष के मस्तिष्क का भार औसतन स्त्री के मस्तिष्क के भार से अधिक क्यों होता है?

....

....

....

....

....

....

2.8 काम वृत्ति में भिन्नताएँ

यह एक प्रचलित विश्वास है कि पुरुष स्त्रियों की तुलना में अधिक काम का आनंद प्राप्त करते हैं। यदि आप किसी भी सभ्यता के प्राचीन साहित्य का अध्ययन करें तो आपको स्त्रियों में अधिक कामुकता के बारे में अनेक कथाएँ मिल जाएँगी। यौन सुख के बारे में स्त्रियों की प्रवृत्तियों के प्रति नकारात्मक व्याख्या पश्चिम में यौनिकता के संबंध में प्रचलित नकारात्मक नजरिये का ही परिणाम रहा होगा। प्राचीन तावोइस्ट चिकित्सकों ने ऐसे परामर्श दिए जिससे पुरुष और स्त्री दोनों को बराबर यौन आनन्द/संतुष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाया। जेविस टलमड ने भी यही कहा था। इस विषय में कामसूत्र का दृष्टिकोण विश्व प्रसिद्ध है। सच्चाई क्या है?

क्या स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में यौन क्रियाओं में कम रुचि रखती हैं? इस प्रश्न के संदर्भ में किए गए अनेक अनुसंधानों का निष्कर्ष यह सिद्ध करता है कि यौन संतुष्टि के लिए स्त्रियों की शक्ति यदि पुरुष से अधिक नहीं तो कम से कम बराबर अवश्य ही है। इस संदर्भ में वास्तविक भिन्नता जो स्त्रियों पर आरोपित की जाती है उसे सांस्कृतिक रुढ़ियों के रूप में समझना चाहिए।

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दोनों में कोई अंतर नहीं है। हम जानते हैं कि पुरुष करोड़ों शुक्राणु पैदा कर सकता है जिसमें प्रत्येक शुक्राणु बच्चा पैदा करने में समर्थ होता है। जबकि स्त्रियाँ सीमित संख्या में अंडे पैदा करती हैं जो निषेचन के लिए महीने में एक बार उपलब्ध होते हैं। स्त्री के एक बार गर्भवती होने के बाद कम से कम अगले 9 महीने तक उसके पुनः प्रजनन का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

लेकिन अन्य जीवों से भिन्न मानव यौन क्रिया में एक अंतर यह है कि मानव के यौन संबंध पूरी तरह हारमोन परिवर्तनों और अन्य जैविक तथ्यों के अधीन नहीं होते।

कुछ लोगों में हारमोन परिवर्तन से यौन संबंधों पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। एक अध्ययन के अनुसार 6 प्रतिशत स्त्रियाँ अन्य दिनों की अपेक्षा अपने मासिक चक्र के मध्य में संभोग की अधिक इच्छा रखती हैं। कुछ प्रतिशत स्त्रियाँ मासिक चक्र के तुरंत बाद नियमित रूप से यौन संबंधों की तीव्र इच्छा रखती हैं।

अधिकांश स्त्रियों का अपने मासिक चक्र से संबंधित यौन क्रियाओं का कोई नियमित स्वरूप नहीं होता।

मादा यौन हारमोन और स्त्री के यौन जीवन के बीच भी कोई विशेष संबंध दिखाई नहीं देता। अंडाशय हटाने से स्त्री की यौन क्रियाओं पर सामान्यतः मामूली प्रभाव पड़ता है।

रजोधर्म की समाप्ति पर स्त्री के हारमोन स्तर में कमी आने से उसकी यौन इच्छा पर अल्प नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है। लेकिन चरम यौन–सुख की प्राप्ति की क्षमता प्रभावित नहीं होती है। इसका अर्थ यह है कि यौन गतिविधियों की कमी के पीछे जैविक तथ्यों के स्थान पर सामाजिक तथ्य अधिक जिम्मेदार हैं।

सिगमंड फ्रायड द्वारा प्रारंभ किए मानव जीवन की यौन प्रक्रिया को समझने में मनोविश्लेषक सोच ने काफी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उसने देखा कि पुरुष और स्त्री की यौन क्रियाओं में जो रुढ़िगत भिन्नताएँ हैं वे जैविक आवश्यकताओं के संदर्भ में मनोयौन विकास विशेषतः बांझपन, कुंठा और शिश्न को लेकर ईर्ष्या का परिणाम है। फ्रायड की प्रक्रिया की मुख्य आलोचना इसलिए की जाती है कि उन्होंने यौन की संरचना और उसके विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया है तथा सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्यों के प्रश्नों की अनदेखी की। हो सकता है कि वे अपने समय की रुढ़ियों से घिरे हों।

2.9 पुरुष, स्त्री और परिवार

पारम्परिक रूप से यह स्वीकार किया जाता रहा है कि समाज में पुरुष का स्थान घर से बाहर तथा स्त्री का स्थान घर के अंदर होता है। यहाँ प्रश्न उठता यह है कि क्या हमेशा ऐसा ही होता रहना चाहिए? सामान्य घटना क्रम में, बच्चे पैदा करने के लिए वैध इकाई वह परिवार है जिसकी संरचना कानूनी एवं सामाजिक रूप से स्वीकृत वैवाहिक संबंधों के आधार पर पुरुष और स्त्री द्वारा की जाती है। परिवार में पुरुष और स्त्री की भूमिका बदलती रहती है। एक विशिष्ट भारतीय परिवार में इन भूमिकाओं का वर्णन निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है।

क्र. सं.	स्थिति	पुरुष	स्त्री
1.	प्रारंभिक अवस्था	पति बनना तथा पत्नी के प्रति जिम्मेदार होना	गृहणी बनना; घरेलू निपुणताएँ सीखना; पति पर निर्भर रहना।
2.	बच्चे का जन्म होना	पिता बनना; पितृत्व में निपुण होना; जिम्मेदारी में वृद्धि; साथी की भूमिका में समायोजन	माता बनना; मातृत्व में निपुण होना; अनेक कार्यों पर रोक लगना; साथी की भूमिका में परिवर्तन
3.	बच्चे के जन्म के बाद	एक समय में अनेक बच्चों की जिम्मेदारी निभाना; बच्चों को शिक्षित करना	अनेक बच्चों के लिए मातृत्व में निपुण होना; घर से बाहर कुछ अतिरिक्त कार्य आरंभ करना; बच्चों को शिक्षित करना।
4.	बच्चों द्वारा अपने पैरों पर खड़ा होना	खाली घर में समायोजन करना; पुनः अकेली पत्नी के साथ रहने की कला सीखना; नाना/दादा बनना; बच्चों को बड़ा बनाना; सेवा निवृत्त होना तथा परिवार एवं घर में नए तरीके से रुचि लेना	खाली घर में समायोजन करना; बच्चों को बड़ा बनाने की कला सीखना; दादी/नानी की शूमिका सीखना; पुनः अकेले पति के साथ रहने की भूमिका निभाना।

5.	अंतिम स्थिति	विधुर होना, अकेले रहने की कला सीखना	विधवा होना, अकेले रहने की कला सीखना या बच्चों पर निर्भर होना

जनन और प्रजनन के बीच संपूर्ण अलगाव केवल औद्योगिक सभ्यताओं और भारत के अर्ध औद्योगिक शहरी क्षेत्रों में ही हैं। भारत के अन्य भागों में आज भी परिवार ही सामाजिक और व्यावसायिक के केन्द्र हैं। यहाँ स्त्रियों को खेतों में काम करना पड़ता है। पशु और मुर्गी पालन करना पड़ता है। घर में वस्तुएँ बनानी पड़ती हैं, भोजन बनाना और भंडारित करना पड़ता है। कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता है और आजीविका अर्जित करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त उन्हें बच्चे पैदा करने के साथ–साथ उनका पालन पोषण भी करना पड़ता है। भारत में आदर्श स्त्रियाँ घर तक सीमित रहती हैं। यह नियम श्रमिक वर्ग की स्त्रियों के लिए कभी भी लागू नहीं हुआ, जो युवा होने से पूर्व ही काम करना आरंभ कर देती हैं और दादी/नानी बनने के बाद भी निरंतर कार्य करती रहती हैं। यहाँ तक की कई स्थानों पर बाल श्रम कानून के विरुद्ध बच्चों को भयानक और खतरे वाले कार्यों में लगाया जाता है।

हमारे देश में भी स्थितियाँ धीरे–धीरे परिवर्तित हो रही हैं। मध्य और उच्च वर्ग की विवाहित स्त्रियाँ अधिक संख्या में घर से बाहर काम करने लगी हैं। खेलों, राजनीति और अन्य क्रियाओं में भी अधिक से अधिक स्त्रियाँ भाग लेने लगी हैं।

इन परिवर्तनों का बच्चों के स्वस्थ विकास पर क्या प्रभाव होगा?

समाजशास्त्रियों द्वारा बच्चों के विकास में माता–पिता की भूमिका का व्यापक अध्ययन किया गया है। इन सभी अध्ययनों का निष्कर्ष यह है कि कुछ सरोकार रखने वाले लोगों द्वारा देखभाल किए जाने पर अधिकांश बच्चों का सही विकास होता है। स्वाभाविक है कि यह भूमिका माता–पिता द्वारा ही निभाई जाती है। जब अभिभावकों को बाद में परिवार कल्याण के लिए अन्य कार्य करने पड़ते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों के जीवन में उनसे कुछ संबंधित व्यक्ति अवश्य

मौजूद हों। ऐसे समय में बड़े परिवार लाभ की स्थिति में होते हैं क्योंकि दादा–दादी आदि लोगों द्वारा बच्चों का ख्याल रखा जाता है। कोई आवश्यक नहीं कि संबंधित व्यक्ति हमेशा महिला ही हो। जहाँ तक बच्चों के विकास का संबंध है तो महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि वे बच्चों/शिशुओं की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हों और उन्हें पूरा करने वाले हो।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) हम यह क्यों कहते हैं कि भारत के अधिकांश हिस्सों में परिवार सामाजिक और व्यावसायिक दोनों प्रकार के केन्द्र हैं?

....

....

....

....

....

....

2.10 सारांश

इस इकाई में हमने पुरुषों और महिलाओं की प्रकृति को समझने का प्रयास किया है। हमने उनमें महत्त्वपूर्ण भिन्नताओं को देखा है। यह भी स्थापित किया गया है कि उनमें तथाकथित भिन्नताएँ सांस्कृतिक और सामाजिक रुढ़ियों का परिणाम हैं। यद्यपि जैविक रूप से वे भिन्न हैं, तो भी परिवार में समानता के आधार पर पुरुष और महिलाएँ एक जोड़ी बना सकते हैं। पुरुषों और महिलाओं के खिलाफ किसी भी प्रकार के भेदभाव का कोई आधार नहीं है।

2.11 शब्दावली

अनुकूलन : सामाजिक मूल्यों को विभिन्न तरीके से मन में बैठाने की प्रक्रिया। यहाँ यह शब्द व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक पवलोव द्वारा प्रयुक्त अर्थ में नहीं लिया गया है। यहाँ यह शब्द समाज द्वारा लोगों को प्रभावित करने के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

पारम्परिक : अंग्रेजी का ऑक्सफोर्ड शब्दकोश की परिभाषा के अनुसार "स्टिरियोटाइप ऐसी विशेषताओं का पूर्व कतिपय, मानकीकृत तथा अत्यधिक सरलीकरण प्रभाव है जो पूर्व कल्पना पर आधारित एक दृष्टिकोण है जो प्रायः समाज के सभी सदस्यों या कुछ सामाजिक समूहों द्वारा स्वीकृत होता है तथा व्यक्ति, परिस्थिति आदि को प्रतीक बना देता है।''

एड्रोजिनस : यह शब्द दो यूनानी शब्दों से बना है, एड्रोंस (पुरुष) और जिनस (स्त्री) यह शब्द ऐसे व्यक्ति का द्योतक है जिसके व्यक्तित्व में पुरुष और स्त्री दोनों की विशेषताएँ हों। यह हरमैफ्रोडाइट शब्द से भिन्न है। इस शब्द का

अर्थ वह व्यक्ति है जिसमें पुरुष और स्त्री दोनों की शारीरिक लैंगिक विशेषताएँ हों।

बौद्धिक जाँच : अर्जित ज्ञान की अपेक्षा बुद्धि को जाँचने के लिए बनाई गई।

बौद्धिक भागफल : बुद्धि परीक्षण द्वारा हासिल अंक जो किसी व्यक्ति की स्वाभाविक या औसत बुद्धि के अनुपात को दर्शाता है।

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर्चर, जे. एंड लॉयड, बी., (1982): सेक्स एंड जेंडर, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज।

गिलीगन, सी., (1982): इन ए डिफ्रेंट वॉइस, हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज, मैसाचुसेट्स।

कोलबर्ग, एल., (1966): "ए कोग्निटिव डेवलेपमेंटल एनालसिस ऑफ चिल्डन'स सेक्स रोलः कंस्पेट्स एंड एटीच्यूड" इन ई ई मेकोबी (संस्करण) द डेवलपमेंट ऑफ सेक्स डिफ्रेसिज, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, स्टेनफोर्ड।

मैकोबी, ई. ई. एंड जेकलिन, सी एन., (1984): साइक्लोजी ऑफ सेक्स डिफ्रेसिज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।

निकोल्सन, जे., (1980): मैन एंड वोमैन, हाऊ डिफ्रेंट आर दे, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।

सैनफोर्ड, जे., (1980): ए इंविजबल पार्टनर्स, बैटर यूओरसेल्फ बुक्स, पौलिस्ट प्रेस, माहवा, न्यू जर्सी।

टैवरिस, सी. एंड ओफिर, सी., (1977)ः द लोंगस्ट वार, हरकोर्ट ब्रास जेवनोवचि, न्यूयार्क।

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) तथ्य यह है कि पुरुष स्त्रियों की तुलना में रोगों के लिए अधिक सुभेद्य हैं। किसी नवजात लड़के की नवजात लड़की की तुलना में एक वर्ष की आयु से पहले ही मृत्यु की अधिक संभावना रहती है। उसे संक्रमण की जोखिम अधिक रहती है। पुरुषों को हार्ट अटैक तथा अल्सर की अधिक संभावना रहती है। स्त्रियों में पुरुषों की तलना में जननांगों के कैंसर से अधिक पीड़ित होने की तथा हारमोन संबंधी विभिन्न रोगों जैसे मधुमेह और थायराइड की विकृतियों से पीड़ित होने की संभावना रहती है। पुरुषों में कई अन्य प्रकार के गंभीर रोगों से पीड़ित होने की संभावना रहती है। पुरुषों में स्त्रियों की तुलना में फेफड़ों के कैंसर की चार गुणा, हृदय रोगों की तीन गुणा अधिक संभावना रहती है। उनमें आघातों और साँस संबंधी विकृतियों की भी अधिक संभावना बनी रहती है। अनेक सभ्यताओं में विशेषतः जहाँ अधिक गरीबी नहीं है वहाँ स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक समय तक जीवित रहती हैं। 1951 से 1960 की अवधि में पुरुषों की औसत आयु 41.9 तथा स्त्रियों की औसत आयु 40.6 वर्ष थी। यह सामान्य प्रवृत्ति का एक अवसाद ही माना जाता है जबकि विश्व के अधिकांश भागों में स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक समय तक जीवित रहती हैं।

बोध प्रश्न 2

1) सामान्यतया पुरुष का मस्तिष्क औसतन स्त्री के मस्तिष्क से चार औंस बड़ा होता है लेकिन इसका कारण यह है कि पुरुष स्त्री से भारी होता है। पुरुष

के मस्तिष्क का अधिक भार इसको सहारा देने वाले तंतुओं के कारण है न कि सोचने वाली सामग्री के कारण। मस्तिष्क के आकार का बुद्धि से कोई संबंध नहीं है।

बोध प्रश्न 3

1) उत्पादन और पुनरुत्पादन के बीच संपूर्ण अलगाव केवल औद्योगिक सभ्यताओं और भारत के अर्ध औद्योगिक शहरी क्षेत्रों में ही हैं। भारत के अन्य भागों में आज भी सामाजिक और व्यवसायिक दोनों प्रकार के केन्द्र हैं, यहाँ स्त्रियों को खेतों में काम करना पड़ता है। पशु और मुर्गी पालन करना पड़ता है। घर में वस्तुएँ बनानी पड़ती हैं, भोजन बनाना और भंडारित करना पड़ता है। कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता है और आजीविका अर्जित करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त उन्हें बच्चे पैदा करना और उनका पालन पोषण करना पड़ता है। भारत में आदर्श स्त्रियाँ घर तक सीमित रहती हैं। लेकिन यह नियम श्रमिक वर्ग के लिए कभी भी लागू नहीं हुआ। इस वर्ग की स्त्रियाँ युवा होने से पूर्व ही काम करना आरंभ कर देती हैं और दादी/नानी बनने के बाद तक निरंतर कार्य करती रहती हैं। यहाँ तक की कई स्थानों पर बाल श्रम कानून के विरुद्ध बच्चों को भयानक कार्यों में लगाया जाता है।

इकाई 3 यौन स्वास्थ्य शिक्षाः संकल्पना और उद्देश्य

*प्रो. थॉमस कलम एवं
डॉ. शुभाकांत महापात्र

रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 यौन स्वास्थ्य शिक्षा के परिचय का औचित्य

3.3 यौन स्वास्थ्य शिक्षा का संकल्पनात्मक ढाँचा

3.4 यौन स्वास्थ्य शिक्षा के व्यापक और विशिष्ट उद्देश्य

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको यौन स्वास्थ्य शिक्षा की संकल्पना से अवगत कराना तथा पारिवारिक जीवन शिक्षा से इसकी भिन्नता का मूल्यांकन करना है। इस संकल्पना के मुख्य और विशिष्ट उद्देश्यों का अध्ययन करने के बाद यह विषय और

---

* प्रो. थॉमस कलम, सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज, बंगलौर एवं डॉ. शुभाकांत महापात्र, एनओएस, नई दिल्ली।

अधिक स्पष्ट हो जाएगा। यह इकाई यौन स्वास्थ्य शिक्षा आरंभ करने के मूलाधार प्रस्तुत करेगी तथा वर्तमान संदर्भ में इसकी सार्थकता की भी चर्चा की जाएगी।

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आपः

- यौन स्वास्थ्य शिक्षा आरंभ करने के औचित्य को समझ सकेंगे;
- यौन स्वास्थ्य शिक्षा की आवश्यकता की गुण विवेचना कर सकेंगे;
- यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संकल्पनात्मक ढाँचे को जान सकेंगे; और
- वर्तमान संदर्भ में यौन स्वास्थ्य शिक्षा की सार्थकता तथा उद्देश्यों की पहचान कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

यौन और यौन स्वास्थ्य बहुत संवेदनशील विषय है। अभी भी इनको निषेध माना जाता है तथा इसीलिए इनकी सार्वजनिक चर्चा एवं शिक्षा सीमित है। प्रायः इस विषय की चर्चा को अभद्र माना जाता है, लेकिन बढ़ती व्यापक यौन समस्याओं के संदर्भ में यौन स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित ज्ञान एवं जानकारी युवाओं और वयस्कों को प्रदान करने की आवश्यकता को तेज़ी से अनुभव किया जा रहा है। एच.आई. वी./एड्स महामारी के आगमन से शिक्षा व्यवस्था के स्तर पर यह और भी जरूरी हो गया है कि इस महत्त्वपूर्ण समस्या का सफलतापूर्वक सामना किया जाए।

3.2 यौन स्वास्थ्य शिक्षा के परिचय का औचित्य

जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, (International Conference on Population and Development - ICPD) 1994 द्वारा एक कार्य योजना (पी.ओ. ए.) में युवाओं की कुछ विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान की गई है। पी.ओ.ए. की सिफारिश है कि युवाओं को प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में पर्याप्त जानकारी दी

जानी चाहिए ताकि वे दायित्वपूर्ण निर्णय करने के लिए आवश्यक परिपक्वता प्राप्त कर सकें।

किशोरों को जब अपनी लैंगिकता के बारे में पता चलता है तो उनके समक्ष अनेक शारीरिक एवं भावात्मक समस्याएँ आती हैं। देश में हो रहे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के कारण विवाह और परिवार रचना में विलम्ब हो रहा है। फलस्वरूप किशोरों के युवा होने और विवाह होने के बीच काफी अंतराल आ जाता है। इसलिए विवाह पूर्व यौन क्रियाओं में संलग्न होने की संभावना बढ़ जाती है। पारम्परिक प्रथा और पारिवारिक बंधनों द्वारा विवाह पूर्व जिन यौन क्रियाओं को निषेध किया गया है वह सामाजिक और आर्थिक विकास एवं उनके परिणामों को नजरअंदाज किया जा रहा है। इस तरह मीडिया द्वारा विस्थापन, यौन और हिंसा का प्रचार किए जाने से युवा प्रभावित होने लगते हैं।

मीडिया अस्वस्थ व्यवहार अपनाने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ प्रस्तुत करता है जबकि अस्वस्थ परम्पराओं को रोकने और वास्तविक ज्ञान प्रदान करने के लिए किसी प्रकार के प्रयास नहीं किए जाते हैं। एच.आई.वी./एड्स के संक्रमण, विवाह पूर्व गर्भधारण में वृद्धि तथा यौन. संक्रमित बीमारियों (एस.टी.डी.) में वृद्धि होने से हमारी शिक्षा प्रणाली में यौन स्वास्थ्य शिक्षा आरंभ करना अत्यंत आवश्यक हो गया।

बाल विवाह की परम्परा से लड़कियाँ शीघ्र माँ बन जाती हैं। इस प्रकार मातृ मृत्यु तथा उनके बच्चों के अस्वस्थ एवं मृत्यु स्तर में वृद्धि का जोखिम बढ़ जाता है। यह भी स्वीकृत तथ्य है कि बाल विवाह और शीघ्र माँ बनने से महिलाओं की स्थिति शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में बहुत कमज़ोर हो जाती हैं।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा आरंभ करने के कुछ विशिष्ट कारण निम्नलिखित हैं:

1) भारत युवाओं का देश है

1991 की जनगणना के अनुसार देश की 56.3 प्रतिशत आबादी 24 वर्ष की आयु से कम है। सर्वविदित है कि 15–19 तथा 21–24 वर्ष की आयु के युवाओं में व्यापक भावात्मक परिवर्तन होते हैं इसलिए इस आयु में उनका उचित देखभाल आवश्यक होता है। अनुमान है कि भारत में किशोरों की संख्या लगभग 20 करोड़ है। उनमें से कुछ विवाहित हैं, (विशेषतः लड़कियाँ) अनेक गैर–जिम्मेदार माता–पिता बन चुके हैं तथा शेष अपने विवाह का इंतजार कर रहे हैं। दुर्भाग्य से सूजाक, उपदंश जैसे यौन संचारी रोग और मादक द्रव्य दुरुपयोग उनमें व्यापक रूप से फैले हुए हैं। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति यह दावा करता है कि उसे अपने बारे में सब कुछ पता है परन्तु उनमें व्यापक अज्ञानता है। सच्चाई यह है कि उन्हें अपने शरीर के बारे में कुछ भी पता नहीं होता है। .

2) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा व्यक्ति को शरीर के बारे में मार्गदर्शन करती है**

आज का युवा मार्गदर्शन की इच्छा कर सकता है लेकिन उसे यह नहीं पता कि यह उसे कहाँ मिलेगा। समाज के सदस्यों के रूप में उनकी वर्तमान प्रवृत्तियाँ ही उनके भावी विकास जीवन कौशल शिक्षाः संकल्पना और उद्देश्य और उनकी उपयोगिता को निर्धारित करेंगी। वैवाहिक और पारिवारिक जीवन के दायित्वों को पूरी तरह से निभाने के लिए विशेषकर उस स्थिति में जब वे पारम्परिक रिवाजों एवं मूल्यों से भटक जाते हैं उन्हें सही तरह से तैयार करना एक महान कार्य है। इसलिए युवाओं को यौन और यौन क्रियाओं से संबंधित मामलों की सही एवं समुचित सूचना प्रदान करने की तुरंत आवश्यकता है। यह उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने एवं स्वस्थ वैवाहिक जीवन व्यतीत करने में काफी सहायता प्रदान करेगी।

3) **जीवन शैलियाँ**

यौन क्रियाओं से जुड़े मनोवेग व्यक्ति तथा समाज के कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। किसी व्यक्ति के व्यवहार को समझने से दंपत्तियों के बीच पारस्परिक क्रिया को समझना आसान हो जाता है। इससे यह पता लग जाता है कि परिवार कैसे व्यवहार करते हैं तथा समाज कैसे कार्य करता है। एच.आई.वी./एड्स जैसे घातक रोग के आगमन से लोगों के व्यवहार में विशेषतः स्वच्छंद संभोग और ड्रग व्यसन जैसे प्रचलनों के संदर्भ में परिवर्तन करने की तत्काल आवश्यकता है।

4) **अल्पायु में यौन क्रिया से अवगत होना**

विकसित संचार के इस युग में व्यक्ति के पास अनेक माध्यमों से अनंत सूचनाएँ पहुँच रही हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में किशोर बच्चे यौन संबंधित सही या गलत विभिन्न सूचनाओं से अवगत हो रहे हैं। लेकिन मुख्य समस्या यह है कि क्या सूचनाओं का उपयुक्त प्रयोग कर रहे हैं? इसलिए उन्हें शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से उपयुक्त शिक्षा व्यवस्थित रूप से प्रदान करने को आवश्यकता है।

5) **त्वरित सामाजिक परिवर्तन**

अभी तक हमारे देश में यौन व्यवहार कठोर मानकों एवं नैतिक नियमों से बंधा हुआ था। पुरुष और स्त्री के बीच मुक्त संप्रेषण एवं पारस्परिक वार्तालाप पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध थे। लेकिन आज तीव्र शहरीकरण और बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के कारण प्राचीन संयुक्त परिवार एवं विस्तारित परिवार व्यवस्था समाप्त हो रही है। किसी न किसी कारण से लोग लघु परिवार को अपना रहे हैं। परिणामस्वरूप युवाओं को परिवार के जिम्मेदार बड़े सदस्यों जैसे दादा/नाना व दादी/नानी आदि का मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। इसके लिए उन्हें किसी बाहरी संस्था की ओर देखना

पड़ता है जो उन्हें यौन एवं यौन संबंधी विषयों जैसे नाजुक मामलों में सूचना प्रदान कर सकें।

3.3 यौन स्वास्थ्य शिक्षा का संकल्पनात्मक ढाँचा

इस भाग में हम यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संकल्पनात्मक ढाँचे की चर्चा करेंगे। इससे पारिवारिक जीवन शिक्षा व यौन स्वास्थ्य शिक्षा के बीच अंतर को समझने में सहायता मिलेगी।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो छात्रों को मानव यौन क्रियाओं की जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक स्वरूपों की पर्याप्त एवं सही सूचना प्रदान करने के लिए बनाया गया है। इसका मुख्य बल व्यक्ति की आत्म जागरूकता, व्यैक्तिक संबंध, मानव यौन विकास, प्रजनन और यौन व्यवहार पर है। मानव यौन, यौन शिक्षा का मूल विषय है। यह संपूर्ण व्यक्तित्व का कार्य है जिसमें मानव का प्रजनन तंत्र व उसके कार्य, पुरुष या स्त्री होने के दृष्टिकोण तथा विपरीत लिंगी और समलिंगी सदस्यों के बीच यौन संबंध शामिल हैं। इसमें मानव के यौन व्यवहार के जैविक, मनोवैज्ञानिक, समाज सांस्कृतिक और नैतिक पक्षों को भी सम्मिलित किया गया है। यह शिक्षा लोगों की यौन क्रियाओं के विभिन्न पक्षों को समझने, यौन साथी के रूप में दूसरों का सम्मान करने तथा उनके व्यवहार के संदर्भ में उपयुक्त निर्णय करने में सहायता प्रदान करती है।

चिन्ताएँ

युवाओं को अपने शारीरिक स्वरूप के बारे में चिंतित होना सामान्य बात है। कुछ लोगों को महसूस हो सकता है कि वे अपने मित्रों की तुलना में अधिक लम्बे या नाटे हैं। कुछ लोग यह भी सोच सकते हैं कि वे आकर्षक नहीं हैं तथा इसीलिए अपने साथी समूह में उन्हें पसंद नहीं किया जाएगा। कोई किशोरी जो शीघ्र बड़ी हो गई, अपने बारे में सोच सकती है कि उसके स्तन उसकी हम उम्र सहेलियों से अधिक बड़े हैं। इसी प्रकार विलम्ब से बड़ी होने वाली किशोरी विपरीत धारणा

बना सकती है। विलम्ब से बढ़ने वाला किशोर शीघ्र बढ़ने वाले किशोर की तुलना में अपने लिए हीन भावना रख सकता है। ऐसे लड़कों को मित्र बनाने में कठिनाई आ सकती है।

युवाओं में अपनी बढ़ोतरी की गति और अपने स्वरूप के बारे में चिंतित होना सामान्य बात है। यह सत्य है कि वे किसी चीज, जो उन्हें औरों से अलग बनाती है, को लेकर विचलित हो सकते हैं। यद्यपि किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तन और बढ़ोतरी स्वाभाविक हैं तो भी इससे उन्हें चिंता होती है। बहरहाल, जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं ऐसी चिन्ताएँ समाप्त हो जाती हैं।

शारीरिक छवि का अर्थ है कि व्यक्ति अपने शारीरिक स्वरूप के बारे में कैसे सोचता है। यद्यपि आकार, स्वरूप, त्वचा का रंग, कद और शरीर की कुछ अन्य विशेषताएँ आनुवांशिक परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होती हैं। कोई व्यक्ति अपने शरीर की छवि को जो स्वरूप प्रदान करता है, वह कमोबेश समाज–सांस्कृतिक तत्वों से प्रभावित होता है। किशोरों के मन में कायम शरीर की अवधारणा पर अनुकरणीय व्यक्तित्वों का भी प्रभाव पड़ता है। किशोर बच्चे यदि कोई व्यक्ति अपने शरीर की छवि को जो स्वरूप प्रदान करता है, वह कमोबेश आदर्श पुरुष या स्त्री की छवि के अनुसार अपने शारीरिक अंगों को आकार एवं स्वरूप नहीं पाते तो वे चिंतित हो जाते हैं। युवाओं में यह जागृति लाना आवश्यक है कि आकर्षक व्यक्तित्व केवल शारीरिक स्वरूप पर ही निर्भर नहीं करता।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा के अंग

यौन स्वास्थ्य शिक्षा के मुख्य अंगों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैः

क) शारीरिक पक्ष

स्कूलों और कॉलेजों में जीव विज्ञान के पाठ्यक्रम में सामान्यतः मानव प्रजनन तंत्र की संरचना के बारे में बताया जाता है। शरीर संरचना विज्ञान

का अर्थ है मानव शरीर की संरचना का विज्ञान तथा उनके अंगों का अंतर्सम्बंध। यौन स्वास्थ्य शिक्षा में मानव प्रजनन तंत्र की संरचना अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। शरीर संरचना विज्ञान में प्रजनन तंत्र का अर्थ है उन प्रक्रियाओं और प्रणालियों का अध्ययन करना जिसके अनुसार प्रजनन तंत्र के अंग कार्य करते हैं। लड़कों और लड़कियों के लिए अपने शरीर और उसके कार्यों को जानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। गलत या अधूरी सूचना के परिणामस्वरूप अनावश्यक रूप से चिंता और गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, कई युवतियों को मासिक चक्र की उपयुक्त शिक्षा के अभाव में युवावस्था के आरंभ में रक्तस्राव होने से आघात लगता है। दूसरी तरफ अशिक्षित युवक भी स्वप्नदोष होने पर विचलित हो सकते हैं। स्वप्नदोष या वीर्य स्राव इस बात का संकेत है कि युवक गर्भाधान में सक्षम है। जबकि मासिक चक्र आरंभ होना इस बात का संकेत करता है कि युवती गर्भधारण करने में सक्षम है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि वे वयस्क हो रहे हैं। आइए, हम ऊपर वर्णित शारीरिक पक्ष के अंतर्गत कुछ उपविषयों की संक्षिप्त चर्चा करें।

1) **प्रजनन प्रणाली की संरचना और कार्य प्रणाली**: ये भाग पुरुष और महिला के विभिन्न प्रजनन अंगों और उनके कार्यों का वर्णन करते हैं। किशोर बच्चों को गर्भ, गर्भावस्था और गर्भ निरोध संबंधी पक्षों को समझने के लिए यह सूचना आवश्यक है। मासिक चक्र के संदर्भ की भी चर्चा की जाएगी। इस पाठ्यक्रम के खंड 3 में इन सभी का विस्तृत वर्णन किया गया है।

2) **यौवनारंभ में होने वाले शारीरिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन**: यौवनारंभ शरीर और भावात्मक परिवर्तनों का समय होता है। यौवन काल में किशोर बच्चे अपने शारीरिक परिवर्तनों के बारे में चिंतित हो जाते हैं। कुछ का विकास अपने मित्रों की तुलना में धीमी गति से और कुछ का तेज़ गति से हो सकता है। कुछ को अपनी वृद्धि भद्दा महसूस हो सकता है,

जबकि कुछ अपने शारीरिक परिवर्तनों से चिंतित हो सकते हैं और अपने बड़े होने के बारे में विरोधाभास महसूस कर सकते हैं। कुछ अन्य अपने बड़े होने पर गर्व और खुशी का अनुभव कर सकते हैं।

किशोर बच्चों के लिए यह समय आत्म विश्वास विकसित करने का भी समय है। अधिकांश लोगों के लिए. किशोरावस्था अत्यधिक तनाव भरी होती है। युवा अपनी शारीरिक छवि, अपने परिवार और मित्रों के साथ संबंधों के बारे में बहुत चिंतित रहते हैं। उनकी भ्रांति, चिंता और उत्सुकता उनकी आत्म योग्यता को प्रभावित करती है। व्यवहार आत्म छवि के अनुरूप होता है। एक सकारात्मक आत्म छवि वाला युवा सकारात्मक और अच्छी चीजों को पसंद करेगा। किशोरों में व्यापक परिवर्तन वाले इस समय के दौरान आत्म जागृति और आत्म स्वीकृति को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाने चाहिए।

3) **गर्भधारणा, गर्भावस्था और प्रसवः** इस उप विषय का उद्देश्य आपको गर्भधारणा, गर्भावस्था और प्रसव में शामिल प्रक्रिया की मूलभूत जानकारी से अवगत कराना है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इन विषयों के बारे में किशोरों को उचित शिक्षा प्रदान की जाए और इनका मार्गदर्शन किया जाए। अनेक देशों में किशोरियों के गर्भधारण की संख्या में वृद्धि हो रही है।

एशिया के अनेक देशों में बाल विवाह का प्रचलन है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। नवदम्पत्ति को यथाशीघ्र बच्चे पैदा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। अल्पायु में गर्भधारण से स्वास्थ्य, सामाजिक और मानसिक जोखिम बढ़ जाते हैं। जितनी कम उम्र की माँ होगी गर्भधारण की शारीरिक समस्याएँ उतनी ही गंभीर होगी, विकासशील देशों में 15 से 19 वर्ष की आयु वाली महिलाओं में गर्भधारण एवं प्रसव की समस्याएँ मृत्यु का मुख्य कारण है। गर्भधारण के जोखिमों की चर्चा करते समय छोटी किशोरियों एवं

बड़ी किशोरियों में अंतर करना महत्त्वपूर्ण है। किसी भी आयु की गर्भवती महिला की अच्छी प्रसव व प्रसव पूर्व अच्छी देखभाल तथा अच्छे पोषण की आवश्यकता होती है। यौन शिक्षा से संबंधित यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार सामान्य महिलाओं की तुलना में 15 वर्ष से कम आयु में गर्भवती होने वाली महिलाओं में मृत्यु दर 60 प्रतिशत अधिक है। 15 वर्ष से कम आयु की माताओं में विषरक्तता से मृत्यु की संभावना 3.5 गुना अधिक होती है।

किशोरियों के लिए गर्भधारण तथा प्रसव वास्तव में चिंता के विषय हैं। स्वास्थ्य जोखिमों के कारण वे प्रसव पूर्व तथा प्रसवोपरांत, गर्भावस्था के लक्षण की जाँच, भ्रूण की वृद्धि एवं विकास तथा प्रसव के बारे में जानना चाहेगीं।

ख) सामाजिक पक्ष

यह उप भाग मानव यौन क्रिया के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों की चर्चा करता है। इसमें यौन व्यवहार, बचपन और किशोरावस्था में यौन व्यवहार, प्यार, परस्पर मिलना, संबंध, किशोरावस्था में गर्भधारण तथा नैतिक नियमों जैसे विषय शामिल किए गए हैं।

यौन समायोजन परिपक्व व्यक्ति के संपूर्ण विकास का एक भाग है। यौनिक परिपक्वता व्यक्ति के जीवन में श्रेष्ठ गुणों यथा उदारता तथा रचनात्मकता को सामने लाती है। यौन क्रिया मूलभूत प्रेरणा है जिस पर दोनों लिंगों का संरक्षण एवं खुशी निर्भर करती है। यदि यौनिकता का पूर्ण विकास नहीं होता है तो इससे वृद्धि और विकास की संपूर्ण प्रक्रिया प्रभावित होने की संभावना रहती है। यौन भावनाओं के अत्यधिक दमन से व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं कार्य प्रणाली इस हद तक बाधित हो जाती है कि संभोग और यौन आनंद प्राप्त नहीं होता। दूसरी तरफ अत्यधिक सहवास की स्वतन्त्रता, प्यार और रतिक्रिया के सामान्य प्रदर्शन में इतना हस्तक्षेप कर सकती है कि

यौनिकता शैशवकाल के समान हो जाती है। यौन क्रिया के विकास में बाधा पड़ने से व्यैक्तिक और सामाजिक समायोजन में दिक्कत हो सकती है।

1) **बचपन और किशोरावस्था में यौन इच्छाएँ या यौन भावनाएँ:**

यौन प्रवृत्तियों का निर्माण बचपन के आरंभ से ही होने लगता है लेकिन युवावस्था आने तक यौन आवश्यकताएँ और भावनाएँ प्रकट नहीं होती। इस अवधि में युवकों एवं युवतियों में अनेक परिवर्तन होते हैं। लड़कों में युवावस्था स्वप्न दोष होने के साथ आरंभ होती है। लगभग इस समय युवक जनेन्द्रियों से संबंधित विशिष्ट प्रकार की यौन आवश्यकता अनुभव करने लगता है। इस तीव्र यौन उत्तेजना की परिणति हस्त मैथुन में होती है। दूसरी तरफ युवतियों की यौन इच्छा अंग विशेष में कम होती है और यौन क्रिया को रूमानी स्थितियों से जोड़ने की उनमें प्रवृत्ति होती है। यह जाग्रत यौन इच्छा नवयुवकों में थोड़ी बेचैनी पैदा करता है, जिसके चलते बुजुर्ग उन्हें बहुधा भिन्न और परेशान करने वाला समझते हैं। एक किशोर के स्वतंत्र विकास और अस्तित्व की ये प्रारंभिक संकेत हैं, जिसे घर और परिवार से भावनात्मक अलगाव के रूप में विश्लेषित किया जाता है। इस अवस्था के दौरान बुजुर्गों और युवकों में एक–दूसरे के प्रति समझदारी का अभाव सामान्य बात है।

2) **भावात्मक विकास:**

किशोरावस्था (13 से 19 वर्ष की आयु) को प्रायः गहन उत्तेजना और भावात्मक समस्या वाला समय माना जाता है। इस समय युवाओं में होने वाले शारीरिक परिवर्तन के कारण यौन भावनाएँ अचानक उमड़ सकती हैं। जब वे अपने हमउम्र तथा समान लिंगीय साथियों के साथ होते हैं तो यौन उत्तेजना का और अधिक अनुभव होता है। हो सकता है कि उस समय वे इन भावनाओं की यौन प्रवृत्ति को न पहचान पाएँ। हारमोनों में वृद्धि होने से

यौन विचार और उत्तेजना पैदा हो सकते है। फिर भी सामाजिक नियंत्रण के कारण इन रुचियों की वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं होती और वे दिवास्वप्न देखने लगते हैं। किशोरावस्था में स्वप्न दोष अनेक लड़कों में सामान्य बात है। शरीर में होने वाले परिवर्तनों के कारण किशोरावस्था में भावात्मक दबाव होना आम बात है। हारमोनों के असंतुलन के कारण चिड़चिड़ापन, बैचेनी और तनाव हो सकता है। बच्चों को इन मामलों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है। बहरहाल, अधिकांश किशोर किशोरियाँ स्वयं इन परिवर्तनों एवं विकास को संभाल लेते हैं। फिर भी यह आवश्यक है कि इस विषय में अभिभावकों, शिक्षकों एवं परिवार में जिम्मेदार बड़े सदस्यों द्वारा उचित मार्गदर्शन और सहारे के साथ प्रामाणिक ज्ञान प्रदान किया जाए। फिर भी घर में, स्कूल में तथा समाज में ऐसा स्वस्थ भावात्मक वातावरण प्रदान करना आवश्यक है जहाँ बच्चे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति आसानी से कर सकें।

3) व्यैक्तिक पहचानः

किशोरावस्था में प्रत्येक किशोर/किशोरी अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता/करती है। विकास की इस अवस्था के दौरान पहचान स्थापित करना एक धीमी प्रक्रिया है। यह संभव है कि किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन पहचान बनाने की प्रक्रिया में बाधा डालें। फिर भी जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं उनमें अपनी पहचान बनाने की दृढ़ भावना का विकास होता जाता है। अभिभावकों एवं शिक्षकों को चाहिए कि वे युवा बच्चों में आत्म विश्वास और स्वधारणा मजबूत करने, विकसित करने और बनाए रखने में उनकी सहायता करें। आत्म योग्यता की भावना को आत्मसम्मान की भावना के समान समझा जाता है। यह स्वयं के मानव होने तथा समाज के अंदर अपनी पहचान का अनुभव है। किसी व्यक्ति का सामाजिक विकास मुख्य रूप से इसी आत्म सम्मान पर आधारित होता है।

4) **सामाजिक संबंध:** युवा बच्चों के सामाजिक संबंधों की वृद्धि और विकास कमोबेश अपने बहन भाइयों, अभिभावकों, साथी समूहों तथा विपरीत लिंग के आसपास केन्द्रित होते हैं। सामाजिक संबंधों के आरंभिक अनुभव घर के आसपास ही केन्द्रित होते हैं। फिर भी बच्चे जब किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं तब उनके शरीर में होने वाले परिवर्तनों को उनके अंतर्वैयक्तिक संबंधों के स्वरूपों में देखे जा सकते हैं। अभिभावकों को अपने किशोर बच्चों पर निरंतर नियंत्रण रखना पड़ता है तथा उन्हें संरक्षण एवं मार्गदर्शन भी प्रदान करना पड़ता है। फिर भी बच्चे अभिभावकों से दूर हटकर परिवार में अपने आप अपना स्थान बनाने के लिए अपनी स्वतंत्रता पर बल देने का प्रयत्न करते हैं। बच्चों का अपने अभिभावकों के साथ आजादी की सीमा के बारे में मतभेद होना आम बात है। कुछ अभिभावक बच्चों के व्यवहार में इन परिवर्तनों को अपने अधिकारों के लिए चुनौती मानने लगते हैं। कुछ अभिभावक यह सोचने लगते हैं कि उनके बढ़ते बच्चे अनुभवी नहीं हैं इसलिए वे सही निर्णय नहीं कर सकते। इसलिए ऐसे अभिभावक अपने बच्चों के लिए तनाव और दबाव भी पैदा कर सकते हैं। सामाजिक विकास उन बच्चों के लिए आसान है जो यह समझते हैं कि उनके अभिभावक उनसे प्यार करते हैं तथा उन पर भरोसा करते हैं। किशोरों को अत्यधिक संरक्षण देने से उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने में अत्यधिक कठिनाई होती है।

समकक्ष साथी समूह काफी हद तक लोगों के साथ उचित पारस्परिक संबंध स्थापित करना सीखने में किशोरों को सहायता प्रदान करते हैं। यह भी देखा जाता है कि किशोर अपने साथी समूहों द्वारा स्वीकृत किए जाने की इच्छा रखते हैं। इस काल में दोनों लिंगों से मित्र बनाने की प्रवृत्ति होती है। यह ठीक है कि साथी समूह स्वतंत्र पहचान बनाने में सहायता करते हैं लेकिन कभी–कभी साथी–समूह का दबाव किशोरों में नकारात्मक भावनाएँ भी पैदा कर सकते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि जो लोग मादक

द्रव्य, शराब का सेवन करते हैं तथा किशोरावस्था में ही यौन क्रिया में संलग्न हो जाते हैं, वे साथी समूहों के दबाव या प्रेरणा से ऐसा करते हैं।

इसलिए किशोर बच्चों के लिए एक ऐसे उपयुक्त यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता है जो उन्हें स्वस्थ व्यवहार अपनाने में सक्षम बनाए।

5) विवाह पूर्व यौन संबंध एवं किशोरावस्था में गर्भधारणः

विवाह पूर्व यौन संबंधों के चलते कई तरह की खतरनाक समस्याओं में वृद्धि हुई है। आज किशोरों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यौन क्रियाएँ युवाओं में विशेष रूप से तथा सामान्यतः पूरे समाज में खुले आम हो गई है। लड़के और लड़कियाँ अल्पायु में ही यौन रूप से परिपक्व होने लगे हैं। शीघ्र मासिक चक्र आरंभ होने से किशोरियाँ अल्पायु में ही गर्भवती होने में सक्षम हो जाती हैं। कुछ देशों में किशोरों में शारीरिक संभोग आम होने से किशोरियों के गर्भवती होने की संख्या में वृद्धि हो रही हैं। सार्वजनिक मीडिया द्वारा यौन संदेशों को प्रचारित और प्रसारित किए जाने से भी यौन संबंधों में खुलापन को बढ़ावा दिया जा रहा है जबकि नैतिक शिक्षा प्रदान करने का कोई प्रयास नहीं किया जाता है। इन संदेशों का व्यक्ति और समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

किशोरावस्था में गर्भधारण से अनेक समस्याएँ पैदा होती हैं। अनेक सभ्यताओं में विवाहेत्तर गर्भ निषेध है। अत्यधिक सामाजिक दबाव से अवैध गर्भपात को बढ़ावा मिल सकता है और यह महिलाओं को आत्महत्या के लिए भी प्रेरित कर सकता है। अवैध संतानों को अनेक सामाजिक और कानूनी भेदभाव तथा आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यदि माता को विवाह के लिए विवश किया जाता है तो विवाह असफल होने की अत्यधिक संभावना बनी रहती है। जब पीढ़ी–दर–पीढ़ी महिलाओं

में शिक्षा का अभाव चलता जाता है तो उनके लिए रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं। इस प्रकार अपने जीवनयापन के लिए उन्हें दूसरों पर निरंतर निर्भर रहना पड़ता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से परिपक्व आयु में बच्चे पैदा करने की अपेक्षा अल्पायु में प्रजनन होने पर प्रायः शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार से हानि होती है।

ग) यौन भूमिकाएँ

यौन स्वास्थ्य शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यौन भूमिकाओं का अध्ययन करना महत्त्वपूर्ण है जैसे युवाओं को उनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों को समझने और सामना करने के योग्य बनाना। पारम्परिक सामाजिक संरचनाएँ भंग होने के कारण पुरुष और महिलाओं की बदलती भूमिकाएँ ऐसे ही सामाजिक परिवर्तनों का एक उदाहरण है। पारम्परिक यौन भूमिकाओं के अध्ययन से पता चलता है कि पुरुषों और महिलाओं में अपने पुरुष या महिला होने को लेकर प्रायः वही रुढ़िगत विशेषताएँ मौजूद हैं। पुरुष तार्किक, प्रभावी, स्वतंत्र, असंवेदनशील और आक्रामक है जबकि महिलाएँ, भावुक, संवेदनशील, पोषणकर्त्ता तथा किसी न किसी रूप में निर्भर एवं अधीनस्थ हैं। हालांकि यह कोई सार्वभौमिक नियम नहीं है, क्योंकि कुछ संस्कृतियों में महिलाएँ आक्रामक तथा प्रभावी होती हैं जबकि पुरुष भावुक तथा संवेदनशील होते हैं। यदि प्रत्येक लिंग की स्वभाविक प्रवृत्ति भिन्न–भिन्न है तो पता चलता है कि सभ्यता विशेष किसी लिंग पर विशेष बल देती है और किसी को छिपाती है। इसके अतिरिक्त साहित्य और सार्वजनिक मीडिया यौन भूमिकाओं में भिन्नताओं को पैदा करते हैं, मजबूत करते हैं तथा स्थायी बनाते हैं। अनेक विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि यौन संबंधी अधिकांश समस्याओं में पुरुष और महिलाओं की भूमिका को लेकर दबाव, चिंता और भ्रांति मुख्य विषय होते हैं। यौन क्रिया के लिए पुरुष का दबाव, बच्चे पाने के लिए महिला का दबाव, भावनाएँ छिपाने के

लिए पुरुष का दबाव तथा यौनिक हुए बिना यौनिक रूप से आकर्षित होने का महिला का दबाव आदि से अवांछित गर्भ, तलाक तथा यौन असंतुष्टि की घटनाओं में वृद्धि होती है। पारम्परिक यौन भूमिकाएँ लोगों की स्वाभाविक क्षमताओं तथा व्यक्तित्व के विकास में बाधा डालती हैं।

यौन भूमिकाओं के विषयों में विभिन्न सभ्यताओं पुरुषत्व तथा स्त्रीत्व, रुढियाँ तथा कर्त्तव्य अपेक्षाएँ शामिल हैं। इनके बारे में आप इस खंड की 'पुरुष और स्त्री को समंझना' वाली इकाई में विस्तृत रूप से अध्ययन कर सकते हैं।

घ) लिंगीय भूमिकाएँ

जेंडर (Gender) शब्द फ्रांसीसी शब्द जिनर (Gener) से निकला है जिसका अर्थ है सेक्स (यौन/लिंग)। सेक्स या लिंग का अर्थ पुरुष और महिला के बीच शारीरिक विशेषताएँ, क्रोमोजोम हारमोनों तथा अन्य लैंगिक विशेषताओं के रूप का दोहरा विभाजन है।

लिंग पुरुषों और महिलाओं की उन विशेषताओं का द्योतक है जो सामाजिक तत्वों द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। जब हम जीवन काल में लिंगीय भिन्नताओं की जाँच करते हैं तो हम जीवन पर सामाजिक प्रभावों की बात करते हैं, जैसे लड़कों को वरीयता देना तथा शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल, पोषण आदि के संदर्भो में लड़कियों के साथ भेदभाव करना। वास्तव में पुरुष और स्त्री के मध्य अंतर के तीन मुख्य स्रोत हैं (i) जैविक, (ii) समाज में पुरुष और स्त्रियों द्वारा निभाई जाने वाली पारम्परिक भूमिकाएँ, तथा (iii) समाज में विद्यमान विश्वास एवं धारणाएँ।

पुरुषों और स्त्रियों के बीच विद्यमान असमानताएँ तथा पुरुष के आगे स्त्री की अधीनस्थता लिंगीय और यौन भेदों के बीच अंतर का एक क्षेत्र है जो बिल्कुल स्पष्ट है। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि पुरुषों और महिलाओं के

लिंगीय कर्तव्य समाज द्वारा आबंटित हैं। वास्तव में ये सभी पारम्परिक कार्य मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि लिंगीय कार्य वे व्यवहार समूह हैं जिसका निर्णय पुरुष और स्त्री के लिए समाज द्वारा किया जाता है।

विभिन्न सभ्यताओं और समाजों में प्रचलित विभिन्न लिंगीय भूमिकाओं का विभिन्न आयु वर्गों के माध्यम से किए गए अध्ययन से पर्याप्त भिन्नताओं का पता लगता है। विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं में पुरुषों और महिलाओं के भिन्न–भिन्न कर्त्तव्य निर्धारित किए गए हैं। वास्तव में इतिहास से पता लगता है कि केवल कुछ अपवादों को छोड़कर जिनमें महिलाओं को अपने पिताओं से सिंहासन प्राप्त हुआ है, पुरुषों और महिलाओं के कर्त्तव्य तथा स्थिति कभी समान नहीं रही। पुरुषों का महत्त्व उसकी भूमिकाओं से अधिक रहा है। संक्षेप में पुरुषों को शक्तिशाली तथा महिलाओं को कमज़ोर माना जाता है।

पुरुषों को रोजी रोटी कमाने वाला, घर का मुखिया तथा विभिन्न क्षेत्रों में समाज का नेता माना जाता है। महिलाओं के लिए आबंटित कर्तव्यों में परिवार की वृद्धि करना, घर की देखभाल करना, आदर्श माता, पत्नी, बहन और पुत्री बनना तथा परिवार के पुरुष सदस्यों के कल्याण के लिए अपने हितों का बलिदान करना शामिल है।

लिंगीय भूमिकाओं पर पड़ने वाला मुख्य प्रभाव प्रत्येक समाज में पारम्परिक यौन भूमिकाओं से प्रभावित होता है। लिंग संबंधी लगभग सभी परम्पराएँ पुरुषों द्वारा बनाई गई हैं तो भी उन्हें स्वभाविक माना जाता है। वास्तव में पुरुष द्वारा निर्मित रुढ़ियाँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी संप्रेषित की जाती रही हैं जिससे महिलाओं के खिलाफ भेदभाव स्थाई हो गया है। बच्चे के पैदा होते ही लिंगीय आधारित कर्त्तव्य की पहचान और आबंटन आरंभ हो जाता है और यह प्रक्रिया बच्चे के वयस्क होने तक उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा

रहते हैं। अधिकांश पारम्परिक कार्य या संदेश बच्चों को बचपन में ही अभिभावकों, बहन भाइयों, साथियों, समाज और मीडिया द्वारा दिए जाने लगते हैं। वास्तव में दिए जाने वाले संदेशों में कुछ व्यवहार लड़कों के लिए स्वीकार्य होते हैं, लड़कियों के लिए नहीं; जबकि कुछ व्यवहार लड़कियों के लिए स्वीकार्य होते हैं, लड़कों के लिए नहीं। जैसे–जैसे बच्चा/बच्ची बड़ा होता/होती है वह अपने समलिंगी अभिभावक के अनुरूप बनने लगते हैं। लड़के अपने पिता के तथा लड़कियाँ अपनी माता के गुणों को आत्मसात करने लगते हैं/लगती हैं।

लिंगीय भूमिकाएँ किशोरों के व्यवहार को उनकी रचनात्मक अवधि के दौरान निरंतर प्रभावित करती रहती हैं। लिंगीय पहचान वाले विभिन्न प्रकार या विभिन्न कर्त्तव्य जैसे व्यवसाय भूमिकाएँ, घरेलू भूमिकाएँ संबंध वाली भूमिकाएँ, सामुदायिक नेतृत्व की भूमिकाएँ, वैवाहिक भूमिकाएँ तथा अभिभावक वाली भूमिकाएँ किशोरावस्था से ही विकसित होने लगती हैं। लिंगीय रूप से परिभाषित ऐसी भूमिकाओं के परिणामस्वरूप प्रवृत्तियाँ, व्यवहार और वैसे मूल्यों को बढ़ावा मिलता है जिसे किसी संस्कृति विशेष में औरतों और पुरुषों के लिए उचित समझा जाता है।

इसलिए बच्चों के रचनात्मक काल में उपयुक्त लिंगीय भूमिकाएँ विकसित करने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं के खिलाफ भेदभाव रोका जा सके और समाज में लिंगीय संबंधों के पारम्परिक रूपों में परिवर्तन कर सके। यदि हम एक ऐसा सभ्य समाज बनाना चाहते हैं जिसमें पुरुष और महिलाएँ सम्मान के साथ सार्थक रचनात्मक जीवन जी सके तो ऐसा करना आवश्यक है।

केवल यौन स्वास्थ्य शिक्षा का ईमानदारी से तैयार पाठ्यक्रम ही विद्यमान रुढ़िवादी लिंगीय भूमिकाओं को प्रभावित कर सकता है।

ङ) यौन संचारी रोग (एस. टी. डी.)

यौन संचारी रोगों (एस.टी. डीज.) एच.आई.वी./ए.आई.डी. एस. (एड्स) इत्यादि के प्रसार ने यौन स्वास्थ्य शिक्षा के अंतर्गत इसे महत्त्वपूर्ण विषय बना दिया है। विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि यौन रोग केवल सामाजिक समस्या ही नहीं है बल्कि यह एक भयंकर चिकित्सीय समस्या भी है। जिसकी रोकथाम हो सकती है तथा जिसका इलाज किया जा सकता है कुछ यौन रोग जो एच.आई.वी./एड्स से संबंधित हैं उनका इलाज नहीं है। अधिक जानकारी के लिए एच.आई.वी./एड्स के ऐच्छिक पाठ्यक्रम में देखें।

बोध प्रश्न 1

1) व्यैक्तिक पहचान पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

3.4 यौन स्वास्थ्य शिक्षा के व्यापक और विशिष्ट उद्देश्य

व्यापक यौन शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य बहुद्देशीय होना चाहिए। इनमें से कुछ नीचे दिए जा रहे हैंः

1) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम को व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।**

यौन स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के यौन व्यवहार का विकास करना चाहिए और यौन व्यवहार में संपूर्ण व्यक्तित्व एवं पहचान शामिल है। संक्षेप में यह यौन एवं यौन व्यवहार के शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक पहलुओं को शामिल करती है। यह सामाजिक मूल्य का निर्णय करने की शक्ति प्रदान करेगी।

2) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा का उद्देश्य यौन एवं यौन व्यवहार के बारे में तथ्यात्मक संपूर्ण और सच्ची सूचना प्रदान करना होना चाहिए।**

यौन शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्तियों में शारीरिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास के प्रति जागरूकता और अंतर्दृष्टि प्रदान करना होना चाहिए। यह शिक्षा उन भ्रांतियों, गलत सूचनाओं को दूर करने में मदद करेगी जिसका युवजन आपस में आदान–प्रदान करते हैं। यह किशोरों में होने वाले जैविक परिवर्तनों जैसे हस्तमैथुन, वीर्य स्राव, आवाज में बदलाव, स्तन का विकास, आदि के प्रति मानसिक रूप से तैयार करने में मदद करेगी।

3) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को उत्तरदायी व निर्णय लेने योग्य बनाएगी।**

यह बच्चों को सामाजिक संबंधों तथा उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक बनाएगी, साथ ही वैसे व्यवहारों को पहचानने योग्य बनाएगी जो उनके लिए घातक हों।

4) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को अपना तथा दूसरों का सम्मान करना/कराना सिखाने में सहायता करेगी।**

यह शिक्षा युवक और युवतियों को अपने लिंग के प्रति गर्व करने तथा विपरीत लिंग वालों के गुणों और क्षमताओं की प्रशंसा करना सिखाएगी।

5) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को मानव मूल्य आत्मसात करना सिखाएगी।**

यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को ऐसे नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के अवसर प्रदान करेगी जिससे व्यक्ति के निजी पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों में मार्गदर्शन होगा।

6) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा लड़कों और लड़कियों को यह समझने में सहायता करने वाली होनी चाहिए कि शरीर का प्रत्येक अंग एवं बढ़ोतरी का प्रत्येक चरण श्रेष्ठ है तथा उसका एक उद्देश्य है।**

यह मानव विकास के बारे में एक समग्र विचार प्रदान करेगी तथा यह साथ ही युवक/युवतियों में यौन के बारे में यह भावना पैदा करने में मदद करेगी कि यौन क्रिया सुन्दर, आनंददायक, सकारात्मक तथा जीवन का उत्पादक भाग है।

7) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा भावनात्मक स्थिरता प्रदान करने वाली होनी चाहिए।**

अनेक निपुणताओं और कुशलताओं के विकास द्वारा व्यक्ति भावनात्मक रूप से स्थिर भी हो जाएगा। ऐसा व्यक्ति तर्कसंगत निर्णय करने में सक्षम होगा तथा उसकी सोच न्यायसंगत होगा। इसे यौन स्वास्थ्य शिक्षा का अंतिम परिणाम समझा जाता है।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य

शारीरिक पक्ष

यौन स्वास्थ्य शिक्षा पुरुष और स्त्री के प्रजनन तंत्रों के विषय में जानकारी प्रदान करती है। यह पुरूष तथा स्त्री प्रजनन शरीर रचना शास्त्र के विभिन्न अंगों और उनके कार्यों को पहचान करती है। यौन स्वास्थ्य शिक्षा विद्यार्थियों को स्त्रियों में अण्डा बनने तथा मासिक धर्म से परिचित कराती है और इस सन्दर्भ में प्रयोग किए जाने वाले पारिभाषिक शब्दों और सिद्धांतों की जानकारी देती है। यह विद्यार्थियों को रजलावस्था के दौरान होने वाले शारीरिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को समझने योग्य बनाती है। यौन स्वास्थ्य शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी लड़के और लड़की के बीच शारीरिक परिवर्तनों और विशिष्टताओं की पहचान कर सकते हैं। वे शारीरिक संकेतों के प्रति भी जागरूक हो सकते हैं जो प्रजनन परिपक्वता को दर्शाते हैं। इस शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी की अपने शरीर के विभिन्न अंगों के प्रति अनुभूति से परिचित हो सकते हैं। यह सीखने वाले में आत्म–जागरुकता और आत्म–सम्मान की वृद्धि करती है।

सामाजिक पक्ष

यौन स्वास्थ्य शिक्षा किशोरों में यौनिक विकास के स्वाभाविक पहलुओं के बारे में और यौन संवेगों की अभिव्यक्ति के बारे में समझ का विकास करती है। यह यौन मनोवृत्तियों तथा व्यवहारों के विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न तथ्यों के बारे में जागरूक करती हैं। यह व्यक्ति को यौन संवेग को नियंत्रित और निर्देशित करने की आवश्यकता को स्वीकार करने की समझ का विकास करती हैं। जिससे कि यह व्यक्ति के जीवन में एक सकारात्मक शाक्ति बन सके। यौन शिक्षा प्राप्त करने पर एक व्यक्ति संपूर्ण यौन प्रवृत्तियों एवं व्यवहार के महत्व को समझ सकता है और यौन संवेग से जुड़े मुद्दों का मूल्यांकन कर सकता है।

एक विद्यार्थी बचपन से किशोरावस्था में लैंगिक विकास की समझ विकसित कर सकता है और लैंगिक और लैंगिक पूर्व यौन क्रिया के भेद को समझ करता है। शिक्षा के माध्यम से किशोरावस्था की विभिन्न समस्याओं पर विचार–विमर्श किया जा सकता है और स्पष्टीकरण अथवा सुझाव दिए जा सकते हैं। यह प्रेम की

संकल्पना, प्रेम के विभिन्न प्रकार तथा अपने अभिभावकों, मित्रों, महिला मित्रों/पुरूष मित्रों इत्यादि के प्रति प्रेम प्रकट करने के विभिन्न तरीकों की समझ प्रदान करती है।

यौंन स्वास्थ्य शिक्षा विश्व में प्रेमी युगल के मिलने की विभिन्न परम्पराओं को व्याख्यायित करती है, प्रेमी युगल के मिलन को परिभाषित करती है, प्रेमी युगल के मिलन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करती है प्रेमी युगल के आदर्श प्रेमी की पहचान करती है और प्रेमी युगल के मिलन में होने वाली परेशानियों का समाधान करती है। यह किशोरावस्था में गर्भधारणा की संख्या में वृद्धि और उसके परिणाम की समझ प्रदान करती है। यह किशोरावस्था में गर्भधारण और यौन व्यवहार के प्रति व्यक्ति की भावनाओं और प्रवृत्तियों की खोज करती है।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा आचरण या नैतिकता के नियमों के अर्थ की समझ प्रदान करती है। यह नैतिकता के सही या गलत का निर्णय करने में शामिल जटिलताओं और कठिनाइयों से अवगत कराती है। एक विद्यार्थी नैतिक व्यवहार से सम्बन्धित विद्यमान सिद्धान्तों और नैतिक व्यवहारों से अवगत हो सकता है। ऐसी शिक्षा और राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में नैतिकता की संकल्पना की समझ विकसित की जा सकती है जिसमें पुरानी तथा नई पीढ़ी के बीच भ्रान्ति और मतभेदों पर अधिक ध्यान दिया गया हो।

यौन भूमिकाएँ

यौन स्वास्थ्य शिक्षा पुरूष स्त्री एवं युवा वर्ग के प्रति प्रवृत्तियों को समझने एवं उनकी जांच का एक माध्यम है। विद्यार्थी परिवार एवं समाज में पुरूष, स्त्री एवं युवा वर्ग की भूमिकाओं की पहचान तथा उन पर चर्चा कर सकते हैं। वे परिवार और समाज में बच्चे का पालन पोषण सम्बन्धी रिवाजों से अवगत हो सकते हैं क्योंकि यौन भूमिका के विकास पर इसका प्रभाव पड़ता है।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा पुरूषों और स्त्रियों के लिए विकसित विभिन्न रूढ़ियों और पुरूष और स्त्रियों की विभिन्न भूमिकाओं की पहचान में सहायक है। यह यौन भूमिकाओं के रूप में संस्कृतियों के दृष्टिकोणों का वर्णन करती है। यह छात्रों की रूढ़िवादी यौन भूमिकाओं की जानकारी में वृद्धि करती है और उन्हें इन रूढ़ियों के साथ अपनी तुलना करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह पुरूषत्व और नारीत्व के बारे में जानकारी को और अधिक विकसित करने में छात्रों की मदद करती है, रूढिवादी यौन भूमिकाओं की जाँच तथा उनमें तुलना करती है।

सूचना प्रदाता भूमिकाएँ

यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रकार के यौन संचारी रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, प्रभाव, जाँच, उपचार एवं रोकथाम के बारे में जानकारी बढ़ाती है। यह चिकित्सीय समस्या के रूप में यौन संचारी रोगों के बारे में जानकारी बढ़ाती है एवं छात्रों को समझाती है कि सामाजिक एवं चिकित्सीय समस्या होने के कारण यौन संचारी रोगों का तुरंत इलाज करना चाहिए। (यूनेस्को प्रोप, 1998)।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) यौन स्वास्थ्य शिक्षा के मुख्य उद्देश्य बताइए।

....

....

....

....

....

....

3.5 सारांश

इस इकाई में हमने यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संकल्पनात्मक संरचना की चर्चा की है। चर्चा का मुख्य उद्देश्य यौन स्वास्थ्य शिक्षा तथा पारिवारिक जीवन शिक्षा में अंतर करना है। इसके मुख्य चार पहलू ये हैं – शारीरिक पहलू, सामाजिक पहलू, यौन भूमिका तथा यौन संचारी रोगों (एस.टी.डीज.) के बारे में ज्ञान/जानकारी। हमने यौन स्वारथ्य शिक्षा के विकारा के पीछे तार्किकता की भी चर्चा की है।

यह मुद्दा बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है क्योंकि भारत की आधी से अधिक आबादी अर्थात युवा हैं 24 वर्ष से कम है तथा यहाँ 20 करोड़ से अधिक किशोर किशोरियाँ हैं। यौन स्वास्थ्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का अर्थात् शारीरिक, भावात्मक और आध्यात्मिक विकास करना है। अन्य उद्देश्य हैं युवक और युवतियों को अपने लिंग पर गर्व का अनुभव कराना और विपरीत लिंग के गुणों और क्षमता की प्रशंसा कर उससे अवगत कराना है। अंत में इस इकाई का निष्कर्ष एक तालिका से होता है जिसमें 1994 में बैगकांक में हुए अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या और विकास सम्मेलन (यूनेस्को) द्वारा स्वीकृत यौन स्वास्थ्य शिक्षा के उद्देश्यों का वर्णन किया गया है।

3.6 शब्दावली

यौवनारंभ : किशोरावस्था के दौरान यौन परिपक्वता में पहुंचने वाली अवस्था जिसमें वह प्रजनन में सक्षम हो।

रजः स्राव : यौन रूप से परिपक्व गर्भवती महिला के गर्भाशय से प्रति माह रजोनिवृत्ति तक रक्त एवं अन्य पदार्थ स्रावित होने की प्रक्रिया।

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

यूनेस्को (1988), सेक्स एजुकेशन, खंड II, प्रोप, बैंगकॉक।

मुले, डी. एस. (1993), एडोलसेंस एजुकेशन, रिपोर्ट ऑफ नेशनल सेमिनार, एन सी ई . आर टी, नई दिल्ली।

जवाहरलाल पांडे, सरोज बी यादव एंड कानून के साधु (1999), एडोलसेंस एजुकेशन इन स्कूल्स, पार्ट 1 टू 5, एन सी ई आर टी, नई दिल्ली।

थॉमस ग्रेशियस (1995), एड्स एंड फैमिली एजुकेशन, रावत पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) किशोरावस्था में प्रत्येक किशोर/किशोरी अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता/करती है। विकास की इस अवस्था के दौरान पहचान स्थापित करना एक धीमी प्रक्रिया है। यह संभव है कि किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन पहचान बनाने की प्रक्रिया में बाधा डालें। फिर भी जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं उनमें अपनी पहचान बनाने की दृढ़ भावना का विकास होता जाता है। अभिभावकों एवं शिक्षकों को युवा बच्चों में आत्म विश्वास और स्वधारणा मजबूत करने, विकसित करने और बनाए रखने में सहायता और सहारा देने की आवश्यकता होती है। आत्म योग्यता की भावना को आत्मसम्मान की भावना के समान पहचाना जाता है। यह

स्वयं को मानव होने तथा समाज के बीच होने का अनभव कराता है। किसी व्यक्ति का सामाजिक विकास मुख्य रूप से आत्म विश्वास पर आधारित होता है।

बोध प्रश्न 2

1) **यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम को व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।**

यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति के यौन व्यवहार के विकास की खोज करना चाहिए और यौन व्यवहार में संपूर्ण व्यक्तित्व एवं पहचान शामिल है। संक्षेप में यह यौन एवं यौन व्यवहार के शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक पहलुओं को शामिल करती है। यह सामाजिक मूल्य का निर्णय करने की भी योग्यता प्रदान करती है।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा का उद्देश्य यौन एवं यौन व्यवहार के बारे में तथ्यात्मक संपूर्ण और सच्ची सूचना प्रदान करना होना चाहिए।

यौन शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्तियों में शारीरिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास के प्रति जागरूकता फैलाने में सहायता प्रदान करना है। साथ ही यह शिक्षा उन भ्रांतियों को दूर करने में मदद करेगी जो उनके लिए हानिकारक हैं। यह किशोरों में होने वाले जैविक परिवर्तनों जैसे हस्तमैथुन, वीर्य स्राव, आवाज में बदलाव, स्तन का विकास, आदि के प्रति मानसिक रूप से तैयार करने में मदद करेगी।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को उत्तरदायी व निर्णय लेने में सक्षम बनाएगी।

यह बच्चों को सामाजिक संबंधों तथा उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक बनाएगी, साथ ही वैसे व्यवहारों को पहचानने योग्य बनाएगी जो उनके लिए घातक हों।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को अपना तथा दूसरों का सम्मान करना/कराना सिखाने में सहायता करेगी।

यह शिक्षा युवक और युवतियों को अपने लिंग पर गर्व करने तथा विपरीत लिंग वालों के गुणों और क्षमताओं की प्रशंसा करना सिखाएगी।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को मानव मूल्य आत्मसात करना सिखाएगी।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा बच्चों को ऐसे नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के अवसर प्रदान करेगी जिससे व्यक्ति का वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों में मार्गदर्शन होगा।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा लड़कों और लड़कियों को यह समझने में सहायता करने वाली होनी चाहिए कि शरीर का प्रत्येक अंग एवं बढ़ोतरी का प्रत्येक चरण श्रेष्ठ है तथा उसका एक उद्देश्य है।

यह मानव विकास के बारे में एक समग्र विचार प्रदान करेगी तथा यह साथ ही युवा बच्चों में यौन के बारे में ऐसी भावना पैदा करने में मदद करेगी कि यौन आनंददायक, सकारात्मक तथा जीवन का रचनात्मक भाग है।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा भावात्म्क रूप से स्थिरता प्रदान करने वाली होनी चाहिए।

आपसी अनेक निपुणताओं और कुशलताओं का विकास द्वारा व्यक्ति भावात्मक रूप से स्थिर हो जाता है। ऐसा व्यक्ति तर्कसंगत निर्णय करने में सक्षम होता है। इसे यौन स्वास्थ्य शिक्षा का चरम परिणाम समझा जाता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 यौन स्वास्थ्य शिक्षाः घर, विद्यालय और मीडिया की भूमिका

*प्रो. थॉमस कलम एवं

डॉ. शुभाकांत महापात्र

रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 यौन स्वास्थ्य शिक्षा का महत्त्व

4.3 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में घर की भूमिका

4.4 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में विद्यालय और अध्यापकों की भूमिका

4.5 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में जनसंचार माध्यम की भूमिका

4.6 विद्यालय प्रशासन द्वारा अपनाए जाने वाले निवारक उपाय

4.7 सारांश

4.8 शब्दावली

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

* प्रो. थॉमस कलम, सेंट जोहन्स मेडिकल कॉलेज, बंगलौर एवं डॉ. शुभाकांत महापात्र, एनओएस, नई दिल्ली।

इस इकाई का उद्देश्य यौन स्वास्थ्य शिक्षा के महत्त्व से आपको परिचित कराना है। इस इकाई में यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में लगी विभिन्न संस्थाओं – जैसे परिवार विद्यालय, जनसंचार माध्यम की भूमिका पर भी विचार किया जाएगा।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- यौन स्वास्थ्य शिक्षा के महत्त्व को पहचान पाएँगे; .
- यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में घर की भूमिका का विश्लेषण कर पाएँगे;
- यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में विद्यालयों की प्रासंगिकता का उल्लेख कर पाएँगे; और
- यौन स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में मीडिया की भूमिका को बता सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

भारत में अभी भी सामाजिक रूप से यौन शिक्षा के महत्त्व को समझा जाना बाकी है। माता पिता व अध्यापक अक्सर किशोरों को यौन शिक्षा प्रदान करने से हिचकिचाते हैं। यह प्रवृत्ति किशोरों को यौन क्रिया के बारे में उचित समझ, उनके विकासशील व्यक्तित्व का दायित्व, और विपरीत लिंग वाले व्यक्तियों के साथ व्यवहार के तरीकों के बारे में जानने में रुकावट पैदा करती है। लड़के और लड़कियों में अपने शरीर, कामेंद्रियों और उसके कार्यों के बारे में अपेक्षित जानकारी का अभाव है। इसी तरह, उनके लिए विपरीत लिंगी के जनन तंत्र की जानकारी होना भी जरूरी है। यौवनारंभ के दौरान, किशोरों में जब शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं तब उनमें भावात्मक और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ विकसित होती हैं। जब ये बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे होते हैं, संक्रमण की उस अवस्था में, उनकी न केवल कामेंद्रियों में परिवर्तन होते हैं प्रत्युतर विपरीत लिंगी के प्रति उनकी भावनाओं में भी परिवर्तन होते हैं। अतः इस

अवस्था में समुचित ज्ञान और परामर्श उन्हें जीवन में सर्वोत्तम ढंग से तालमेल स्थापित करने और समाज में सफलतापूर्वक जीवन जीने के लिए तैयार कर सकता है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य निष्पादन में विभिन्न संस्थाओं और एजेंसियों जैसे घर, विद्यालय और जनसंचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

4.2 यौन स्वास्थ्य शिक्षा का महत्त्व

आधुनिक समाज में शिक्षा में यौन स्वास्थ्य के महत्त्व पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर नहीं दिया जा सकता है। यौन क्रिया से संबंधित भ्रांतियों से पैदा होने वाली समस्याओं के बारे में जनसंख्या और अनुभव हमें लगातार बताते रहते हैं। बहुत से लोग खासकर किशोर और युवा, यौन क्या है और यह समाज एवं व्यक्ति के लिए क्या काम करता है, के प्रति भ्रमित हैं।

ऐसी बहुत सी गलत धारणाएँ इसलिए पैदा होती हैं क्योंकि लोग अविश्वसनीय सूत्रों से गलत सूचना ले लेते हैं। हमउम्र समूह, मित्र, जनसंचार माध्यम तथा यहाँ तक कि माता–पिता ऐसे ही कुछ स्रोत हैं। कभी–कभी ये सूत्र स्वयं यौन के विषय में अनभिज्ञ होते हैं और गलत जानकारी रखते हैं। कुछ सूत्रों के निहित स्वार्थ होते हैं। जनसंचार माध्यम के विषय में यह सच्चाई है कि वह यौन को भड़काऊ बनाकर और बढ़ा–चढ़ाकर बेचता है। दर्शकों और पाठकों को आकर्षित करने के लिए यौन का चित्रण और उससे जुड़ी अन्य गतिविधियों (मिलन, दोस्ती, सह–आवास, संबंध और शादी) का निर्माण कर दिया जाता है। इन पहलुओं के पक्ष–विपक्ष में तमाम टी.वी. सीरियल और बहसें देखी जा सकती हैं।

यह भी मानना होगा कि आधुनिक समाज की कुछ विशेषताओं ने मीडिया को यौन संबंधी मुद्दों पर मनमानी की छूट दे दी है। ये विशेषताएँ हैं: आधुनिक समाज में पुरुषों एवं स्त्रियों की विलंब से शादी, शहरीकरण, शिक्षा और रोजगार के लिए स्थानांतरण, रोजगार के क्षेत्र में स्त्रियों की बढ़ती संख्या इत्यादि।

आधुनिक समाज के मूल्य–तंत्रों में भी परिवर्तन हुआ है। समूहों (परिवार, समाज) का व्यक्ति पर से नियंत्रण कम हो रहा है और व्यक्ति को स्वतंत्रता और स्वायत्तता मिल गई है। किसी के निजी जीवन में बिना उसकी स्वीकृति के दखलअंदाजी की अपेक्षा नहीं की जाती है।

पश्चिमी समाजों में हो रही हलचलों से भारतीय समाज भी अछूता नहीं रहा है। 1960 के दशक में, यौन के प्रति पश्चिमी समाजों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। कुछ पर्यवेक्षकों ने इसे क्रांति की संज्ञा दी है। मानव शरीर को पवित्र वस्तु (मुख्यतः धर्मगुरुओं द्वारा) के बजाय आनन्ददायी यंत्र के रूप में तेज़ी से देखा जाने लगा। सामाजिक नियमों और मूल्यों को जो शरीर के ऊपर नियंत्रण रखते थे, गलत और अवांछनीय समझा जाने लगा। व्यक्ति अपने शरीर के किसी भी तरह के प्रयोग के लिए स्वतंत्र माने जाने लगा। उस समय और बाद में, इन विचारों का विरोध भी हुआ लेकिन उसका प्रभाव आज भी हैं। हमें इन पहलुओं पर विचार करने की जरूरत है क्योंकि एच.आई.वी./एड्स तथा एस.टी.डी. विकराल रूप धारण करता जा रहा है। यौन स्वास्थ्य शिक्षा वही करने की एक राह है।

परिवार में

निश्चित रूप से इस 'क्रांति' ने वैवाहिक जीवन से यौन को और परिवार से स्नेह को पृथक कर दिया है। इसने प्रजनन की दांपत्य क्रिया और एकल आयाम से यौन क्रिया को अलग कर दिया है। इस प्रकार इसने गर्भपात, गर्भनिरोध और स्वच्छंद संभोग के पक्ष में पृष्ठभूमि भी तैयार कर दी है।

इस तथाकथित 'क्रांति' के राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। अब यह एक विचारधारा बन गई जिसने यौन को सारी परम्पराओं के बंधन को तोड़ने वाला एक हथियार बना दिया है। यह सभी माता–पिता और बच्चे के बीच के संबंधों, परिवार–संस्था और सामाजिक तंत्र सभी पर कहर बनकर टूट पड़ा और इसने एक सर्वाधिक उत्तेजक व्यक्तिवाद स्थापित कर दिया है।

सामाजिक संचार के साधन, अश्लील साहित्य, इंटरनेट, कामोद्दीपक टेलीफोनों ने युवाओं में ऐसी भावनाएँ भर दी हैं कि ये स्वयं को एक वस्तु मानने लगे हैं और यहाँ तक कि वे अपने को विलगाव करने वाली व्यवस्था का विषय भी नहीं मानते।

विद्यालयों में

यौन शिक्षा विद्यालयों या अन्य शैक्षिक संघों के सार्थक हस्तक्षेप को अलग नहीं करता। लेकिन यह प्रबल पुनर्संकेत देता है कि सर्वप्रथम कारक के रूप में माता–पिता या पारिवारिक माहौल का कोई विकल्प नहीं है।

इस बात को समझते हुए कि बच्चे और युवा यौन के मिथ्या निरूपण बुरी तरह प्रभावित हैं

और आसानी से धोखा खाने वाला यह वर्ग प्रायः यौन दुरुपयोग का सर्वाधिक शिकार हैं। कुछ देशों के अधिकारियों का विश्वास है कि उन्होंने विद्यालयों में यौन शिक्षा का पक्ष लेकर समस्याओं को सुलझा लिया है। लेकिन अक्सर ऐसी शिक्षा मात्र स्वास्थ्य/सफाई की सूचना तक ही सीमित होती है। मानव और परिवार परिप्रेक्ष्य को सेक्स से बाहर रखा जाता है और सेक्स को बिल्कुल निजी और व्यक्तिगत समझा जाता है।

व्यक्ति में

व्यक्ति के सम्पूर्ण आयाम और शरीर में काम भावना अंतर्निहित है। इसमें व्यक्ति का पूर्ण शारीरिक विकास और आध्यात्मिक जीवन सम्मिलित होता है जो भविष्य में उसके सभी सामाजिक संबंधों में प्रतिबिंबित होता है।

दूसरे शब्दों में लैंगिकता व्यक्ति की वृद्धि तथा विपरीत लिंगी के प्रति उसके पूरक संबंधों, और दूसरे के लिए स्वयं को मुक्त रूप से समर्पित करने में निहित है।

समाज में

एक दूसरी सोच समाज की है जिसकी खुद अपनी जाँच की पूर्ण जरूरत है। समाज को अपने आपसे निरंतर यह प्रश्न पूछते रहना चाहिए कि वे भविष्य के लिए किस प्रकार के युवा, महिलाएँ और पुरुषों को पसंद करेंगे। उसे स्वयं से यह प्रश्न भी पूछना चाहिए कि वह लैंगिकता तथा व्यक्ति और समाज के बीच किसी प्रकार का संबंध यह देखना चाहेगा। उसे यह भी देखना होगा कि यौन क्रिया वैध है या उसे बिना किसी उचित समझदारी के आनंद पाने के लिए एक साधारण कार्य के रूप में बर्दाश्त करना होगा।

यौन शिक्षा प्रारंभ करने का उचित समय कौन–सा है?

विभिन्न अवस्थाओं और स्तरों पर यौन–शिक्षा प्रदान करने का सवाल काफी लम्बे समय से विवाद का विषय रहा है तथापि, भारतीय समाज के रुढ़िवादी स्थापन में यह विषय निश्चित शैक्षिक अनुक्रिया प्राप्त करने में असफल रहा है। हमारे देश में, विद्यालय और कॉलेजों में यौन शिक्षा न केवल अनुपस्थित है बल्कि मेडिकल संस्थाओं की पाठ्यचर्या में भी इस विषय की पूर्णतः अवहेलना की गई है। परिणामस्वरूप लैंगिक विकार की प्रायः गलत व्याख्या की जाती है और किसी भी अपक्रिया के लिए नियमित उपचार के नुस्खे में आयुर्वेदिक यौनवर्धक टॉनिकों या दवाइयों की भरमार होती है। ऐसा प्रतीत होता है, यह फायदे की बजाए ज्यादा नुकसान पहुँचा रहा है। डॉक्टर के नुस्खों के संदर्भ में और तत्पश्चात् इन यौनवर्धक टॉनिकों के प्रयोग में यह कहा जा सकता है कि यह और कुछ नहीं बल्कि अज्ञानी द्वारा निराश व्यक्ति का शोषण है।

जहाँ तक यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने की समुचित अवधि का संबंध है, इस प्रक्रिया को प्रारंभ करने का कोई नियम या निश्चित समय नहीं होता। अनौपचारिक यौन शिक्षा किसी भी समय प्रारंभ की जा सकती है, जब उत्सुकता बच्चों को वैचारिक अवदानों को ग्रहण करने योग्य बनाती है। जैसे–जैसे वह बड़ा

होता जाता है उसे वैसे–वैसे आयु के अनुरूप ज्ञान प्रदान करना सही दृष्टिकोण है। अनजाने में ही माता–पिता बच्चे को जन्म के समय से यौन शिक्षा प्रदान करना प्रारंभ कर देते हैं। शैशवास्था के दौरान माता–पिता जिस प्रकार बच्चे को उठाते, स्पर्श करते और देखभाल करते हैं और जिस तरह से वे बच्चे के साथ और आपस में व्यवहार करते हैं, उससे भावी लैंगिक (काम) व्यवहार की नींव बच्चे में पड़ जाती है। बच्चों को उनकी लैंगिकता का आभास कराने और उसे स्नेह देने से बच्चे के यौन और यौनिकता के प्रति रवैये पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार के प्रतिदिन के संवाद और आपसी मेलजोल या आदान–प्रदान के तरीके बच्चे का आत्मविश्वास, शरीर के प्रति धारणा, लिंग भूमिका और परिवार भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं और बच्चे की स्नेह, घनिष्ठता और आदान–प्रदान की क्षमता को रूप प्रदान करते हैं।

जहाँ तक औपचारिक शिक्षा का प्रश्न है, इस क्षेत्र में साधारण तरीके से छुट–पुट प्रयास किए गए है। शिक्षाविद्, यौन स्वास्थ्य शिक्षा की पाठ्यचर्या में प्रासंगिक विषयवस्तु और उचित कार्यनीतियाँ सम्मिलित करने का सचेत प्रयास कर रहे हैं। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुवर्ती के रूप में एन सी ई आर टी द्वारा प्रतिपादित प्रारंभिक और सैकेंडरी शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में कहा गया है कि पाठ्यचर्या आयोजक को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए ताकि किशोरों में 'सेक्स और विपरीत सेक्स वाले सदस्यों के प्रति अनुकूल प्रवृत्ति' पैदा करने के लिए समुचित प्रावधान किए जा सकें। हम जानते हैं कि यौन शिक्षा के कुछ पहलू विशेष रूप से शारीरिक घटक, पाठ्यक्रम में शामिल किए गए हैं और एन सी ई आर टी और कुछ राज्य सरकारों द्वारा ऐसी पाठ्य पुस्तकें तैयार की गई हैं।

आइए, यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में घर, विद्यालय और जनसंचार माध्यम द्वारा निष्पादित विशिष्ट भूमिकाओं पर चर्चा करें। यहाँ हम युवकों को यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने की विधियों और अवस्थाओं पर भी चर्चा करेंगे।

4.3 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में घर की भूमिका

बच्चे सर्वप्रथम अपने माता–पिता और परिवार के सदस्यों के रवैया और व्यवहारों को देखकर काम भावना तथा नैतिकताओं के बारे में सीखते हैं। स्नेह और प्रेमपूर्ण संबंधों का महत्त्व प्रायः बच्चों के व्यावहारिक प्रतिरूपों को देखकर समझा जाता है। जो उनके भावनात्मक और यौन विकास के विभिन्न चरणों में अभिव्यक्त होते हैं। चूँकि, बाल्यावस्था के दौरान अधिकांश विकास अनुकरण द्वारा अर्जित किया जाता है, अतः माता–पिता को अपनी भूमिकाओं और बच्चों को सकारात्मक यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के प्रति सजग रहना महत्त्वपूर्ण है। सबसे उपयुक्त रवैया यह है कि बच्चों को बताया जाए कि यौन कोई गंदी वास्तविकता नहीं है और इन क्षेत्रों में उत्सुकता होना एक आम बात है और यह विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है। स्नेहपूर्ण और सहायक रवैये के बिना बच्चे इस भय से माता–पिता से यौन संबंधी प्रश्न पूछने में हिचकचाएँगे कि कही उनके माता–पिता उन्हें सच्चाई से अवगत कराने में असुविधा का अनुभव न करें। यदि माता–पिता यौन पर उनके साथ सामान्य रूप से बातचीत करते हैं जो वे बच्चों में स्वस्थ अभिभावक बालक संबंध को संवर्धित कर पाएँगे। बच्चों को यौन संबंधित आतंकित करने वाली कहानियाँ नहीं सुनानी चाहिए। यौन को यौन संचारित रोगों, एड्स, किशोरावस्था में गर्भधारण, बलात्कार अश्लील साहित्य और बाल–उत्पीड़न से संबंधित नहीं करना चाहिए। लेकिन इसके साथ–साथ अभिभावकों द्वारा बच्चों को उपयुक्त समस्याओं के खतरों के बारे में भी निस्संदेह सावधान करना चाहिए। अभिभावकों को यह स्वीकार करना चाहिए और बताना चाहिए कि यौन अपनी जगह एक अच्छी और उपयुक्त चीज है। यदि बच्चे यौन संबंधी प्रश्न पूछे तो माता–पिता को हड़बड़ाना या घबराना नहीं चाहिए और बच्चों को अपने खुद के शरीर का अन्वेषण करते देख परेशान नहीं होना चाहिए।

बच्चों को सकारात्मक यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के प्रति सजग रहना महत्त्वपूर्ण है। सबसे उपयुक्त रवैया यह है कि बच्चों को बताया जाए कि यौन कोई गंदी वास्तविकता नहीं है और इन क्षेत्रों में उत्सुकता होना एक आम बात है और यह विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है। स्नेहपूर्ण और सहायक रवैये के बिना

बच्चे इस भय से माता–पिता से यौन संबंधी प्रश्न पूछने में हिचकचाएँगे कि कही उनके माता–पिता उन्हें सच्चाई से अवगत कराने में असुविधा का अनुभव न करें। यदि माता–पिता यौन पर उनके साथ सामान्य रूप से बातचीत करते हैं जो वे बच्चों में स्वस्थ अभिभावक बालक संबंध को संवर्धित कर पाएँगे।

अक्सर माता–पिता डरते हैं कि यौन और यौन के बारे में जानकारी बच्चे के लिए हानिप्रद हो सकती हैं। हालाँकि हम आदिम आदर्शों वाले रुढ़िवादी समाज में पैदा हुए हैं लेकिन बच्चों को कालक्रमिक और मानसिक आयु के अनुरूप वैज्ञानिक ज्ञान बच्चे के लिए इतना हानिकारक नहीं होगा जितनी कि इसके बारे में अज्ञानता हो सकती है।

जैसे–जैसे बच्चा बढ़ता है वैसे–वैसे उसे सरल ढंग से मूलभूत जानकारी देना बेहतर है। संभवतः बच्चा आपसे ऐसे प्रश्न पूछे जिनमें नैतिक मूल्यों के साथ अंतर्द्वन्द्व हो। बच्चों की जिज्ञासाओं की पूर्ति के लिए समझदारी और सकारात्मक स्पष्टीकरण और उनकी उत्सुकताओं को संतुष्ट करने से यौन अज्ञानता के खतरे और परिणाम कम हो जाएँगे। यदि माता–पिता कभी–कभी बच्चे की क्षमता या समझदारी के स्तर से अधिक जानकारी भी प्रदान करते हैं तो इससे भावी संवाद के द्वार खुले रहेंगे। माता–पिता का रवैया बहुत महत्त्व रखता है। कभी–कभी बच्चों की उत्सुकता और दिलचस्पी अतार्किक लग सकते हैं लेकिन हो सकता है उसके लिए वे वास्तविक हों। अतः अभिभावकों को न तो उनकी बात अनसुनी करनी चाहिए और न ही उनकी उपेक्षा करनी चाहिए। इससे अभिभावक बालक संबंध में स्वस्थ संवाद समाप्त या बंद भी हो सकता है। यदि बच्चा इस तथ्य के प्रति आश्वस्त हो जाए कि उसके माता–पिता का उसकी जिज्ञासाओं के प्रति सख्त या विरोधी रवैया नहीं है तो वह उन्हें वृद्धि और मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में भी देख सकता/सकती है।

यौन स्वास्थ्य शिक्षा महत्त्वपूर्ण है लेकिन इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि यह शिक्षा बाल्यावस्था से प्रदान किया जाए। यौवनारंभ से पहले ही बच्चों को यह

महसूस करना जरूरी है कि वे अपने माता–पिता के साथ यौन और लैंगिकता के बारे में खुले ढंग से बातचीत कर सकते हैं। क्योंकि तब तक उनमें भी काम–भावना विकसित हो चुकी होती है। ऐसा लगता है कि लैंगिक अभिविन्यास केवल यौवनारंभ के समय की उपज है, लेकिन वस्तुतः वे बाल्यावस्था में ही सुस्थापित लैंगिक लोकाचार के प्रतिबिंब होते हैं और बाद की अवधि में ज्यादा परिवर्तित नहीं होते। ये सब इसलिए घटित होता है क्योंकि इस अवस्था में अधिकांश शिक्षण शैली राय देने वाली होती है। जॉन हापकिंस विश्वविद्यालय के जॉन मनी की धारणा है कि यह पुनः मानने योग्य सच यह है कि यूँ ही चुने गए किसी किशोर को परपीड़क या नास्तिक या कुछ और बनने के लिए प्रभावित या प्रशिक्षित करना असंभव है।

मानक निर्धारण (Norm Setting)

लड़के और लड़कियाँ अपेक्षित नैतिकताएँ और रीति–रिवाज अपने माता–पिता, परिवार और नजदीकी सगे–संबंधियों से ही सीखना शुरू करते हैं। अलग–अलग संस्कृतियों द्वारा भिन्न भिन्न रूप से अधिक या कम कठोर नियम लागू किए जाते हैं। युवा और वयस्क व्यक्ति परिवार में या रिश्तेदारों के साथ किन–किन विषयों पर बातचीत कर सकते हैं इस पर हमेशा पाबंदी लगाई जाती है। वयस्क केवल इसलिए कि वह मानकों को स्थापित करने वाला है युवा व्यक्ति के साथ आपसी विश्वास का वार्तालाप नहीं कर सकता। युवा व्यक्ति की भी अपनी कुछ निजी गुप्त बातें, भावनाएँ और विचार होते हैं जिन्हें वे अपने घनिष्ठ वयस्क संबंधियों को भी नहीं बताना चाहते। उदाहरण के लिए, पश्चिमी देशों के अनेक समाजों में दूसरों के प्रति आकर्षण और लैंगिकता को युवा व्यक्ति का पथ प्रदर्शक माना जाता है जो उसके लिए कुछ कम या अधिक स्वतंत्र जीवन की रचना करता है।

इन्हीं कारणों से अभिभावकों को लैंगिकता और स्नेहपूर्ण संबंधों पर सूचना के सर्वोत्तम संप्रेषक नहीं माना जाता। कई माता–पिता लैंगिकता के बारे में एक सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति के रूप में अपने बच्चों के साथ बातचीत नहीं करना

चाहते क्योंकि उन्हें समुचित जानकारी नहीं होती है। परन्तु इससे नैतिकता की भावना को उत्पन्न करने में माता–पिता की प्रमुख भूमिका समाप्त नहीं होती। युवा व्यक्तियों को व्यवहार प्रतिमानों को प्रभावित करने वाली अंतहीन चुनौतियों के इस युग में माता–पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे खुद भी सीखें और युवा लोगों को सही शिक्षा प्रदान करें।

माता–पिता का दायित्व

यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख दायित्व माता–पिता का है। तेज़ी से परिवर्तनशील बाजार अर्थव्यवस्था, लोगों का प्रवास, शैक्षिक अवसरों और विविध जनसंचार माध्यमों की बढ़ी हुई पहुँच के साथ, निश्चित रूप से जिम्मेदार व्यक्ति की एक अतिरिक्त आवश्यकता है और वह है यौन और लैंगिकता के मुद्दों को संबोधित करना। व्यवहार स्वरूप से जुड़ी सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ, एच.आई.वी./एस.टी.डी. और पदार्थ दुरुपयोग के लिए किशोरों व छोटे बच्चों को यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने की माँग पहले से कहीं ज्यादा औचित्य रखती है। चूंकि विकास काल से ही बच्चों को उचित यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करना माता–पिता का मुख्य दायित्व है, अतः आइए इस क्षेत्र में माता–पिता के दायित्वों को नीचे संक्षेप में सूचीबद्ध करें। माता–पिता कोः

- बच्चों के मन में यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध में सकारात्मक रवैया पैदा करना चाहिए;
- बच्चों में बढ़ती हुई अस्वास्थ्यकर जीवन–शैली को प्रबल रूप से हतोत्साहित करना चाहिए;
- घर में ऐसा माहौल उपलब्ध कराना चाहिए जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक हो;
- बच्चों में स्वस्थ जीवन–शैलियों के प्रोत्साहन के लिए विद्यालय के प्रयासों में सहयोग दें;

- विद्यालय अध्यापकों से संबंध बनाएँ और यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के उनके प्रयासों में सहयोग दें;
- यौन–संबंधी विषयों पर विद्यालय द्वारा बताए गए निर्देशों और मार्गदर्शन का पालन करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें;
- स्वस्थ वातावरण को बनाए रखने में समुदाय के प्रयासों में सहयोग दें;
- बच्चों को यौन स्वास्थ्य के सकारात्मक पहलुओं के संबंध में विचारों का आदान–प्रदान करने के अवसर देना और घर में ऐसे विषयों पर माता–पिता व बच्चों के बीच चर्चा करने को प्रोत्साहित करना;
- बच्चों की प्रेरणा के लिए 'आदर्श मानक' के रूप में काम करना।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में माता–पिता के दायित्वों को सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

....

....

....

4.4 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में विद्यालय और अध्यापकों की भूमिका

स्कूल कार्यक्रमों में अक्सर शिक्षक छात्रों के सामने खड़े होकर उनके शरीर के कार्यों, कैसा व्यवहार करें, कैसा व्यवहार न करें, और जनसांख्यिकीय मुद्दों पर भाषण देते हैं। यह शिक्षा अक्सर गैर–महत्त्वपूर्ण अतिरिक्त विषय मानी जाती हैं जिसे विद्यालय पाठ्यचर्या में शामिल नहीं किया जाता। इसलिए नियमित रूप से इसे भुला दिया जाता है और हल्के ढंग से लिया जाता है क्योंकि सत्रांत परीक्षा में शामिल किए जाने वाले अन्य विषय पढ़ाने हेतु पर्याप्त समय आबंटित करना पड़ता है।

अधिक सफल विद्यालय आधारित कार्यक्रमों में विद्यार्थियों को सहभागी और अन्वेषणात्मक गतिविधियों में व्यस्त रखने की माँग होती है जहाँ वे अपने विचारों और भयों के बारे में स्पष्ट रूप से चर्चा करने के लिए सक्रिय रूप से भाग ले सकें। सहभागी विमर्श द्वारा छात्रों को प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी उनकी प्रवृत्तियों और मूल्यों को स्पष्ट करने में सहायता की जा सकती है। वे ऐसे जीवन कौशल सीख सकते हैं जो उन्हें ऐसे व्यवहारों को बनाए रखने में सहायक होंगे। जो उनके वांछित यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य के परिणामों को स्पष्ट करने में सहायक होंगे तथा कौशल विकास और सेवाओं तक प्रभावी पहुँच के समय आत्मविश्वास, ज़ोरदार ढंग से अपनी बात कहने, लिंगभेद और सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों को भी स्पष्ट करेंगे।

किसी भी विद्यालय के यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम में उत्तरदायित्व की संकल्पना से परिचित कराना महत्त्वपूर्ण है ताकि व्यक्तिगत स्वास्थ्य को एक गौरव की वस्तु बनाया जा सके। विद्यालय, अध्यापक, अभिभावक और समुदाय से बच्चे से इस उत्तरदायित्व की आशा की जानी चाहिए। बहुत से लोग बच्चों को विद्यालय में यौन स्वास्थ्य शिक्षा देने की भूमिका को कम महत्त्व देते हैं। वे यह तर्क देने का

प्रयास करते हैं कि वह उत्तरदायित्व स्वास्थ्य की देखभाल करने वाले पेशेवरों पर छोड़ देना चाहिए। किसी कठिन परिस्थिति में जब व्यक्ति कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेना चाहता, ऐसे में उसके लिए सबसे अच्छा तरीका अपनी जिम्मेदारी को किसी तीसरे व्यक्ति या पार्टी पर डाल देना होता है। लेकिन अब समय आ गया है जब विद्यालय में हमारे छोटे बच्चों को यौन स्वास्थ्य पर पर्याप्त जानकारी व सूचना प्रदान करने के मुद्दे पर गंभीर रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि वे आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सकें।

यह सत्य है कि यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करना मुख्य रूप से परिवार या घर की जिम्मेदारी है। विद्यालय परिवार का ही एक विस्तार है क्योंकि बारह वर्ष की उम्र तक बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सचेत होकर नियोजित पाठ्यचर्या के जरिए लैंगिक स्वास्थ्य के विषय पर समुचित व पर्याप्त जानकारी प्रदान करने में विद्यालय की अद्वितीय भूमिका होती है। बच्चा जो परिवार से ग्रहण करता है उस प्रशिक्षण को आगे बढ़ाना विद्यालय का दायित्व है।

बच्चे के जीवन में महत्त्व रखने वाले व्यक्ति जैसे हमउम्र साथी, अध्यापक और अन्य व्यक्ति जो सामाजिक परिस्थिति में विभिन्न भूमिकाएं निभाते हैं। विद्यालय उन सभी के साथ मिलनसार या मैत्रीपूर्ण होने के पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। अतः विद्यालय में कई अवसर उपलब्ध होते हैं।

यह प्रश्न कोई फिर से उठा सकता है कि यौन स्वास्थ्य शिक्षा स्कूलों में दी जानी चाहिए अथवा नहीं। चूंकि अधिकांश माता–पिता को यौन और यौन क्रिया की पर्याप्त जानकारी नहीं होती। अतः इस विषय पर किशोरों को शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए विद्यालय ही सही विकल्प है। देशभर के समस्त माता–पिता को शिक्षित करने की बजाए बच्चों को यौन स्वास्थ्य के विषय पढ़ाने के लिए अध्यापक को इस ओर उन्मुख करना ज्यादा आसान है। इसके अतिरिक्त, यदि माता–पिता को सजग किया भी जाए तो भी शायद माता–पिता किशोरों के प्रश्न

का संतोषजनक उत्तर दे पाने की स्थिति में नहीं होंगे। फिर बच्चों में अपने माता–पिता की बजाए अन्य व्यक्ति से सूचना खोजने की प्रवृत्ति होती है।

आइए, संक्षेप में यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध में बच्चे तथा विद्यालय के अध्यापक की जिम्मेदारी की चर्चा करें।

बच्चे का दायित्व

विद्यालय में यौन स्वास्थ्य के बारे में शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख दायित्व बच्चे का है। यदि विद्यालय प्रबंधन और विद्यालय अध्यापक यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में रुचि रखते हैं और कौशल अर्जित करने के लिए अवसर प्रदान करते हैं तब भी यदि बच्चा सहयोग नहीं देता तो सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने की आशा नहीं की जा सकती। संक्षेप में बच्चे का दायित्व है:

- सकारात्मक स्वास्थ्य की महत्ता को समझना सीखना;
- यौन स्वास्थ्य की पर्याप्त व सही ज्ञान सीखने के महत्त्व और जरूरत को समझना;
- यह जानना कि अस्वास्थ्यकर जीवन शैलियों से आपको व अन्य लोगों को रोग व दुख हो सकते हैं;
- विद्यालय में प्रारंभ की गई यौन स्वास्थ्य शिक्षा की प्रक्रिया में भाग लेना;
- विद्यालय और समुदाय से प्राप्त यौन स्वास्थ्य शिक्षा संदेशों को घर में बतलाना और माता–पिता या परिवार के जिम्मेदार वयस्कों से स्पष्टीकरण माँगना;
- विद्यालय और घर पर अनुकूल जीवन शैली को बनाए रखना;
- विद्यालय के प्राधिकारियों को ऐसा अच्छा माहौल निर्मित करने और बनाए रखने में सहायता करना जहाँ यौन क्रिया और यौन स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील विषयों पर शिक्षा देना संभव हो;

- अभिभावकों को घर का स्वस्थ माहौल सृजित करने और बनाए रखने में सहायता करना जहाँ इस विषय पर स्वस्थ विचार–विमर्श संभव हो।

विद्यालय और अध्यापक का उत्तरदायित्व

ऐसा विश्वास है कि सु–निर्मित पाठ्यचर्या और सेवा–कार्यनीतियाँ विद्यालय में सकारात्मक यौन स्वास्थ्य शिक्षा कायक्रम को राह दिखा सकती हैं। लेकिन इस प्रक्रिया को वास्तविक बनाना, एक दायित्व बन जाता है और विभिन्न भागीदारों अर्थात् बच्चों और विद्यालय के अध्यापकों को इस दायित्व का भार उठाना चाहिए। आइए, यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में विद्यालय और विद्यालय के अध्यापकों के दायित्व को संक्षेप में सूचीबद्ध करें। उनकी जिम्मेदारी हैः

- यह सुनिश्चित करना कि सकारात्मक यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय का माहौल प्रेरक हो;
- सभी अध्यापक यौन स्वास्थ्य शिक्षा संबंधी शिक्षण सामग्री की विषयवस्तु और संचरण के तरीकों को आत्मसात् करने योग्य हों;
- प्रेरक माहौल में विद्यालय के बच्चों को यौन स्वास्थ्य संबंधी संदेश देने के लिए अध्यापकों को शक्ति सम्पन्न करना;
- शिक्षक को सकारात्मक स्वास्थ्य के एक आदर्श नायक के रूप में विकसित करना चाहिए ताकि बच्चे उनका अनुसरण करें।
- बच्चों के साथ अधिक से अधिक संपर्क बढ़ाना ताकि उनके स्वास्थ्य संबंधित आचरण का अवलोकन करते हुए उन्हें सकारात्मक ढंग से प्रभावित किया जा सके।
- किसी भी प्रकार के स्वार्थी समूहों द्वारा विद्यार्थियों में हानिकारक जीवन शैलियाँ प्रारंभ कराने के सभी प्रयासों का विरोध करना;
- जहाँ संभव हो, विद्यार्थियों को प्रोत्साहन प्रदान करके उनमें सकारात्मक व्यवहारों को प्रेरित करना;

- विद्यालयों में सकारात्मक यौन स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जो एजेंसियाँ अवसर प्रदान कर रही हैं उन सभी को सहयोग देना।

कार्यनीतियाँ

विद्यालय स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में कई कार्यनीतियाँ अपनाई गई हैं। कार्यनीति का चयन पूरी तरह स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों पर आधारित होता है। प्रायः कई कार्यनीतियों को मिला–जुलाकर प्रयोग में लाया जा सकता है। ये कार्यनीतियाँ निम्नलिखित प्रकार की हो सकती हैंः

1) पर्यवेक्षी कार्यनीति

इसके अंतर्गत स्वास्थ्य पेशेवरों का हस्तक्षेप शामिल होता है जो समय–समय पर वार्षिक मेडिकल जाँच, परामर्श और मार्गदर्शन के जरिए स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने का दायित्व लेते हैं। विद्यालय के अध्यापकों और बच्चों को मात्र अनुदेशों का अनिवार्यतः पालन करना होता है। इसमें सहभागिता का तत्व पूर्णतः अनुपस्थित होता है। इस कार्यनीति के जरिए माता–पिता या अध्यापक किसी भी तरह की दक्षता नहीं प्राप्त कर पाते। तथापि, मात्र नियामक अपेक्षाओं की संतुष्टि के लिए यह पर्याप्त है।

2) निरोधक स्वास्थ्य कार्यक्रम

इसके अंतर्गत टीकाकरण, जल को विसंक्रमित करने, कूड़ा–करकट के सुरक्षित निपटान, व्यक्तिगत सफाई पर भाषण, स्वास्थ्य संबंधी पोस्टर के प्रदर्शन और बच्चों के लिए फिल्म/वीडियो शो आयोजित करने के महत्त्व पर बल दिया जाता है। यद्यपि यह उपागम निश्चित रूप से पर्यवेक्षी उपागम से बेहतर है, तथापि, इसमें भी बच्चों की भागीदारी सम्मिलित नहीं है और ये विधियाँ सामान्यतः पूर्व–नियोजित या पैकेजों में होती हैं। यह

पहल करने की प्रवृत्ति को जागृत नहीं करती। इसमें कौशल कम से कम प्राप्त हो पाते हैं और कार्यक्रम के आयोजकों के लिए समुदाय सहभागिता उपस्थिति तक ही सीमित होती है। यह उपागम स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम में अच्छा प्रवेश बिन्दु सिद्ध हो सकती है।

3) सहभागी कार्यनीति

इस उपागम में चार प्रमुख खिलाड़ी' – समुदाय के नेता, माता–पिता, अध्यापक और विद्यालय के बच्चे निम्निलिखित चरणों में शामिल होते हैं:

क) व्यक्तियों के मूल–समूह की रचना जो यौन स्वास्थ्य शिक्षा सहित विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए सीधे उत्तरदायी होंगे।

ख) समुदाय नेताओं, माता–पिता, अध्यापकों और विद्यालय के बच्चों को विद्यालय स्वास्थ्य और यौन स्वास्थ्य शिक्षा की महत्ता के प्रति जागरूक बनाना।

ग) स्थानीय स्वास्थ्य पेशेवरों की पहचान करना जो संपूर्ण विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम को अपने हाथ में लिए बिना तकनीकी सलाहकार और प्रशिक्षक की भूमिका निभा सकें।

घ) यौन स्वास्थ्य शिक्षा पर विशेष बल देते हुए स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के विभिन्न घटकों के क्रियान्वयन के लिए मूल समूह सदस्यों, शिक्षकों और चयनित अभिभावकों को आवश्यक प्रशिक्षण देना।

ङ) स्कूल के बच्चों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों की पहचान करना।

च) कार्यक्रम के स्थल, विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम की योजना बनाने और कार्यान्वित करने के लिए समय निकालने की समुदाय नेताओं की इच्छा,

उपलब्ध जनशक्ति, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, समाज कार्यकर्ताओं, परामर्शदाताओं इत्यादि के संदर्भ में स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों की सूची बनाना।

छ) विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के विशिष्ट घटकों का पता लगाना और विशिष्ट गतिविधियों को प्राथमिकता देना।

ज) संसाधन सीमाओं को ध्यान में रखकर कार्य योजना विकसित करना।

झ) कार्य योजना के अनुसार विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के विशिष्ट घटकों को लागू करना।

त) कार्यक्रम की समीक्षा के लिए मूल समूह सदस्यों के साथ समय–समय पर बैठक करना ताकि समुदाय में होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में रखकर यदि उनमें जरूरत हो तो उन्हें कार्यान्वित और संशोधित किया जा सके।

उपर्युक्त वर्णित मूल समूह में स्वास्थ्य पेशेवरों, अध्यापकों, समुदाय नेताओं, माता–पिता और विद्यालय के कुछ वरिष्ठ बच्चों के प्रतिनिधि अवश्य होने चाहिए। यह उपागम विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम की योजना बनाने और निष्पादन से संबद्ध सभी व्यक्तियों की भागीदारी और यौन स्वास्थ्य शिक्षा पर विशिष्ट बल देती है।

समूह में स्वास्थ्य पेशेवर की विशेष भूमिका होती है क्योंकि उसे बिना हावी हुए तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना होता है। उसे केवल व्यवस्थापक का काम करना चाहिए और संगठन के ब्यौरों से संबंधित सभी काम मूल समूह के लिए छोड़ देना चाहिए।

विद्यार्थियों की सहभागिता

यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे इस भ्रांति के कारण नजर अंदाज किया जाता है कि विद्यार्थियों को केवल 'पढ़ाने' की ही जरूरत है। बहरहाल, यदि कोई शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थियों के प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों में परिवर्तन लाना चाहता है तो

इस शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए। यद्यपि यह मुश्किल है पर यही एक रास्ता है। इसके लिए, पूर्व वर्णित मूल समूह में विद्यार्थी को सम्मिलित करने के अलावा, कार्यक्रम इस तरह तैयार किए जाने चाहिए कि जहाँ तक संभव हो, विद्यार्थी ज्यादा से ज्यादा कार्यक्रम घटक के रूप में सदैव मेल–मिलाप करें और उसे कार्यान्वित करें।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) कार्यनीति के रूप में निरोधक स्वास्थ्य कार्यक्रम पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

4.5 यौन स्वास्थ्य शिक्षा में जनसंचार माध्यम की भूमिका

जनसंचार माध्यम, विशेष रूप से समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल, पर्चे, टेलीविजन और रेडियो ने संवेदनशील और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर लोगों को सूचना प्रदान करने और जागरूकता उत्पन्न करने में मदद की है। यदि हम सचेत होकर नियोजित यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करना चाहते हैं तो हमें एक प्रमुख शिक्षा अभियान को तैयार करने और उसे जारी रखने की जरूरत है। अब जब हम एच.आई.वी./एड्स जैसी घातक यौन संचारित बीमारियों का सामना कर रहे हैं, तो इस समय यौन स्वास्थ्य शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने में मीडिया प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

सूचना, शिक्षा और संचार (Information, Education and Communication-IEC) वह प्रक्रिया है जो लोगों को स्वस्थ प्रचलनों और जीवन को अपनाने और उन्हें बनाए रखने के बारे में सूचित, प्रेरित तथा मदद करती है और उन्हें संक्रमण और कुस्वास्थ्य अर्जित करने से रोकती है। चाहे स्कूल हो या समुदाय यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों में यौन एवं स्वास्थ्य विषय पर समुचित एवं पूर्ण जानकारी प्रदान करने के लिए प्रत्येक संचार विधि का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यहाँ निरक्षरता एवं अज्ञानता विद्यमान है।

जन साधारण में यौन स्वास्थ्य शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने और उन्हें इसमें शामिल विविध मुद्दों पर शिक्षित करने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार का प्रयोग किया जा सकता है। इसमें सूचना, सामग्रियाँ, पोस्टर, पैम्फलैट, सार्वजनिक स्थानों पर उनको प्रदर्शित करना, लोगों को एकत्रित करके उनमें उन्हें वितरित करना और समुदाय आधारित मीडिया शामिल हैं। लिखित सामग्री के अतिरिक्त, जो व्यक्ति पढ़ नहीं सकते उन्हें भी संचार के समुचित चैनल तैयार करके सूचना प्रदान करनी चाहिए।

तथापि, यौन स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना कोई सरल काम नहीं है और यह तब और कठिन हो जाता है जब यह व्यक्तिगत और संवेदनशील मुद्दों से संबद्ध होता है। ऐसे मामलों में, सूचना, शिक्षा और संचार के

विभिन्न उपागमों का प्रयोग करना ज्यादा आसान लगता है और कई बार वांछित परिणाम लाने में भी यह सफल रहा है। एक सुनिर्मित संचार पद्धति के जरिए लोगों की गलत धारणाओं और अज्ञानताओं को दूर करके लोगों को प्रभावशाली ढंग से यौन स्वास्थ्य के बारे में शिक्षा दी जा सकती है।

भारत न केवल एक विशाल देश है बल्कि यह विविध संस्कृतियों और भाषाओं का भी संगम है। अतः संस्कृति विशिष्ट और भाषाओं से मेल खाती उपयुक्त सूचना, शिक्षा और संचार कार्यनीतियों और उपागम तैयार करना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है। अधिकांश लोग मीडिया को प्रेस, सिनेमा, रेडियो और टेलीविजन के रूप में ही लेते हैं। ये जनसंचार माध्यम या 'बड़े मीडिया' कहलाते हैं। बड़ी संख्या में श्रोताओं को संबोधित करने, उत्पादन की व्यापकता, बड़ी पूँजी उपकरणों के सम्मिलित होने, और अर्हता–प्राप्त कर्मिकों के कारण यह बड़ा कहलाता है। समूह मीडिया या मिनी मीडिया या छोटा मीडिया, ये केवल आकार में छोटे नहीं होते हैं बल्कि आर्थिक रूप से, आसानी से प्रयोग किए जाने वाले और सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाए जा सकते हैं। आइए, संक्षेप में समूह मीडिया के प्रकारों को सूचीबद्ध करें व उनकी जाँच करें कि यौन स्वास्थ्य शिक्षा को संवर्धित करने के लिए उनका किस हद तक प्रयोग किया जा सकता है।

पोस्टर

पोस्टर में चित्र, ड्राइंग, कटआउट, चित्रण (illustration) और शीर्षक (Caption) होते हैं। एक अच्छा पोस्टर केवल एक विचार को स्पष्ट व सशक्त रूप से निरूपित करता है। इसे कम पढ़े–लिखे लोगों तथा छोटे बच्चों के बीच यौन स्वास्थ्य शिक्षा संदेशों को संप्रेषित करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

कोलॉज (समुचित चित्र)

कोलॉज चित्रों, शब्दों या वस्तुओं का संघटन है जो निर्धारित विषय के अनुसार एकत्रित किए जाते हैं। यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम में कोलॉज के प्रयोग से विविधता लाई जा सकती है और नीरसता को कम किया जा सकता है।

बैनर, भित्ति चित्र, फ्लिप चार्ट और फ्लेश कार्ड

इनका विशेष रूप से मेलों, प्रदर्शनियों और प्रशिक्षक कार्यशालाओं के जरिए यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। इसी तरह चलायमान, प्रदर्शनों, फोल्डरों, कॉमिक स्ट्रिपों, फ्लैनल ग्राफ, कहानी पट्ट, ड्राइंग, विज्ञानपट्ट भित्ति लेखनों, फोटो भाषा, स्लाइडों, फिल्म स्ट्रिपों, न्यूजलैटरों और भित्ति–कागजों का भी प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी के लिए एच.आई.वी./एड्स में संचार और परामर्श पर खंड 1 की इकाई 5 पढ़ सकते हैं।

प्रसारण माध्यम

रेडियो जनसंचार माध्यमों में सबसे लोकप्रिय माध्यम है जो अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुँच सकता है। भारत में, व्यावहारिक रूप से प्रत्येक गाँव में रेडियो की सुविधा/पहुँच है। एक बड़ी जनसंख्या रेडियो प्रसारणों को सुनती है। अतः यौन स्वास्थ्य और संबद्ध मुद्दों की शिक्षा के लिए संचार के इस माध्यम का प्रयोग सर्वाधिक उपयोगी है। रेडियो परामर्श और 'फोन–इन' सेवाओं के लिए भी सुविधाएँ हैं जहाँ श्रोता सीधे अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। यौन स्वास्थ्य पर लोगों को शिक्षित करने के लिए रेडियो के माध्यम से ऐसे कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

टेलीविज़न – एक माध्यम के रूप में

भारत में टेलीविजन का प्रारंभ शैक्षिक और समुदाय सेवा के एक माध्यम के रूप में हुआ। आज इसका विस्तार इतना ज्यादा हो गया है अति दूरस्थ क्षेत्रों कि यह 80

प्रतिशत जनसंख्या तक यह पहुँच सकता है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भाषाओं में टेलीविजन चैनलों की भरमार के कारण यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के लिए यह माध्यम निश्चित रूप से अत्यधिक व्यापक है। सीरियलों, ड्रामा, वर्ण्य विषय आधारित संगीत, पैनल चर्चा, टॉक शो, इंटरव्यू पहेलियों, फीचरों इत्यादि कार्यक्रम के माध्यम से यौन स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं।

सिनेमा

लोकप्रिय माध्यम के रूप में सिनेमा के सामर्थ्य का प्रमाण भारत के सिनेमा थियेटरों पर दिखाई देने वाली अत्यधिक भीड़ है जो फिल्म कलाकारों की लोकप्रियता और सिनेमा की लोकप्रियता को दर्शाती है। इंटरवल (मध्य समय) में वृत्तचित्र और स्लाइड शो यौन स्वास्थ्य शिक्षा संदेश और शिक्षा संप्रेषित करने के अवसर प्रदान करते हैं। वस्तुत अशिक्षित लोगों तक संदेश पहुँचाने का यह सबसे सशक्त माध्यम है।

मुद्रण माध्यम

न्यूज़लेटरों, मैगजीनों और पैम्फलेटों के जरिए स्वास्थ्य की संकल्पना को लोकप्रिय बनाने और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा को बढ़ावा देने के सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों के प्रयासों के अतिरिक्तय राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचार–पत्र और पत्रिकाएँ अपने कॉलमों में यौन स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित मुद्दों का उल्लेख कर सकते हैं।

बहुसंचार माध्यम

बहुसंचार माध्यम विभिन्न माध्यमों और तकनीकों को मिला–जुलाकर समूह या श्रोताओं के लिए संचार के साधन हैं। बहु–माध्यम के प्रस्तुतीकरण, कम्प्यूटर वीडियो प्रोजेक्टरों इत्यादि का प्रयोग करके यौन स्वास्थ्य शिक्षा के ढाँचे के भीतर विभिन्न वर्ण्य विषय प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। बहु–माध्यम का प्रयोग भागीदारों के आकर्षण को निश्चित रूप से निरंतर जारी रख सकता है।

माध्यम का नकारात्मक प्रभाव

उपग्रह संचार नेटवर्क, इंटरनेट और प्रौद्योगिकीय उन्नति के उद्भव के साथ–साथ विदेशी मीडिया के खुलेपन के कारण छोटे बच्चों को घर, स्कूल और समाज के भीतर कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे बाह्य प्रभाव लोगों की व्यवहार पद्धति और जीवन शैलियों को प्रभावित कर रहे हैं जो निश्चित रूप से युवा मन को उन पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, पारम्परिक प्रचलनों और नैतिक मूल्यों से दूर ले जा रहे हैं जिनका भारतीय जनसमूह द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता रहा था। आज तेज़ी से परिवर्तनशील सामाजिक जीवन शैलियों के कारण छोटे बच्चों को गलत और सही जीवन शैलियों की पहचान करने और स्वास्थ्य जीवन शैलियों को चुनने के लिए मार्गदर्शन व समर्थन की जरूरत है।

माध्यम का नकारात्मक प्रभाव

उपग्रह संचार नेटवर्क, इंटरनेट और प्रौद्योगिकीय उन्नति के उद्भव के साथ–साथ विदेशी मीडिया के खुलेपन के कारण छोटे बच्चों को घर, स्कूल और समाज के भीतर कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे बाह्य प्रभाव लोगों की व्यवहार पद्धति और जीवन शैलियों को प्रभावित कर रहे हैं जो निश्चित रूप से युवा मन को उन पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, पारम्परिक प्रचलनों और नैतिक मूल्यों से दूर ले जा रहे हैं जिनका भारतीय जनसमूह द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता रहा था। आज तेजी से परिवर्तनशील सामाजिक जीवन शैलियों के कारण छोटे बच्चों को गलत और सही जीवन शैलियों की पहचान करने और स्वास्थ्य जीवन शैलियों को चुनने के लिए मार्गदर्शन व समर्थन की जरूरत है।

किशोरावस्था ज्यादातर यौन जानकारी के लिए मीडिया और साथियों पर निर्भर करती है। हालांकि, यह देखा गया है कि शुरुआती और असुरक्षित यौन गतिविधियों के संभावित स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में सार्वजनिक चिंता बढ़ाने के बावजूद, टेलीविजन पर बहुत कम कार्यक्रम हैं जिनमें यौन सामग्री और विवाह से

बाहर सेक्स से जुड़े संभावित जोखिम शामिल हैं। एचआईवी के अलावा अन्य यौन संचारित रोगों की चर्चा कम होती है, जबकि अनचाहे गर्भधारण को शायद ही कभी असुरक्षित यौन संबंधों के परिणाम के रूप में दिखाया जाता है। उपलब्ध अश्लील साहित्य और दृश्य मीडिया सामग्री भी भ्रामक है, अक्सर अतिरंजित कवरेज और बहुत बार अधूरी जानकारी देती है।

आजकल कुछ ऐप (जैसे, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, किक मैसेंजर, स्नैपचौट, लाइवप्रफाइल, आदि) बच्चों और युवा, वयस्कों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। इनमें से अधिकांश ऐप्स को ऑनलाइन वार्तालाप को यथासंभव निजी रखने के लिए डिजाइन किया गया है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए, बच्चों के साथ स्पष्ट रूप से और सुखद तरीके से संचार करना बहुत महत्वपूर्ण है। मोबाइल फोन के दुरुपयोग के जोखिमों के बारे में किशोरों को शिक्षित करना आवश्यक है। माता–पिता के रूप में, कोई भी इन ऐप्स को डाउनलोड करने से अपने बच्चों को रोक नहीं सकता है, लेकिन इस तरह के मुद्दों से निपटने के निहितार्थ और तरीकों को समझने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है। इसलिए, माता–पिता को खुद को अपडेट और जागरूक रखना चाहिए और अपने बच्चों के साथ नई तकनीकों के फायदे और सीमाओं के बारे में बात करें।

4.6 विद्यालय प्रशासन द्वारा अपनाए जाने वाले निवारक उपाय

कभी–कभी विद्यालय में विद्यार्थी शारीरिक दुर्व्यवहार, यौनिक दुर्व्यवहार और भावात्मक दुर्व्यवहार के पीड़ित अथवा साक्षी हो सकते हैं। विद्यालय संचालकों द्वारा विद्यार्थियों की ऐसी गतिविधियों में संलिप्तता पाये जाने पर विद्यालय सामाजिक कार्यकर्ता, काउन्सलर अथवा शिक्षक या अधिकारी से विचार–विमर्श किया जाना चाहिए। विद्यार्थी सेवा टीम के सदस्यों और काउन्सलर को ऐसे विद्यार्थियों और उनके परिवारों की सहायता के लिए मिलकर कार्य करना चाहिए। ऐसे मामलों में, अभिभावक को विश्वास में लिया जाना चाहिए।

विद्यालय में हिंसा निवारक उपाय

सभी विद्यालय हिंसा को रोकने और विद्यालय परिसर को सुरक्षित स्थान बनाने के लिस कार्य करते हैं। विद्यार्थी, स्टाफ और अभिभावक किसी प्रकार का असामान्य और संदिग्ध व्यवहार देखने पर उसकी रिपोर्ट करके एवं प्रक्रियाओं का पालन सुनिश्चित करके विद्यालयी सुरक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नीचे विद्यालय के लिए संभावित निवारक गतिविधियों की एक सूची दी गई है (जो सभी विद्यालयों के लिए अनिवार्यतः व्यवहृत नहीं है) यह बच्चों की सुरक्षा के लिए विद्यार्थी, अभिभावकों और विद्यालय प्रशासन को प्रदान की जा सकती है।

1. विद्यालय की इमारत के नियम प्रवेश द्वार पर आवाजाही सीमित की जानी चाहिए और अन्य सभी संभावित अन्दर आने वाले रास्तों पर ताला लगाया जाना चाहिए।
2. विद्यालय पार्किंग परिसर के साथ–साथ अन्दर आने वालों और बाहर जाने वालों की निगरानी रखी जानी चाहिए।
3. विद्यालय के कॉमन क्षेत्रों जैसे–कैफेटेरिया और खेल के मैदान की नियमित निगरानी रखी जाए। विद्यालय के आगंतुक कक्ष में सुरक्षा गार्डों की मौजूदगी हो।
4. विद्यालय में आगंतुकों की निगरानी रखी जाए। वे मुख्य कार्यालय में आए, हस्ताक्षर करे और स्वागत कक्ष से दिए जाने वाले पहचान चिन्ह धारण करें। यदि गाई किसी अपरिचित व्यक्ति को देखें तो सक्षम प्राधिकारी को तुरन्त रिपोर्ट करें।
5. विद्यार्थियों को विद्यालयी परिसर में सुरक्षा सुनिश्चित करने का उत्तरदायित्व लेने के लिए प्रोत्साहित करें जिसमें सुरक्षा योजनाओं में विद्यार्थी की भागीदारी शामिल है।
6. आधुनिकतम सुरक्षा प्रणालियों जैसे मैटल डिटेक्टर, वीडियों मॉनीटरिंग, सी. सी.टी.वी. बाहरी द्वार अलार्म सिस्टम का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम में प्रसारण माध्यम की क्या भूमिका है?

....

....

....

....

....

....

4.7 सारांश

किशोर यौन सम्बन्धी जानकारी के लिए मुख्यतया मीडिया और संगी–साथियों पर निर्भर करते हैं। किन्तु यह देखा गया है कि शीघ्र और असुरक्षित यौन क्रिया के कारण उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति बढ़ती सार्वजनिक चिन्ता के बावजूद, टी.वी. पर ऐसे बहुत कम कार्यक्रम दिखाए जाते हैं जिनमें यौन जानकारी और विवाह से इतर और सम्बन्ध के कारण उत्पन्न संभावित खतरे शामिल हो। एच.आई.वी. के अलावा, अन्य यौन संचरित रोगों की चर्चा कम ही की जाती है, जबकि असुरक्षित यौन सम्बन्धों के परिणामस्वरूप अनचाहे गर्भधारण बढ़े है।

उपलब्ध पोर्नोग्राफिक साहित्य और दृश्य–मीडिया की सामग्री भटकाने वाली है, प्रायः सब कुछ बढ़ा–चढ़ाकर दिखाया जाता है। और अधिकतर अधूरी जानकारी दी जाती है। आजकल कुछ एप्स (जैसे व्हाटसएप, इंस्ट्रग्राम, किक मैंसेजर, स्नैपचौट, लाइन प्रोफाइल इत्यादि। बच्चों और किशोरों में बहुत लोकप्रिय हैं। अधिकांश एप्स में ऑनलाइन मंत्रणा को यथासंभव गोपनीय रखा जाता है। वर्तमान परिस्थितियों में, यह बहुत आवश्यक है कि बच्चों से खुलकर और सुखद रूप में संवाद स्थापित किया जा सके। किशोरों को मोबाइल फोन के दुरुपयोग के खतरों के प्रति आगाह किए जाने की आवश्यकता है। परन्तु अभिभावक के रूप में, बच्चों को यह एप्स डाउनलोड करने से नहीं रोका जा सकता, परन्तु यह आवश्यक है कि मुददे सुलझाने के लिए तरीके समझने योग्य बनाए जाएं। इसलिए अभिभावकों को अपने आपको अधुनातन और जागरुक रखना चाहिए और बच्चों से नयी तकनीकों के लाभों और सीमाओं के बार में बात करनी चाहिए।

जिस समय समाज को सामाजिक जीवन में होने वाले उग्र परिवर्तनों का सामना करना पड़ रहा है ऐसे में यौन स्वास्थ्य शिक्षा का महत्त्व है, इसी पर हमने इस इकाई में विस्तार से चर्चा की है। हमने यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में घर और परिवार की भूमिका पर भी विस्तार से चर्चा की है। इस इकाई में हमने जिस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर चर्चा की है वह है यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संदर्भ में स्कूल, स्कूल अध्यापक और बच्चे की भूमिका और दायित्व। यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के लिए कार्यनीतियों पर चर्चा करने से इस विषय का क्षेत्र व्यापक हो गया है।

इकाई के अंत में हमने देश भर के अधिकतम लोगों तक यौन स्वास्थ्य शिक्षा को पहुँचाने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका और यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में जनसंचार की विभिन्न विधियों की उपयोगिता पर भी चर्चा की है।

4.8 शब्दावली

ब्रह्मचर्य : यौन गतिविधि से परहेज

दांपत्य निष्ठा : चुने गए या निर्धारित साथी के प्रति वफादारी और केवल उसी व्यक्ति से यौन संबंध रखना।

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ग्रगनी, ए. (1988), सेक्स एजुकेशन, बेटर यूयरसेल्फ बुक, मुम्बई।

ग्रगनी, ए. (1997), एक्सरसाइज इन एजुकेशन टू लव, तेज़ प्रासारिनी, डान बोस्को कम्युनिकेशन, मुम्बई।

हलॉर्क, ई. बी. (1994), डेवेलपमेंट साइकोलॉजी, ए लाइफ स्पेन अपरोच, टाटा मेकग्रा हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।

थॉमस ग्रेशियस (1995), एड्स एंड फैमिली एजुकेशन, रावत पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) • बच्चों के मन में यौन स्वास्थ्य शिक्षा के संबंध में सकारात्मक रवैया पैदा करना चाहिए;

- बच्चों में बढ़ती हुई प्रतिकूल जीवन–शैली को प्रबल रूप से हतोत्साहित करना चाहिए;
- घर में ऐसा माहौल उपलब्ध करना चाहिए जो बच्चों को समग्र विकास के लिए प्रेरक हो;
- बच्चों में स्वस्थ जीवन–शैलियों के प्रोत्साहन के लिए विद्यालय के प्रयासों में सहयोग दें;

- विद्यालय अध्यापकों से संबंध बनाएँ और यौन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के उनके प्रयासों में सहयोग दें;
- यौन–संबंधी विषयों पर विद्यालय द्वारा बताए गए निर्देशों और मार्गदर्शन का पालन करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें;
- समुदाय के स्वस्थ माहौल बनाए रखने के प्रयासों में सहयोग दें;
- बच्चों को यौन स्वास्थ्य के सकारात्मक पहलुओं के संबंध में विचारों का आदान–प्रदान करने के अवसर देना और घर में ऐसे विषयों पर माता–पिता व बच्चों के बीच चर्चा करने को प्रोत्साहित करना;
- बच्चों को प्रेरणा के लिए आदर्श व्यक्ति के रूप में काम करना।

बोध प्रश्न 2

1) इसके अंतर्गत टीकाकरण, जल को विसंक्रमित करने, कूड़ा–करकट के सुरक्षित निपटान, व्यक्तिगत सफाई पर भाषण, स्वास्थ्य संबंधी पोस्टर के प्रदर्शन और बच्चों के लिए फिल्म/वीडियो शो आयोजित करने के महत्त्व पर बल दिया जाता है। यह उपागम निश्चित रूप से पर्यवेक्षी उपागम से बेहतर है। तथापि, इसमें भी बच्चों की भागीदारी सम्मिलित नहीं है और ये विधियाँ सामान्यतः पूर्व–नियोजित या पैकेजों में होती हैं। ये पहल करने की प्रवृत्ति को जागृत नहीं करतीं। इसमें कौशल कम से कम प्राप्त हो पाते हैं और कार्यक्रम के आयोजकों के लिए समुदाय सहभागिता उपस्थिति तक ही सीमित होती है। यह उपागम स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम में अच्छा प्रवेश बिन्दु सिद्ध हो सकता है।

बोध प्रश्न 3

1) रेडियो जनसंचार में सबसे लोकप्रिय माध्यम है जो अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुँच सकता है। भारत में, व्यावहारिक रूप से प्रत्येक गाँव में रेडियो की सुविधा/पहुँच है। एक बड़ी जनसंख्या रेडियो प्रसारणों को सुनती है। अतः यौन स्वास्थ्य और संबद्ध मुद्दों की शिक्षा के लिए संचार के इस माध्यम का प्रयोग सर्वाधिक उपयोगी है। रेडियो परामर्श और 'फोन–इन' सेवाओं के लिए भी सुविधाएँ हैं जहाँ श्रोता सीधे अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। यौन स्वास्थ्य पर लोगों को शिक्षित करने के लिए रेडियो के माध्यम से ऐसे कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY